





2. यू पी का मजदूर वर्ग एक ऐसे ज़माने में अपनी सुबह लड़ाई को काठित कर रहे हैं जब पूरे मुल्क के मजदूर अपनी फैलती हुई लड़ाईयों के ज़रिये नेशनल जेनेरल स्ट्राइक की ताकत बढ़ रहे हैं।

तामिलनाडु की सुबह के टेक्सटाइल हड़ताल 2 जनवरी को 2 लाख मजदूरों की देश व्यापी हड़ताल, प्रात, बल्लिमोर में मजदूर-पुलिस टकराए उज्जैन वकालियार टूडला, कानपुर के टेक्सटाइल मजदूरों की लड़ाईयों ने आल इंडिया टेक्सटाइल जेनेरल स्ट्राइक का बिगुल बजा दिया है।

8 मार्च का दिन सारे देश के रेल मजदूरों की संयुक्त देश व्यापी एकमत का दिन है। 8 मार्च को देश के 10 लाख रेल मजदूर अपनी सम्मिलित ताकत से सरकारी फ़ौज-पुलिस और सामान्यदारी फूट पास्ती को अपने सामने में तिनकों की तरह हटा कर आल इंडिया रेल स्ट्राइक का ऐलान करेंगे।

हिन्दुस्तानी मजदूर वर्ग को इन दो फ़ैसला जुन मोर्चों पर आल इंडिया स्ट्राइक की तैयारियों में नेशनल जेनेरल स्ट्राइक के फ़ौरीवन का अदज़ार लाया जा सकता है।

यू.पी. मजदूर कन्वेंशन सुबह आम हड़ताल का ठोस प्रोग्राम बनाकर यू.पी. के मजदूरों को हिन्दुस्तानी मजदूर वर्ग की इस ऐतिहासिक वर्ग संघर्ष नेशनल जेनेरल स्ट्राइक के लिये तैयार करेगा।

3. मजदूर वर्ग की सुबह और देश व्यापी लड़ाईयों एक ऐसे ज़माने में काठित की जा रही है जब गहरा होता हुआ सामान्यदारी में फूट पड़ा है। सामान्यदारी आर्थिक और संपत्ती ठाँवा का मारा रहा है, बड़े पैमाने की मिल-बन्दी सामान्यदारी आर्थिक ठाँवे को कारवाने में अलामत है, सामान्यदारी पैदावारी संघर्ष पैदावारी ताकतों के लिये ज़ंजार बन गये हैं, सामान्यदारी पैदावारी संतर्धों के साथ पैदावार नामुमकिन बनती जा रही है और यह ज़जोरें टूटकर रहेंगी।

सामान्यदारी की राज सत्ता ढगभार रही है, मजदूर तबड़े की रक्षुमारी में अवाप्ती लड़ाईयों सामान्यदारी सरकार पर ताबड़ तोड़ वार कर रही है। पुलिस और फ़ौज ने टकराए ~~करके~~ धरनों की लूट गोज़-गोज़ की बात हो गई है, 26 जनवरी को एक ही दिन सारे देश में इन्डलाबी सियन्सी प्रदर्शन और पुलिस से टकराए सबात को अलामत है कि देश की इन्डलाबी ताकतों मजदूर वर्ग और उसकी पार्टी की रक्षुमारी में सामान्यदारी राज सत्ता पर एक साथ हल्ला बोलने के लिये तैयार है। तैलंगना का अद्वीप मिदनपुर लालगंज और अंध्रप्रदेश और वेणाला के कुछ हिस्सों में तो राज सत्ता टूट चुकी है और वहाँ आज़ाद लाल हल्ला बोलने का प्रयत्न हो गये हैं, ऐसी हालत में मजदूर वर्ग की लड़ाई और देश व्यापी लड़ाई देश की बेपनाह इन्डलाबी ताकतों का पैलाब बन आ रहे हैं जो नेहरू सरकार को उलट कर एक अवाप्ती जनवादी सरकार बन प्रयत्न करके ही दमलेगी, सुबह मजदूर कन्वेंशन सुबह और देशव्यापी लड़ाई का प्रोग्राम बना कर यू.पी. के मजदूरों को मजदूर वर्ग की राज सत्ता पर हल्ला करने की इसी फैसला जुन लड़ाई के लिये तैयार करेगी।

4. आल इंडिया सुबह लड़ाई की इस बेपनाह इन्डलाबी अहिमियत को नज़र में रखते हुये तमाम डेड ट्रेड यूनियन मोर्चों के सगियों की सुबह मजदूर कन्वेंशन का तैयारियों में जुट जाना चाहिये।

5. अपने ज़िलों और उद्योगों की लड़ाईयों को मज़ात से तेज़ करो और फैलाओ और उनके दौरान में लड़ाई मजदूरों को हड़ताल अतिथी कराओ, लाल वकालियारों के दस्ते काओ जो दमन की हारा के इनटक और गोशलिस्ट पार्टी और दमों के सामान्यदारी अनगसिर का जपकर भंडा फोड़ लाल फंडे को अज़ाद लड़ाई रक्षुमारी और हड़ताल अतिथी और इन्डलाबी मजदूर समर्थों की पैमारी के ज़रिये मजदूरों को लड़ाई वर्ग एकता को पकड़ा बनाओ, हर इनटक लड़ाई में सुनियन्दी पार्टी का डट कर प्रचार करो, और इन पार्टी को मजदूर लड़ाईयों को ठोस मर्ची बनाओ।

इस काम को पूरा करने ही हम उही मार्गों में यू.पी. मजदूर कन्वेंशन को मोर्चों पर लड़ाते हुए विपरीतों का कन्वेंशन बना सकते हैं जो अपने संघर्षों के तुरंतों को हाट्टा करे और उनही सुनियन्दी पर सुबह और आल इंडिया लड़ाई का प्रोग्राम बनाये।



२. हेलीगेटों का चुनाव : मजदूर लड़ाइयों के योद्धाओं के ,

कन्वेंशन का हेलीगेट चुने यह चुनाव आम तौर पर मजदूरों की आम पीटिंगों, गेट-  
पीटिंगों और केन्टीन पीटिंगों में करना चाहिये. अगर यह चुनाव मिलों और शक्ति-  
शायो और खेतों में चलने वाली लड़ाइयों से जोड़कर किये जायेंगे सभी कन्वेंशन को ही मानी  
में योद्धाओं का कन्वेंशन बना सकते हैं. जहां आम मजदूरों में चुनाव सम्भव  
नहीं है वहां हम में कम यूनियनों की जेनेरल कैम्पिनल या कर्बंट वरिष्क पार्टी  
के हेलीगेटों का तो ज़रूर ही चुनाव करना चाहिये.

३. बुनियादी मंशों मसहई लड़ाई और मसहई ठकेठकेकफेन्स का डट का  
पुचका कोजियो , पोयमनों और पाचों वरिष्क डेठ गेट पीटिंगों, हाता-पीटिंगों  
का ताता बन्ध दो. एक गेट में जुलस निराल का दूसरे गेटों पर लेजाओ.  
जहां केन्दीय पीटिंगें होयें वहां लगातार केन्दीय पीटिंगें करना बहुत ज़रूरी है  
कॉफेन्स के मरुवा, पस्ताव ( जो नगर केठ मवेर में कूपेगा ) को कपवा का  
या मसहल्लों जावा का मजदूरों में हांटी औरउये पीटिंगों में पास कराओ.

४. २० फ़ावरी को 'यू.पी. मजदूर कन्वेंशन डे' मनाओ, उस दिन मजदूरों  
की आम पीटिंगें को के कॉफेन्स को अभीनन्दन और मजदूरों की बुनियादी मंशों  
की मसहई लड़ाई के लिये तैयारी का पस्ताव पास कराओ. अगर हम 'येपके  
हेलीगेटों का चुनाव नहीं हुआ है तो उस पीटिंग में हेलीगेटों का चुनाव करो  
अगर होचुका है तो उस पीटिंग में चुनाव को फिा में पास कराओ. २०  
तम को डट का मजदूर मसहल्लों की मसहली को और कॉफेन्स के टिकट केवो.  
जुलस निराल का कॉफेन्स का पैगाम एक मजदूर तक पहुंचाओ.

यू.पी. टी. यू.पी. फ़ेक्शन सेन्ट्र

नोट.

१. अपने ज़िलों केठ के हेलीगेटों का लीहा बन का भेजिए.
२. अपने यहां के मवालों पर पस्ताव भेजिये.
३. हा पार्टी केन्स को केन्दी ज़िला पार्टी केठ का दस्त खन कियर हुआ  
खत लाना चाहिये, वगना उनको फ़ेक्शन पीटिंग में शामिल नहीं कियर  
जाये गर.
४. हा यूनियन के केठ मसही अपनी यूनियन के कामों की ठोस रिपोर्ट  
लायें. ज़िला फ़ेक्शन को उन रिपोर्टों की तैयारी की ताफ़ पूरा  
ध्यान देना चाहिये.
५. कॉफेन्स के किलुगिले में निम्न-लिखित पते से पत्र व्याहरण करें,  
स्वागत सम्मती :-

यू.पी. मजदूर कन्वेंशन, मजदूर मसहल्लों  
मवालटोली, बनपुरा.











Provincial Trade Union  
Committee,  
22, Latouche Road, LUCKNOW.  
1 - 2 - 50.

To all Trade Unions

Dear Comrades,

The enclosed circular from the AITUC is being sent for your information, and necessary action. List of members of the General Council is not being sent, however.

Please specially note items (4), (5), (6) and (7) of this circular and do the needful, without delay.

Yours fraternally  
(sd) S. M. Patil  
Acting Vice-President.

-----  
UNION  
THE ALL INDIA TRADE & CONGRESS

NOV 12/50

R.L. Trust Building,  
55, Girdhar, BOMBAY  
8 - 2 - 1950.

CIRCULAR

To  
All Provincial Trade Union Congress Committees and Regional Councils  
-----

Dear Comrade,

1. We have already sent to you a circular intimating to you that the meeting of the General Council of the AITUC will be held on the 26th of February in Bombay.
2. In view of the very important subjects on the Agenda of the meeting, which includes the new Labour Relation Bill introduced by the Government of India, the mounting mass unemployment, the daily increasing offensive of ~~the~~ rationalisation and retrenchment, and other subjects, it is very necessary ~~xx the xxxxxxxx xx xxx~~ that all provinces and trade groups must be fully represented at the meeting of the General Council.

However, since the last session of the AITUC, many of the members who were elected to the General Council, have been arrested, or ~~have~~ otherwise, are not in a position to attend the meeting on account of the repression unleashed by the Government.

All PTUCs therefore, should send substitute members to attend the meeting in place of those who are prevented from attending the meeting on account of arrests etc. These substitutes should be from the same trade group from which the original members were elected. They should bring with them proper credentials from the PTUCs.

A list of members of the General Council, from your province is enclosed herewith ~~for~~ for ready reference.

3. At the session, certain number of seats on the General Council from different provinces were left to be filled in later by the PTUCs. Some of the provinces have not yet filled ~~in~~ in these vacancies. The



- 2 -

The number of such vacancies, if any, from your province is also indicated in the enclosure.

The PTUC should immediately fill up these vacancies and ensure the ~~attendance~~ attendance of these members at the meeting of the General Council. The PTUC should arrange to send proper credentials with these new members also.

4. All PTUCs should take steps to get all unions that can be affiliated to the AIUC, immediately affiliated and thus strengthen the AIUC. Copies of affiliation forms are herewith enclosed.

PTUCs should take steps to get as many unions as possible to apply for affiliation. These applications should be sent to the AIUC, with the recommendations of the PTUC and with the necessary affiliation fees, before the meeting of the General Council so that these applications can be considered at the meeting.

5. Some of the Unions on the rolls of the AIUC have gone over to the Hindustan Mazdoor Panchayat or INTUC. The PTUCs should furnish the AIUC with details of these unions within their province so that appropriate action may be taken.

6. PTUCs should make it a point to ~~clear~~ clear up the arrears due from the various unions in their provinces. A list showing the unions and the arrears due from them has already been sent to you. PTUCs are requested to ~~ok~~ collect these arrears and send them with the members of the General Council.

7. Copies of the Report of the 23rd Session of the AIUC have been sent to the PTUCs for sale. PTUCs must send account of these sale along with the amount so far realised out of the sales with the members attending the General Council.

8. Two copies of all Labour Legislation in force in your provinces and the Public Security Act, are urgently required. PTUCs are requested to arrange to send them through the General Council members.

With greetings,

Yours fraternally,

F. B. RANGNEKAR

ASST. SECRETARY.

----- @@@ -----



भारतीय कर्मचारियों के बारे में

सामर्थियों,

केन्द्रीय सरकार ने बहुत बड़े पैमाने पर भारतीय कर्मचारियों की कटनी करने का फैसला लिया है। आईएस डिप्टी, सी पी डब्लू डी, एम डी एस, मेन्टल रकॉर्डर इनकॉर्पोरेटेड के भारतीय कर्मचारियों के सर पर कटनी की तलवार लटक रही है।

इन महकमों के कर्मचारियों, साथ ही साथ आईएस डिप्टी, एम डी एस, सी पी डब्लू डी के कर्मचारियों के लखनऊ, कानपुर, देहरादुन, इलाहाबाद, मेरठ वगैरह में छट का मुकामला करने की वजह से सरकार ने अब कटनी करने के नये नये तरीके और बहाने निकाले हैं। उन में ट्रेड टेस्ट, डिपार्ट्मेंटल इम्तहान, भ्रष्ट डाक्टरी सुझावना उर्मा का अवाल और कन्फिडेंशियल रिपोर्ट : सुफ्रया: महकमे के अफसरों और पुलिस की मुख्य हैं।

इन महकमों में तनखा घटती और काम बढ़ती के हले भी तरह तरह किये जा रहे हैं।

इसी तरह प्रतीय सरकार के कर्मचारियों की ३३ फ्रीमदी कटनी का हुकम भी जारी का दिया गया है।

ज़िला इलाहियों को ह्दियत दो जाती हैकि इन कर्मचारियों का एक संयुक्त मोर्चा खड़ा करने का काम अपने हाथ में लें और पूंजीपति सरकार केव्केव्के के खर्चे में कर्मियों के फूठे नाने की आड़ में किये गये इन तमाम हत्यों का मुकामला किया जाये।

तमाम हिन्दुस्तान के केन्द्रीय कर्मचारियों का एक सम्मेलन नवम्बर के महीने में लखनऊ में हुआ था किम की रिपोर्ट जाह जाह पर उनके यू पी अगरोनाइज़र ने भेजी है।

इसी बीच हले की चोट महसूस करते हुए अल इंडिया आईएस डिप्टी वर्क्स यूनियन और एम डी एस वर्क्स यूनियन, देहरादुन ने ह्दताल का नोटिस दे दिया है, और जल्द ही ह्दताल शुरू होने वाली है।

प्रतीय पैमाने पर केन्द्रीय भारतीय कर्मचारियों को संगठित करने के लिये एक मिटिंग कानपुर में २४ फरवरी को बुलाई गई है। तमाम ज़िला इलाहियों का फ़र्ज़ है कि अपने अपने मुकाम के केन्द्रीय भारतीय कर्मचारियों से सम्बंध स्थापित करके इस मिटिंग में अधिक से अधिक प्रतिनिध भेजे, पहुंचने की यत्ना प्रतीय अगरोनाइज़र, अल इंडिया के केन्द्रीय भारतीय कर्मचारी फ़ेडरेशन, अज़दर समा दफ़तर, अवाल टोली कानपुर के पते पर भेजना चाहिये।

लाल सलाम

शिव नाथ पाठक  
एक्टिंग प्रेसीडेंट यू पी टी यू सी  
लखनऊ







कानपुर मजदूर कन्वेंशन के बारे में

सन्धियों,

सामान्य दायी के गहरे होते हुए आर्थिक संकट और उनके हल करने के एक मात्र पूंजीवादी तरीके यानी जिसका पूरा जोर मजदूरों विमानों विक्ट विक्ट निम्न श्रेणी मध्यम वर्गीय जनता पर केवरी रहा था , तबका घटा कर और काम बढ़ा कर मुझे मानने की सज्जिश में मेहनत कश तबके के शानदार मुझाले ने नैहैत पटेल और पते सरकार ने होश हवास गुम कर दिये हैं, शान्ति सम्मेलन में सोशलिस्टों और पुलिस की सजलिजशों से हमले और गिरफ्तारियां, यू पी स्टूडेन्टस फेडरेशन ऑफेन्स में आम गिरफ्तारियां यू पी रेलवे ऑफेन्स में सोशलिस्ट गद्दारी की पुलिस से मिली भात करके ऑफेन्स में गड़बड़ पैदा करे करने की सोशिश और हमारे १५ सन्धियों की गिरफ्तारी , ललिया में पहली सुभा खेत मजदूर कन्फेन्स के पीछे पर गौली जारी करके सुभाष मुकजी की शहादत , २६ तारीख को सारे सारे गिरफ्तारियों , आगरा और लखनऊ में जेल के आमानुषानि दमन के खिलाफ बेट मुख हड़तालें , गौली में विधार्थियों के ऊपर गौली कांड , जनता से दूर होजाने और लोठी गौली के पुलिस बिल्टरी के फ्रांशिस्ट दमन द्वारा राज्य शासन चलाने और मेहनतकश जनता को जबरदस्ती भूखी मारने के हारदे जगहिया करते हैं,

टेक्सटाइल मिलों में घड़ा घड़ा शिकूट बन्द लिये जा रहे हैं, चीनी मिल मिल मजदूरों ने आखिर कर १२ ककू ताठ से अपनी सगों को पूरा करने के लिये हड़ताल की तैयारी कर दी है, आर्डेन्स डिपो वरस १२ ताठ से हड़ताल पर जा रहे हैं, प्रांत की तमाम तेल मिलों को बन्द करने का फेसला लिया जा चुका है, एम इ एस में ग्रीब २०० से ऊपर दफ्तर में काम करने वाले कर्मचारी और १००० के ग्रीब मजदूरों की क्टनी की प्रोग्राम बन रहा है, प्रांतीय सरकार के दफ्तरों में ३३ फ्री सदी क्टनी के हुकम जारी हो चुके हैं, रेलवे में हज़ारों मजदूरों की क्टनी की तैयारी है, विभिन्न तरीकों से सरकार क्टेतियां और काम बंदीती हर मिल फेक्ट्री रेलवे वर्क शाप मजदूरों डिपो और दफ्तरों में की जा रही है,

यू पी के मेहनत कश का ने इन तमाम हमलों का मुझाला डट कर टेक्सटाइल, रेलवे चीनी मजदूराने आर्डेन्स डिपो एम इ एस , म्युनिसिपैल्टीज़ वगैरामें लिये है, सरकारपेदारों और उनकी एजन्ट सरकार के इन हमलोंका सही जवाब प्रांत व्यापी आम हड़ताल ही है,

यू पी के लड़ाकू मेहनत कशों की एक सुत्र में बांधने और इस आम हमले का मुझाला करने के लिये यू पी टी यू पी आ एक कन्वेंशन कानपुर में २५ और २६ ताठ को बुलाया गया है, हा ज़िला इलाह और जनवादी लड़ाकू यूनियनों का फ़र्ज़ है कि इस कन्वेंशन में इसकी अहमियत को मद्दे नज़र रखते हुये अपने अपने नुमाइन्दे ज्यादा से ज्यादा तादाद में आवश्यक भेजें , पहुंचने की इतला यू पी टी यू पी कन्वेंशन तैयारी के लिये मजदूर सभा आफिस , गवाल टोली , कानपुर के पते पर भेजनी चाहिये,

लाल सलाम

शिव नाथ पाठक  
एक्टिंग प्रेसीडेन्ट यू पी टी यू पी  
लखनऊ







# آئین

ساتھ

تین سال کی محنت کے بعد ہندوستانی آئین ساز اسمبلی نے ایک آئین تیار کیا ہے اور اگلی ۲۶ جنوری کو اس آئین کو قانونی جامہ پہنا کر ایک "آزاد جمہوریہ" کا اعلان کیا جائے گا۔

اگست ۱۹۴۶ء میں بھارتی آزادی کا اعلان کیا گیا تھا۔ اس آزادی کا اصل مطلب کیا تھا اس کی تیرہ سو سال سے زیادہ عرصہ میں جتنے اچھے طرح کسری ہے۔ پچھلے تیس سالوں کی بنیاد پر یہ بھی اچھے طرح سمجھی جاسکتا ہے کہ آزادی کے بعد اب اس "آزاد جمہوریہ" کے کیا معنی ہونگے اور کون سی نئی سوچات درپیش آئیں گی۔ اس سے پہلے کی آزادی اور آزاد جمہوریہ کی اصلیت ہے جو کہ باری اور جنتا کے بیٹے تھے اور اس میں جیسا جھوٹ کر کانگریسی لیڈروں نے اگست ۱۹۴۶ء میں سامراج کے ساتھ جو گھٹننا ٹیکہ لیا تھا اور آج بھی اسی سمجھوتہ کے مطابق انگریز امریکی دھڑا سٹھوں کے سامنے جو گھٹننا ٹیکہ بالیسی پرت رہے ہیں دیش کامالی مستقبل جس طرح ان کے ہاتھوں بیچ رہے ہیں دیش کی جنتا سوویت روس اور دوسرے جمہوریہ ممالکوں کے خلاف جنگ کی جگہ سازشوں اور تیاریوں میں جس طرح سامراجیوں کا کھلے عام ساتھ دے رہے ہیں۔ انہی سب اپنے اپنے کارناموں کو جھمانے اور ان پر پردہ ڈالنے کے لیے ۲۶ جنوری کو آزاد جمہوریہ اور آزادی کا جھوٹا تماشہ کھوایا جائے گا۔ لیکن اس طرح کے تماشوں اور جھوٹے دعووں سے یہ اصلیت تو نہیں چھپ سکے گی کہ کانگریسی حکومت کرنے والوں نے انگریز امریکی سامراجیوں کے ہاتھ دیش کی آزادی کو بیچ کر اسے ان کا دم چھلہ بنا دیا ہے۔

آزاد جمہوریہ کے بعد بھی کانگریسی حکمرانوں نے برطانوی کامن ویلتھ یعنی انگریزی گردن اقوام میں ہی رہنے کا فیصلہ کر لیا ہے اور یہ بھی طے کر لیا ہے کہ وہ انگریز بادشاہ کو ہی اپنا سردار (کامن ویلتھ کا سرغنم مانتے رہیں گے یہ اس لیے کہ ہندوستانی کانگریسی حکومت کرنے والوں نے دکن یورپی ایشیا میں ہونے والی آزادی کی تحریک کو گلنے کے لیے سامراجیوں کے پارہ دار کتے کا کام اپنے اوپر لیا ہے۔ ساتھ ہی یہ بھی مان لیا ہے کہ امن اور جمہوریت کے علمبردار سوویت روس کے خلاف تیسری جنگ عظیم میں ہندوستان کی زمین کو سامراجیوں کی لڑائی کا اڈہ بنایا جائے گا۔ لڑائی کہ یہ تیاری یہ لوگ دیش کے تحفظ اور پاکستان و کمیونزم کا پتلا دکھا کر کر رہے ہیں۔

نرو نے صنعتوں کو قوم میں ملکیت نہ بنانے دلیسی اور بدلیسی یونٹی میں بھید نہ رکھنے امر دور تحریک کو دبا کر منافع کی گھال چھوٹ دینے کی گارتشیں دے کر بدلیسی یونٹی کو جو نیوٹہ دیا ہے اس کا بھی یہی مطلب ہے۔

اس طرح یہ آئین:

- کانگریسی لیڈروں کی عذارتی بر قانونی عجاب لگاتا ہے۔
- انگریز امریکی اجارہ داروں کے سامنے انکی گھٹننا ٹیکو بالیسی کے کارن دیش ان کی نوآبادی بن گیا ہے کی منظوری دیتا ہے۔
- دیش کے کروڑوں محنت کشوں کی سرمایہ داروں کے زمینداروں اور رجسٹریڈوں کے ہاتھوں سٹیل لوٹ کو قانونی جامہ پہناتا ہے۔
- مردوروں اور ہندوستانی طبقہ کے نوکری بیٹھے لوگوں کے لیے ہیکاری بھوک اور تباہی اور انکی بچوں کی تعلیم کی سہولتوں سے انکار کی سرکاری بالیسی کو آئین کہہ کر ہمارے اوپر لادتا ہے۔
- نو متیز اردوں اور جاگیر داروں کو معاوضہ دے کر صدیوں پرانے جاگیری ظالموں کی لوٹ کو قائم رکھتا ہے۔
- عوام پر ہونے والے فاشسٹ ظلم، بد وارانٹ گرفتاری، بد مقدمہ جیل، فاشسٹ کنڈکٹ میں ایمپ ڈمپس (جلسوں پر جعلی گولی باری آزادی کے سیاہیوں کو پھانسی



دنیو کو اس آئین میں راج کے قاعدے بنا کر قانونی قرار دے دیا گیا ہے۔  
 مقبوضہ لفظوں میں اگست ۱۹۴۷ء کی جس زبردست قومی غمخیزی کو آزادی کا نام دیا گیا تھا ۲۲ جنوری کو اسی  
 غمخیزی کو قانونیت کا جامہ پہنا کر آزاد جمہوریہ کی شکل دی جائے گی۔  
 اس آئین کے مطابق جو راج بنے گا وہ خود غرض طبقوں کا راج ہوگا۔ وہ پوری طرح جمہوریت دشمن ہوگا۔  
 اس آئین میں جو تینے والوں کے زمین پانے پر اور صنعتوں کے قومی ملکیت بنانے پر روک لگادی گئی  
 ہے اس میں دلی کجلی ہوئی جتنا کہ تحریک اور کارروائی کرنے، اپنی یونین بنانے، اثر نال کر کے خود غرض طبقوں  
 کے حیلے اور تشدد کے خلاف ہتھیار اٹھانے اور تقریر چلنے اور کھل کر اپنے خیالات کو ظاہر کرنے کا حق دینے  
 انکار کر دیا گیا ہے۔

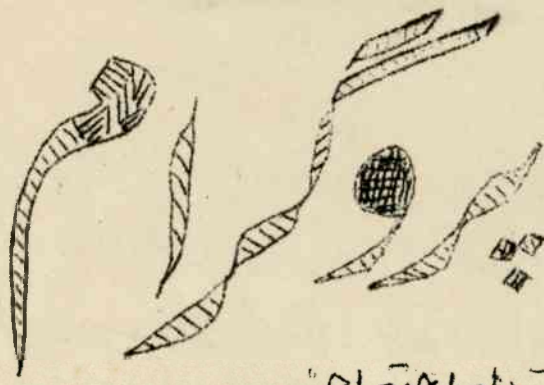
اس لئے :-

سچی آزادی اور جنتا کی جمہوریت کے لئے ضروری ہے کہ اس آئین کو بھٹا کر دیا جائے۔  
 ڈال دیا جائے اور اسکے مطابق بننے والے راج کو درھول میں ملا دیا جائے۔  
 اس دوران میں جگہ جگہ ان طبقوں نے جنتا کی بڑھتی ہوئی بے چینی اور اسکی جنگجو لڑائیوں کو دیکھا ہے اور  
 ان سب سے اس کے دل میں کئی کئی سچائی ہے۔ اسی لئے وہ اس آزاد جمہوریہ کا ڈھکوسلہ ٹھوکرے  
 میں جلدی کر رہے ہیں کہ اس سے جنتا کو درھول میں ڈال دیا جائے۔  
 ہمیں حاکم طبقہ کی اس خیال کا پردہ فاش کر کے اصل آزادی اور سچی جمہوریت کے لئے لڑا کر دینے  
 کو اور بھی تیز بنانا ہے۔

آئیو ای ۲۲ جنوری کو کی جانے والی زبردست جنتا کی سازش سے جنتا کو آگاہ کرنے، اسکے خلاف آواز  
 اٹھانے، اتحادی طبقوں کو ملے جاکر اس غمخیزی کی دستاویز (آئین) کی دھجیاں اڑانے اور اسکی بنیاد  
 پر بننے والے سرمایہ داری راج کو اکھاڑ پھینکنے کا انقلابی عہد کرنے کے لئے پارٹی نے ایک ہفتہ منانے کا  
 فیصلہ کیا ہے جسکا پروگرام آگے سے دیا جا رہا ہے۔  
 سچائیوں کو چاہئے کہ کافی تیاری کے ساتھ یہ ہفتہ منائیں۔ جلسوں میں بولنے والے سچائیوں  
 کو پہلے سے اپنے مضمون کو تیار کرنا چاہئے۔ کسی کا بھگنا اچھوڑ نہیں ہوتا۔ ہونا یہ چاہئے کہ آیا اپنی  
 یاد رکھئے کہ صرف غمخیزی سے کسے کا بھگنا اچھوڑ نہیں ہوتا۔ ہونا یہ چاہئے کہ آیا اپنی  
 بات اس طرح حوالے دینے سے کسے کے لئے "وطن فروشی"۔  
 بنائے کہ بڑھتی والی بڑھتی ہی کہہ اٹھے "وطن فروشی"۔  
 سہ کل کے ساتھ میں تقریر کر کے والوں کے لئے آئین کے بارے میں کچھ خاص خاص باتیں دی جا رہی ہیں  
 جس کا استعمال آپ اپنے لکچروں میں کر سکتے ہیں۔ سچائی اور واقفیت کے لئے کچھ لکچر موازن  
 کے پورے اعداد ۹ اٹھائے۔

- مارکسوا دی لیگوسنگرہ میں : بھارتی ودھان کا اصلی سروپ۔
  - (جو ساتھی ہندی نہیں جانتے وہ انگریزی کے مارکسٹ سلیڈیں میں یہی مضمون پڑھ سکتے ہیں)
  - "مشرق" ۲۵ دسمبر ۱۹۴۷ء میں صفحہ ۶ پر آئین پر مضمون۔
  - ۱۶ دسمبر ۱۹۴۷ء کا "اس روز" کا "اسودنٹ"۔ آخری صفحہ۔
  - ۲۲ دسمبر کو "بھٹی سے لکھنے والا اسودنٹ"۔ آخری صفحہ۔
  - ۲۵ دسمبر کا "سات دن"۔
- یہاں پر ایک آگاہی کر دینا بھی ضروری ہے کہ دیکھنے میں آیا ہے کہ اکثر ساتھی تقریر کرتے وقت کچھ  
 جاتے ہیں کہ وہ ہماری طرح یو۔ جی۔ نہیں ہیں۔ وہ ایسے ایسے لفظوں کا استعمال کرتے لگتے ہیں جو انہیں خواہ مخواہ  
 قانونی شکنجے کا شکار بنا دیتے ہیں۔ مثال کے طور پر تقریر میں یہ کہنا ضروری نہیں ہے کہ آپ کو ہر دوسرے کارکو  
 ہتھیاروں کے ذریعہ آگھاڑ پھینکنا ہے۔ اس کی جگہ آپ کہہ سکتے ہیں "سرمایہ داروں کی اس ہرزہ  
 پھیل سزا کو بدل کر میں جنتا سچی آزادی یا سکتی ہے" اگر آپ لفظوں میں دلیل سے معاملے کو  
 آپ لفظ کوئی بھی استعمال کریں اسکا ایک ہی انجام ہوگا کہ اس سزا کو جانا چاہئے۔  
 آج ہی سے اس ہفتہ کے منانے کی تیاری میں لگ جائیے۔  
 سچائیوں اپنا ہتھیار سچائی کے کام کر کے تم ضرور اس آئین اور اسکی بنیاد پر  
 گھڑی آزاد جمہوریہ کی دھجیاں اڑا کر سچی ضرورتوں کے راج قائم کر سکتے ہیں۔  
 لال سلام - ہر دستکٹ





۲۰ جنوری : "یوم حمایت اور احتجاج"

— بلگانہ، بنگال، ملدبار، بلیا، خیر و زاباد، کانپور کے بہادر عوام کی لڑائیوں کی حمایت۔ تجویزیں۔  
— ان کی راہ پر چلنے کا عہد۔

— جیلوں کے بند سائیکھوں کی شاندار لڑائیوں کی حمایت، تجویزیں، عہد کہ ہم اپنے آپ کو  
کو باہر نکال کر ہی دم لیں گے۔ انکی مانگوں اور رہائی پر تجویز۔

— قانون تحفظ (سیکورٹی ایکٹ) شدت گوں باری کی مذمت پر تجویز۔ اس کے بند کرنے کا  
عہد۔ گوی سے مارے جانے والے باجیلوں میں مارے گئے سائیکھوں کو خراج عقیدت۔

— جس آئین میں اس فاشسٹ شدت کو قانونی بنایا گیا ہے اسکی شہری آزادی دشمن  
کی شکل میں مخالفت اور اسے ختم کرنے کا عہد۔

— آج ہم شہری آزادی کی شدت بند کرنے کی لڑائی ہمارے رہنماؤں اور سائیکھوں کو چھوڑنے  
کی بجھک نہیں مانگتے۔ جتنا یہ کام اپنی طاقت سے پورا کر لے گی۔ فاشسٹوں کو کھل کر

ہی یہ کام ہو سکے گا۔ یہ کام ملک کے کونے کونے میں شروع ہو گیا ہے۔  
— چلے جلسے، جلسوں کے سامنے مظاہرے۔

۲۱ جنوری : "یوم لینن"

— لینن بھی ایک آئین اور اسکی بنیاد پر ایک راجے معمار تھے۔

— سوویت آئین اور اس بندوستانی آئین کا مقابلہ، استالین آئین کی خاص باتیں  
بتائیے۔ ایک آزادی اور جمہوریت کا آئین، دوسرا عدلی شدت اور لوٹ کا آئین۔

— آزادی اور جمہوریت تک پہنچنے کے لیے لینن کا بتایا ہوا راستہ۔  
— ہم لینن کی بتائی ہوئی راہ پر چل کر سوویت جیسا آئین بنائیں گے۔

— عام جلسے۔

۲۲ جنوری : "مزدور مارگ دن"

— آئین میں مزدوروں کے سبھی بنیادی حقوق جیسے یونین بنانا، اجلے کرنا، ہڑتال کرنا،  
پینشن و مہنگائی کی گارنٹی وغیرہ سے انکار کیا گیا ہے۔

— ایسے آئین کو ختم کرنے کا عہد۔

— مزدوروں اور سرکاری ملازموں کی بنیادی مانگوں کے لیے لڑائی کو آگے بڑھانے  
اور تیز کرنے کا فیصلہ ملک بھر کی عام ہڑتال کا فیصلہ دہرایا جائے۔

— مزدور بستوں میں چلے اور مظاہرے۔

— کل بند ٹریڈ یونین کانگریس کی بنیادی مانگوں کی تجویز پاس کرائی جائے اور لڑی  
تعداد میں مزدور سبھاؤں کے ممبر بنائے جائیں۔

۲۳ جنوری : "یوم اتحاد اقوام"

— بندوستانی سرمایہ داروں نے انگریز۔ امریکی دھما سیکھوں کے ساتھ ملک کی آزادی  
کا جو سودا کیا ہے اس آئین کے ذریعہ اسے قانونی بنایا گیا ہے۔ ہیرو پینشن کی یہ منہ پونی  
لازاد جمہوریہ، ایشیا میں رجعت پرستی کی پھرہ دار بنے گی۔ سامراجیوں نے دکھن۔



یورپی ایشیا کی آزادی کی تحریک کو دباے گا بار ہندو شیل کو سونپا ہے۔  
 - نیا جوہی ہندوستان کی زمینیں پر سوویت دشمن تیسری جنگ کے لئے انگریزوں کی جنگی  
 اڈے بنائے جائیں گے۔  
 - عالمی امن کو توڑ کر دوسرے ملکوں کو غلام بنانے کا یہ کام آزادی کی حفاظت کے نام پر کیا جائے گا۔  
 - ملک کی جنتا سیراجیوں اور ان کے ہندوستانی پیٹھوں کی آزادی پسند ملکوں کے خلاف  
 جنگ چھیڑنے کی ڈٹ کر مخالفت کرے گی۔  
 - عالمی امن کی لڑائی میں سوویت یونین 'عوامی جمہوریوں' لال چین کی حفاظت میں رکھیں۔  
 یورپی ایشیا کی آزادی کی تحریک کی حمایت میں عالمگیر اتحاد کا اعلان۔  
 - دوسرے ملکوں کی آزادی کی مدد اپنے ملک کے رجعت پسندوں کے خلاف لڑائی

تیز کر کے ہی ہو سکتی ہے۔  
 ۲۲ جنوری: - جمہوریت اور آزادی کی آئین دشمن دن۔

- برہمنوں کے لوگوں کے سر پر گھونٹے لگائے گئے ہیں۔  
 - غام بھارتیوں کے مظاہرہ پر مورچہ کے ساتھ جموں کو اس دن شہرک پر سونا چاہیے۔  
 - طالب علموں کی مٹنگ کا دن۔

۲۵ جنوری: - کھیت مزدوروں کا نیا دن

- گاؤں میں کھیت مزدوروں کی بھائیوں کی سہماہیں۔  
 - آئین میں زمینداری مٹانے کا نام برد ہو کہ باقی ہے۔  
 - کھیت مزدوروں کو نہ دھرتی ملے گی نہ گزارے لائق تھوڑے۔  
 - گزارے لائق مزدوری اور زمین کے لئے سستے نئے و کھیت کی دوکانوں کے لئے سہولتیں  
 بھرتی کی جائیں اور کام کے لئے اور کام کے لئے زمینداروں کو بلکہ معارضہ مٹانے  
 کے خلاف لڑائی تیز کرنے کا اعلان۔  
 - زیادہ تعداد میں کھیت مزدوروں کی سہماہیں۔

۲۶ جنوری: - فاسٹ آئین دشمن دن۔

- صوبہ کھڑک میں مزدوروں طالب علموں کی لڑائیوں اور میاں پورہ اور مظفر پورہ میں ترقی پسند  
 دانشوروں کی ملی جلی بڑی سہماہیں اور مظاہرے۔  
 - آئین کے رجعت پرستانہ رویے کا بھنڈا اچھوڑو۔  
 - اس کے خلاف متحدہ مورچہ اور لڑائی کا اعلان۔  
 - سیاسی جموں۔  
 - آئین کا ہٹاؤ لکھا جائے اور اسے جہد باہا کیے۔

نوٹ۔ اس پروگرام میں کامیابی ایک تنظیم پر مشتمل ہے۔ اس کے لئے ہر جگہ 'پوسٹر' اور 'ایم ایس' کے ذریعہ لکھیوں  
 گاؤں محلوں میں بھنگ تھوڑے اور دیگر بھنگوں کے ذریعہ 'مل' کا خاتونوں اور محلہ کمیٹیوں کے ذریعہ لکھیوں  
 کے جتنی کے ذریعہ ڈٹ کر لڑائی لکھیے۔ ہر ساتھی کا کام اپنے سے بانٹ دینا۔

پروٹکٹ۔



# قائمیت آئین کی اصل مسئلہ

جلسوں میں بولنے والے سبھیوں کے لئے -  
 ہندوستان پر حکومت کرنے کے لئے کانگریسی لیڈروں نے ایک آئین گڑھ کر تیار کیا ہے۔ مئی ۱۹۳۱ء کی صوبائی کمیٹی  
 کا اس کے بنانے میں کوئی ہاتھ نہیں ہے۔ صرف ۱۳ افریقہ اور اسی طبقے کے نمایندگان نے انہیں کے مفاد کی حفاظت کے  
 لئے یہ آئین بنایا ہے۔  
 آئین ساز اسمبلی کا قیام جمہوری طریقوں سے نہیں ہوا تھا۔  
 اس لئے کہ جتنا کہ آئین ملک کا آئین بنانے کے حق سے محروم رکھا جائے۔  
 آئین کا مقصد:

راج کی یا ایسی کو عدلے والے اصولوں کو تفصیل وار بتانے سے دفعہ ۳ میں لکھا گیا ہے!  
 "اس حصہ کے اصولوں کا مقصد قاعدوں کو کسی بھی عدالت کے درجہ لگا نہیں کرنا چاہئے گا"۔ یعنی راج آئین کے  
 اصولوں کو لا کر کرنے کے لئے مجبور نہیں ہے۔ اور جتنا کہ بھی یہ حق نہیں ہو گا کہ وہ راج سے یہ قاعدے لگا کر آئین کی  
 مانت اٹھائے۔  
 یہ کون سے قاعدے یا مطالبات ہیں جنہیں پوری ذمہ داری اپنے کندھوں پر لینے سے ہندوستانی راج اپنے  
 بنیادی آئین تک سے انکار کرتا ہے۔ ان حقوق کو دفعہ ۳۹ میں پوری تفصیل سے لکھا گیا ہے۔ مثال کے  
 لئے زندہ رہنے کے لئے روزی اور جینے لائق تنخواہ یاے کا تہذیبوں کا حق 'کام کرنے' سیکاری کی حالت میں اسناد  
 یاے اور بڑھانے میں پیش یاے کا حق معیت ابتدائی تعلیم یاے اور جتنا کہ رہا نہیں اور کھانے پینے کے معیار کو  
 اونچا اٹھانے اور اچھا بنانے کا حق وغیرہ۔  
 یہی وہ حقوق یا قاعدے ہیں جنکا مطلب عام جتنا کی آزادی ہے۔ سوویت روس اور یورپی یونین کے جمہوری  
 ملکوں کے آئین میں ان کو جتنا بنیادی حقوق مانا گیا ہے اور وہاں جتنا کون حقوق کو پورا کرنا راج کے لئے  
 لازمی قرار دیا گیا ہے۔ مگر ہندوستان کے آئین میں ان حقوق کو تفصیل کے ساتھ لکھا گیا ہے تو صرف  
 اس لئے کہ راج قانونی طور پر ان ذمہ داریوں کو پورا کرنے سے ہری ہے۔

اسی دفعہ ۳۹ میں دولت اور پیداوار کے ذرائع کے قومی ملکیت بنانے کو روکنے کی زمینی ذمہ داریوں  
 سے بھی انکار کر دیا گیا ہے جو "عام بینک کے لئے نقصان دہ ہوں"  
 آئین کی یہ دفعات ہندوستان کو اجارہ دار سرمایہ داروں کے پیچھے محضت میں بے روک چھوڑتی  
 ہیں۔ وہ پورے ملک کے ساتھ یہ امداد کرتی ہیں کہ عام جتنا کے مفاد کے خلاف ملک کی دولت اور قدرتی  
 ذرائع کے منہجی بھر اجارہ داروں کے ہاتھوں میں سمیٹنے آئے ہر کوئی قانونی روک نہیں ہے۔  
 اس طرح یہ بات آئین کی طرح صاف ہو جاتی ہے کہ آئین کا مقصد جتنا کو روزی خور بنانا ہے۔  
 تعلیم یا آرام دینا نہیں ہے اور نہ آئین کا مقصد یہ ہے کہ جتنا کی اکثریت کو بھوکوں مار کر منہجی کر کے ہاتھوں  
 میں جمع ہونا روکا جائے۔

لوٹ اور ظلم کی کھلی چھوٹ  
 - دفعہ ۲۲ (۲) میں بتایا گیا ہے کہ بغیر معاوضہ کے کسی تجارتی یا صنعتی کاروبار کے مفاد سے  
 کسی منقولہ یا غیر منقولہ جائداد کو عوام کے فائدہ کے لئے قبضہ میں نہ لیا جائے گا" یعنی سرمایہ داروں زمینداروں  
 وغیرہ کے منافع بنوانے لگاں وصول کرنے کے حقوق کی قانون کے ذریعے حفاظت کی جائے گی۔  
 - دفعہ ۹۲ (۳) اور ۹۳ میں بتایا گیا ہے کہ "ہندسہ کار کو جو بھی قرض سود وغیرہ چکانا ہے وہ راج  
 کی آمدنی سے ضرور ضرور دیا جائے گا اور بار ٹیمٹ تک تو اس کے بارے میں ووٹ دینے تک سماحق نہ ہوگا"  
 یعنی ہندوستان کو غلام بنانے رکھنے اور شدد کا راج چلانے کے لئے انگریزوں نے جو قرض لئے تھے  
 ان کا بھگت کرنا ہندوستان کی جتنا کے لئے لازمی ہے۔  
 اسی طرح ریلوے میں انگریز دھننا سٹیشنوں کے لگائے ہوئے قرض کا سود ہندو کروڑ روپیہ سالانہ  
 ہندوستان کی آمدنی سے چکانا جائے گا۔  
 - سرمایہ داری صنعت کو مضبوط بنانے اور سرمایہ داروں کے کارٹیلی کے منافعوں کو چکانے کے لئے



سرکار ہر جتنا قرض ہوگا اور زمینداروں اور رجواروں کو معاوضہ کے نام پر سرکار جو بانڈ دے گی ان سبھی کو  
ہندوستان کی مجموعی جنتا کو ہمیشہ کے لئے ڈھونڈنا پڑے گا۔ آئین کہتا ہے کہ "آزاد" ہندوستان میں دیسی  
اور دیسی سرمایہ داروں 'بانڈ' بانیے والوں 'زمینداروں اور دیسی سبھی کے لئے ایک طرح کے قرضوں کو  
لوٹ لٹم کرنے کی مستقل آزادی رہے گی۔" بننے کے بعد بھی انگریزی گروہ اقوام کا ممبر رہے گا اور اس

— ہندوستان "آزاد" جمہوریہ بنے گا۔  
— طرح سا سراج کے اشیائی پرہ دار کا کام کرے گا۔ پہلے ہی کی طرح جھٹکے رہیں گے۔  
— ریاستی جنتا پر دیسی رجواروں کو برقرار رکھنے کی کارروائی ہے۔  
— دفعہ ۲۸۵ میں ہیرانے انگریز سیرت لوڈی اسٹروں کو برقرار رکھنے کی کارروائی ہے۔  
— آئین کا مقصد یہ بھی ہے کہ جنتا کی بغاوت سے جملگی داری رجواروں کو بچایا جائے اور  
کان اللہ بک کے بڑھتے ہوئے "خطرہ" سے زمینداروں کی دولت کی حفاظت کی جائے۔

جمہوری راج نہیں یو لیس راج!

جنتا کو دعوہ میں رکھنے کی سبھی کو شیخوں کے باوجود ایسا رجعت پرست راج لازمی طور پر  
جنتا میں غصہ پیدا کرے گا۔ اس لئے انہوں نے آخر میں جمہوریت کی سبھی تقابوں کو اٹھایا اور  
اور آئین کی دوسری دفعات کو اس طرح بنایا ہے جیسے کہ یو لیس راج اور لے لگام ڈیٹس میں ہوتا ہے۔  
— جنتا کے بنیادی حقوق میں کلنگ کرنے کا حق نہیں مانا گیا ہے۔ (دفعہ ۱۷۱) (۲)  
— جنتا کے ہتھیار رکھنے کے حق کو نہیں مانا گیا ہے۔  
— اخبار لکھنے، تقریر کرنے اور خیالات کو ظاہر کرنے کی آزادی دینے سے انکار کیا گیا ہے۔  
— انگریزی راج کے سبھی ظلم قانونوں کو جیسے دفعہ ۱۲۲ (بغاوت) پر ایس ایکٹ  
طبعاتی منافرت کیلئے کے قانون وغیرہ کو منظور کر لیا گیا ہے۔  
— جمع ہونے، جلسے اور مظاہرے کا حق ماننے سے انکار کیا گیا ہے۔  
— دفعہ ۱۲۲ (۳) کریمو وغیرہ جالور ہوگا۔ دفعہ ۱۲۱ (۳)  
— یونین اور سنگٹھن بنانے کے حق سے انکار کیا گیا ہے۔  
— "بلڈ مقدمہ" جلا کے کسی کو جیل میں بند نہیں رکھا جاسکتا۔ اس سے سب سے اہم  
اور بنیادی سہری حق کو بھی چھین لیا گیا ہے۔ دفعہ ۱۵  
— جمہوریہ کا پریسیڈنٹ ہلکر ہوگا اور گورنر چھوٹے ہلکر ہونگے۔ اور سارا راج ہلکا

اعلاموں (آرڈینمنٹوں) کے ذریعے۔

— پریسیڈنٹ کا حناڑ جنتا نہیں کرے گی۔  
— وہ کسی صوبہ یا ضلعوں کے اختیارات مرکز کے ہاتھ میں لے سکتا ہے (دفعہ ۲۶۷)۔  
— کسی صوبہ کی آمدنی کے اختیارات کو ختم کر سکتا ہے (دفعہ ۲۷۷)۔  
— شہریوں کے باقی کورٹ میں پیس کارٹی (مقدمہ جلا کو نہیں چھوڑو) کی عرضی کے حق سمیت  
شہریوں کے معمولی حقوق تک چھین سکتا ہے (دفعہ ۱۷۱ اور ۱۷۲) سے روک سکتا ہے۔ (دفعہ ۲۷۹)  
— کسی صوبہ یا ضلعوں میں وہ آئین تک کو عمل میں آنے سے روک سکتا ہے۔  
— "مرکزی پارلیمنٹ" کے فیصلہ کے ذریعہ اس کے کسی یا سبھی اختیارات کو موقوف کر سکتا ہے۔  
— اس کے اختیارات کو سونپا جاسکتا ہے۔ یعنی اکثریت والی پارٹی "غیر معمولی حالات" کے نام پر آئین قانونوں  
کو ختم کر سکتی ہے۔ (دفعہ ۲۷۶ ب) کہ "خطرہ" سامنے ہے تو وہ ایک اعلان لکھ کر کئی دن تک  
اگر پریسیڈنٹ مطمئن ہو جائے کہ "خطرہ" سامنے ہے تو وہ ایک اعلان لکھ کر کئی دن تک  
اس آئین کی بنیاد پر جو راج بنے گا وہ خود عرضی طبقوں کا راج ہوگا وہ پوری طرح جمہوریت دشمن ہوگا۔  
اس لئے ضروری ہے کہ یہ آئین بھاد کر رڈی کی لوٹ کر میں ڈالی دیا جائے اور اس کی بنیاد پر جنتی  
والے راج کو دھول میں ملا دیا جائے۔  
جنتا نے اس کام کی شروعات کر دی ہے (روز کی ریڈیوں، ٹکڑوں کا حوالہ دے کر سمجھا لیں)  
اس کی جگہ پر ہمیں جنتا کی طاقت (حکومت) قائم کر کے جمہوری راج بنانا ہے۔





तमाम जिला कमेटियों के नाम

# जेलों में नये हमले

और

## हमारे काम।

प्यारे साथी,

सबे मर की मूर्ख हड़ताल के बाद, जो ५ दिसम्बर को खत्म हुई, सरकार ने वर्ग-संघर्ष राजबन्दियों पर एक नया हमला शुरू कर दिया है। इस हमले की शक है, मूर्ख हड़ताल और जेल-संघर्ष में हिस्सा लेने पर मुकदमा चलाना और सजा देना और मजदूरों और दूसरे साथियों को भी क्लास न देना। बनारस सेंट्रल जेल में साथियों को पिछले लोठी-चाज के बाद मूर्ख हड़ताल करने पर सजा हुई है। फतेहगढ़ में हाल की मूर्ख-हड़ताल के कारण साथियों पर मुकदमा चल रहा है। कानपुर के साथियों को तो सजा पहले ही हो चुकी थी। आगरा सेंट्रल और डिस्ट्रिक्ट जेल में जो मजदूर साथी हाल में गिरफ्तार होकर आये हैं, उन्हें भी क्लास में रखा गया है। यही हाल कानपुर का है। लखनऊ डिस्ट्रिक्ट और दूसरे जेलों से जो रिपोर्टें आई हैं, उन से यह भी साफ-साफ पता चलता है कि मूर्ख-हड़ताल के बार साथियों को न ठिकाने का रखना मिलने का कोई इन्तजाम हुआ है, और न डाक्टरों की देख-भाल की।

इस हमले का मतलब साफ है। यह काम्यनिष्ठों और दूसरे वर्ग-संघर्ष राजबन्दियों को जेलों के अन्दर टक्कर लेने से रोक देने की एक कोशिश है। यह इस बात की भी कोशिश है कि नजरबन्दी को गोल कर दिया जाये और इन साथियों को जेल में बन्द रखने और भी क्लास के नजरबन्दों की रिआयतें - जैसे क्लास, फैसली एलाउन्स, कितारें, मुलाकात वगैरह धीनने का बहाना हाथ आजाय।

सरकार इन साथियों को जेल में बन्द रखने के लिये दूसरे गन्दे तरीके भी इस्तेमाल कर रही है। जिन नजरबन्दों की मीयार पूरी हो जाती है, सरकार उन पर नैकचलनी का बाह भरवाने के लिये नो हिंस तामील करती है। और जब वह इस तरह के बाह पर दस्तारवत करने से इन्कार करते हैं तो सरकार उन पर मुकदमा चला कर दफ्ता १०७ वगैरह में बाह कर देती है। यहां भी, नजरबन्दों को गोल कर दिया जाता है, सजा के लिये एक केस खड़ा कर लिया जाता है और भी क्लास नजरबन्दों की सहूलतें धीनली जाती है। इस के अलावा मूर्ख हड़ताल के वक्त दर्जाबन्दी, फैसली एलाउन्स, अपने जिलों से तबादला न होना, और जिन का तबादला बाहर हो चुका है, उन को अपने जिलों में वापसी वगैरह के बारे में जो जवानी वारे गोविन्द सहाय ने किये थे, उन में से एक भी पूरा नहीं किया गया है।

साथियों ने अभी ही, इस नये चैलेज को कबूल कर लिया है। बनारस में साथी, जिस में औरतें भी शामिल हैं, अपनी सजा और कैद के खिलाफ मूर्ख हड़ताल पर है। आगरा और कानपुर में साथी दर्जाबन्दी के लिये मूर्ख हड़ताल कर रहे हैं और का. शिव कुमार भिक्षा और का. इशियाक आबदी ने अपनी सजा की मीयार खत्म हो जाने पर सरासर गैरकानूनी तौर पर कैद रखे जाने के खिलाफ और आगरा के साथियों की हिमायत में दिसम्बर में ३ हफ्ते तक हड़ताल की।

यह जरूरी है कि इस वक्त इन सवालों को फौरन लिया जाये और मूर्ख हड़तालियों की हिमायत में प्रचार आन्दोलन शुरू कर दिया जाये।

एक पचा और पोस्टर निकालिये जिसमें ८५ दिन चलने वाली प्रान्त-व्यापी महान मूर्ख हड़ताल का बरवाना कीजिये। सरकारी फाशिस्टी हमले की निन्दा कीजिये। सब नजरबन्द, हवालाली और सजायाफ्रा साथियों को अचा दर्जा, फैसली एलाउन्स, तबादला न कराना, जेल में अलग-अलग न कराना बल्कि मिलने-जुलने की पूरी इजाजत, कितारें, मुलाकात वगैरह के बारे में मुख्य मांगें फिर दुहराइये। और राजबन्दियों को कैद और सजा देने की जो हाल में कोशिश की गई है, उस की निन्दा कीजिये और मांग कीजिये कि ऐसे हकूम एकदम वापस लिये जाये उन तमाम अफसरों को सजा दी जाये जिन्होंने लोठी बसने और कसर निकालने का हुकम दिया था।

अपने पत्रों और प्रचार में इस बात पर जोर दीजिये कि सरकार की नीति वर्जनी है। यह वर्जनी की कम्युनिस्टों पर हमला करने की नीति है, और



मजदूर वर्ग, किसान, विद्यार्थी और दूसरों को पस्त-हिम्मत करने और उनको पार्टी की राह, मजदूरी, रोजगार, धरती-खाते, जमीन, शान्ति, और सच्ची जनवादी सरकार के लिये संघर्ष की राह से हटा देने की कोशिश है।

इसी वर्ग-नीति के खिलाफ और मजदूर वर्ग और दूसरे मेहनतकशों के हित की रक्षा के लिये तो कम्युनिस्ट बुर्जुआ-कांग्रेस जैलों के अन्दर जंग कर रहे हैं। मजदूर वर्ग और दूसरे मेहनतकशों की हिमायत से यह मांगें जीती जरूर जायेंगी। इन बुर्जुआ जैलों पर हल्ला हो जा, हमारे नेता और साथी मेहनतकशों के संघर्षों की रहनुमाई करने के लिये हमारे बीच वापस ले लिये जायेंगे।

हम ने मुजरिमाना तौर पर अपने जेल के साथियों की टक्करों से बच-तवज्जुही बर्ती है कि हम उन के सवालियों को मजदूर वर्ग, खेत-मजदूरों, किसानों, विद्यार्थियों और दूसरों तक नहीं ले गये। जहां कहीं स्त्री शर भी कोशिश की गई - जैसे आगरा, फीरोजपुर, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद वगैरह - वहां जनता हमारी पुकार पर दौड़ पड़ी। फिर भी हमने जनता की इस दौड़ से सबक नहीं सीखा, अपने प्रचार को और भी तेज नहीं बनाया, हड़ताल, प्रदर्शन और पुलिस (जिस से सब को नफरत है) और जेल के फाटकों पर हमला बोलने के जियाले नारे नहीं दिये। इस बार हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि हर जगह रोजगार के संघर्षों की रहनुमाई के दौरान में जेल के साथियों के यह मसले जनता के सामने जरूर लाये जायें। सरकार के इन नये हमलों के खिलाफ टक्कर ली जाये। इस बार हमारे प्रचार-आन्दोलन को जन-सर्गर्भी, हड़ताल, प्रदर्शन, पुलिस से भिड़ना और जहां हो सके जेल पर टक्कर तक पहुंचना चाहिये। खाली "जबानी" प्रचार की सतह तक ही न रह जाना चाहिये।

आप को जेल संघर्षों के बारे में और भी दस्तावेजें भेजी जायेंगी, जिनमें हाल की प्रान्त-व्यापी भूख-हड़ताल का रिष्य (रिहायत लेकन) भी शामिल हो गा। लेकिन इस बीच में इस आन्दोलन को गंभीरता के साथ अपने हाथ में ले लीजिये। फुकलडाकु वर्ग-संघर्ष राजबन्दी कमेटी बनानी चाहिये जिस में ट्रेड यूनियनों, खेत-मजदूर यूनियन, किसान सभा, स्टूडेंट्स फेडरेशन, महिला संघ, प्रगतिशील लेखक संघ, सोविपत-दोस्त अंजुमन, जन-नायक संघ (इपटा) के प्रतिनिधि हों। और यह कमेटी इस आन्दोलन का संगठन करे, प्रचार का इत्तजाम करे, ध्यान, पर्चे और पोस्टर तिकाले, और अन्दर के साथियों और प्रान्तीय वर्ग-संघर्ष राजनैतिक बन्दी बचाव कमेटी, 32, लाटूश रोड, लखनऊ, से सम्पर्क रखे।

हर जिला कमेटी को अपने कैम्पेन (प्रचार-आन्दोलन) की रिपोर्ट "नया स्वरा", "मशाल", "सात दिन", "क्रासरोडस" को भेजनी चाहिये।

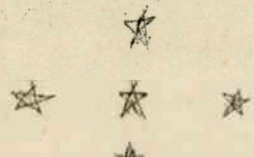
हर जिला कमेटी को प्रोसेक्टर के पास इस की भी रिपोर्ट भेजनी है कि अक्तबर-दिसम्बर के बीच में प्रान्त-व्यापी भूख हड़ताल के बारे में वक्त-वक्त पर जो हिदायतें भेजी गईं, उनपर किस तरह अमल हुआ या नहीं हो पाया। इसी के साथ-साथ अपना आत्म-आलोचनात्मक रिष्य भी जाना चाहिये और उस में इस का जिक्र होना चाहिये कि इस आन्दोलन के दौरान में जो साथी हक में नहीं आये या जिन्होंने दुर्लभ मुलाहट या नामर्दी दिखाई, उन के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई।

यह काम सर्कुलर पहुंचने के पन्द्रह दिन के अन्दर पूरा हो जाना

चाहिये।

लाल सलाम  
प्रोसेक्टर

(नैया) दुआ 2/1/20





# جیلوں میں نئے حملے

## جما کے حکام

پیارے ساتھی۔

صوبہ سرحد کی بھوک ہڑتال کے بعد، جو ۵ دسمبر کو ختم ہوئی۔ سرکار نے طبقاتی جنگی سیاسی قیدیوں پر ایک نیا حملہ شروع کر دیا ہے۔ اس حملے کی شکل ہے۔ بھوک ہڑتال اور جیل ٹکڑوں میں حصہ لینے پر مقدمہ چلانا اور سزا دینا اور مزدوروں اور دوسرے ساتھیوں کو بی گناہ میں نہ دینا۔ بنارس سنٹرل جیل میں ساتھیوں کو پھیلے لاکھی چارج کے بعد بھوک ہڑتال کرنے پر سزا دی گئی ہے۔ فتح گڑھ میں حالی بھوک ہڑتال کے کارکن ساتھیوں پر مقدمہ چل رہا ہے۔ کانپور کے ساتھیوں کو تو سزا پہلے ہی ہو چکی تھی۔ آگرہ سنٹرل اور ڈسٹرکٹ جیل میں جو مزدور ساتھی حال میں گرفتار ہو کر آئے ہیں انھیں سسی کلاس میں رکھا گیا ہے۔ یہی حال کانپور کا ہے۔ کھنڈو سٹرکٹ اور دھرمی جیلوں سے جو پورٹس آئی ہیں ان سے یہ بھی صاف صاف پتہ چلتا ہے کہ بھوک ہڑتال کے بعد ساتھیوں کو نہ کھانا ملنے کا کوئی انتظام ہوا ہے اور نہ ڈاکٹری دیکھ بھال کا۔

اس حملے کا مطلب صاف ہے۔ یہ کمیونسٹوں اور دوسرے طبقاتی جنگی سیاسی قیدیوں کو جیلوں کے اندر مکرینے سے روک دینے کی ایک کوشش ہے۔ یہ اس بات کی بھی کوشش ہے کہ نظر بندی کے سوال کو نظر انداز کر دیا جائے۔ اور ان ساتھیوں کو جیل میں بند رکھنے اور بی گناہ فیملی الائنس، لٹریچر، ملاقات وغیرہ پھینکنے کا بہانہ بنا دیا جائے۔

سرکار ان ساتھیوں کو جیل میں رکھنے کے لئے دوسرے بیچ طریقے بھی استعمال کر رہی ہے۔ جن نظر بندوں کا معیاد پوری ہو جاتا ہے سرکار ان پر نئی جینی کا باندھ دوانے کے لئے ٹریس جمع کر رہی ہے۔ اور جب وہ اس طرح کے باندھ باندھ کر کے سے انکار کرتے ہیں تو سرکار ان پر مقدمہ چلا کر دفعہ ۱۰۴ وغیرہ میں قید کر دیتی ہے۔ یہاں بھی نظر بندی کو ل کر دی جاتی ہے۔ سزا کیلئے ایک "کیس" لکھا کر بیا جاتا ہے اور بی گناہ نظر بندوں کی سہولتیں چھین لی جاتی ہیں۔ اس کے علاوہ بھوک ہڑتال کے وقت بہتر کلاس دینا۔ فیملی الائنس اپنے ضلعوں سے تبادلہ نہ ہونا۔ اور جن کا تبادلہ باہر ہو چکا ہے ان کی اپنے ضلعوں میں واپسی وغیرہ کے بارے میں جو زبانی وعدے کو بند سہانے نے کئے تھے ان میں سے ایک بھی پورا نہیں کیا گیا ہے۔

ساتھیوں نے ابھی ہی اس سے پہلے کو قبول کر لیا ہے۔ بنارس میں ساتھی جسمیں عورتیں بھی شامل ہیں اپنی سزا اور قید کے خلاف بھوک ہڑتال پر ہیں۔ آگرہ اور کانپور میں ساتھی بہتر کلاس کے لئے بھوک ہڑتال پر ہیں اور شیوکار مہرا اور اختیاق عابدی نے اپنی سزا کی معیاد ختم ہونے پر سراسر غیر قانونی طور پر قید رکھ جانے کے خلاف اور آگرہ کے ساتھیوں کی حمایت میں دسمبر میں تین ہفتے تک بھوک ہڑتال کی۔ یہ ضروری ہے کہ اس وقت ان سوالوں کو فوراً اٹھایا جائے اور بھوک ہڑتالیوں کی حمایت میں چارج۔ تحریک شروع کی جائے۔

ایک پرچہ اور پوسٹر نکالنے جسمیں ۸۵ دن چلنے والی صوبہ دار عظیم الشان بھوک ہڑتال کو ا جا کر لیجئے۔ طبقاتی جنگی سیاسی قیدیوں پر سرکار کے فاشسٹی حملے کی مذمت کیجئے۔ تمام نظر بند۔ حوالہ آئی اور سزا یافتہ ساتھیوں کو واپس درجہ فیملی الائنس۔ تبادلہ نہ کرنا، جیل میں ایک ایک نہ کرنا بلکہ ملنے چلنے کی پوری پوری آزادی، کتابیں، ملاقات وغیرہ کے بارے میں خاص مانگوں کو پھر دہرائیے۔ اور سیاسی قیدیوں کو قید اور سزا دینے کی جو حال میں کوشش کی گئی ہے اس کی مذمت کیجئے اور مانگ لیجئے کہ ایسے حکم ایک دم واپس لے جائیں اور ان تمام افسروں کو سزا دی جائے جنہوں نے لاکھی پڑانے اور کمر نکالنے کا حکم دیا تھا۔



اپنے پرچوں اور پرچار میں اس بات پر زور دیکھتے کہ سرکار کی پالیسی طبقاتی پالیسی ہے۔ یہ یورپ اور امریکہ کی پالیسی ہے۔  
حملہ کرنے کی پالیسی ہے اور مزدور طبقہ، کسانوں، طالب علموں اور روسوں کو نسبت ہمت کرنے اور پارٹی کی راہ اندر دہری، روزگار  
چھٹنی خانہ زمین، امن اور سچی جمہوری سرکار کے لئے جدوجہد کی راہ سے ہٹا دینے کی پالیسی ہے۔

اس طبقاتی پالیسی کے خلاف اور مزدور طبقہ اور دوسرے محنت کشوں کے مفاد کی حفاظت کے لئے تو کمیونسٹ  
یورپ اور امریکہ کی پالیسی جیلوں کے اندر جٹ کر رہے ہیں۔ مزدور طبقے اور دوسرے محنت کشوں کی حمایت سے یہ مانگیں جیتی ضرور جائیں گی۔  
یورپ اور امریکہ پر ہتھ بڑھا۔ ہمارا رہنما اور ساتھی محنت کشوں کی لڑائی کی رہنمائی کرنے کیلئے ہمارے بیچ واپس لے جائیں گے۔  
ہم نے مجرمانہ طور پر اپنے جیل کے ساتھیوں کی لڑائیوں کے ساتھ بے توجہی برتی ہے۔ کہ ان کے ساتھیوں کو مزدور طبقے  
کفایت مزدوروں، طالب علموں اور دوسروں تک نہیں لے گئے۔ جہاں کہیں آتی بکری کو شش لگائی۔ جیسے اگر وہ فیروز آباد  
کا پیور، کھنوا، الہ آباد وغیرہ۔ وہاں جتنا ہماری پکاریں دے رہے ہیں۔ پھر بھی ہم نے جتنا اس دور سے سہارا نہیں سیکھا۔  
اپنے پرچار کو اور بھی تیز کرنا پڑا۔ ہڑتال۔ مظاہرے اور پریس (جس سے سب کو نفرت ہے) سے بھرنا اور جیل کے بھانگوں  
پر حملہ کرنے کے جیلوں کے نہیں دیکھے۔ اس بار ہمیں یہ دھیان میں رکھنا چاہیے کہ ہر جگہ روزمرہ کی لڑائیوں کی رہنمائی  
کے دوران میں جیل کے ساتھیوں کے یہ مسئلے جتنا کے ساتھ ضرور لے جائیں۔ سرکار کے ان نئے حملوں کے خلاف نکلنے جانے  
اس بار ہمارے پرچار، اندولن کو عوامی سرگرمی، ہڑتال، مظاہرے اور پریس سے بھرنا اور جہاں ہو سکے جیل لے بھانگ  
پر نکلنا چاہیے۔ خالی "زبانی" پرچار کے سطح تک ہی نہ رہ جانا چاہیے۔

آج کل جیل نکلنے کے بارے میں اور بھی دستاویزیں بھیجی جائیں گی۔ جن میں حال کی صورت واری ہو کر ہڑتال  
کا رپورٹ (جائزہ) بھی شامل ہوگا۔ لیکن سر دست تو اس تحریک کو سنجیدگی کے ساتھ اپنے ہاتھ میں لے ہی لیتے۔ ایک لڑائی  
طبقاتی جنگی سیاسی قیدی کی بنی چاہیے جس میں ٹریڈ یونینوں، کفایت مزدوروں، کسان سبھا، اسٹوڈنٹس فیڈریشن  
انجمن خواتین، انجمن ترقی پسند مصنفین، سوویت دوست انجمن، عوامی تھیٹر (آئی بی جی اے) وغیرہ کے نمائندے شامل ہوں  
اور یہ کمیٹی اس تحریک کی تنظیم کرے۔ پرچار کا انتظام کرے۔ بیان، پریچے اور پوسٹر نکالے۔ اندر کے ساتھیوں  
اور "صوبہ طبقاتی جنگی سیاسی قیدی بچاؤ کمیٹی" کے لاکھوش اور لکھنؤ سے ناٹھ قائم کرے۔  
ہر ضلع کمیٹی کو اپنے ہم (پرچار) کی رپورٹ نیا سوہرا، مشعل، سات دن، کر اس روڈ کو بھیجی جائے۔  
ہر ضلع کمیٹی کو پوسٹ کے پاس اس کی بھی رپورٹ بھیجی جائے کہ اکتوبر۔ دسمبر کے بیچ میں صورت واری  
ہو کر ہڑتال کے بارے میں وقت و وقت پر جو ہدایتیں بھیجی گئی ہیں ان پر کس طرح عمل ہوا یا نہیں ہو پایا۔  
اس کے ساتھ ساتھ اپنا خود تنقیدی رپورٹ بھی لانا چاہیے۔ اور اس میں اس کا ذکر بھی ہونا چاہیے کہ اس تحریک کے  
دوران میں جو ساتھی حرکت میں نہیں آئے یا انھوں نے دھملا ہٹ یا نامردی دکھلائی ان کے  
خلاف کیا کارروائی کی گئی۔

یہ کام اس سرکلر پر بھیجنے کے پندرہ دن کے اندر پورا ہو جانا چاہیے۔

دل سلام  
پروٹیکٹ

تیار ہوا۔ ۳ جنوری ۱۹۴۶ء



## مدورا فائرننگ کے بارے میں

بیادے ساٹھی -

آجے پاس یہ بیان بھیجا جا رہا ہے۔ آپہ اسکو اپنے لوکل اخباروں میں شائع کرائے۔ اسکو یو پی میں پھیلا کر مزدوروں اور کھیت مزدوروں میں تقسیم کرایئے۔ فائرننگ کی مخالفت میں میٹنگیں اور مظاہرے کیئے اور اس میں اس کے مطابق تجاویز پاس کروائیئے اور پبلک بائچ کی مائیگ اڈائیئے۔ اور یہ تجویز وزیر اعظم کو بھیج دی جائے۔ آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی اور صوبائی ٹی۔ یو۔ سی کے دفتر۔ نیا سویرا۔ ساہن دن۔ مشعل۔ کراس رورٹ رینجرز ڈیڑھ اخباروں میں بھیجئے۔

اس طرح کی ہم آج کی مزدور تحریک کے لازمی جز ہیں۔

ایکٹنگ حورہ صوبائی یو پی

۱۴ جنوری ۱۹۵۵ء

## مدورا فائرننگ کے بارے میں یو پی - ٹی - یو سی کا بیان

ٹیوٹاٹھ بائیک ر ایکٹنگ حورہ صوبہ مرکزی یو پی کا نٹرو صوبائی سے حسب ذیل بیان دیا ہے۔

یو پی ٹریڈ یونین کانگریس کی طرف سے میں - کامریڈ وی - چٹاروی جیٹارہ - حورہ آئی ٹی یو سی کے اس مطالبہ کی پرورد تائید کرتا ہوں کہ مدورا صوبہ مدرا میں ۱۹ نومبر ۱۹۵۴ کو یو سی فائرننگ کی کمیٹی اور پبلک بائچ کیئے۔  
۲۱ نومبر ۱۹۵۴ کو آئی۔ ٹی۔ یو۔ سی کا مدورا کے پیغام میں کہا گیا ہے کہ ۱۹ نومبر کو جب یو سی نے ایک مکان پر جانا مارا تو کچھ کمیونسٹوں نے ان پر ہم پھینکے اور یو سی نے اپنی حفاظت کیلئے فائرننگ کی۔ اسکی وجہ سے دو کمیونسٹ مارے گئے۔ لیکن مدرا میں صوبہ ٹریڈ یونین کانگریس کو جو اطلاع ملی ہے اور جو کامریڈ چٹاروی جیٹارہ سے مدرا میں مکے وزیر اعظم کے سامنے پیش کی ہے۔ اسکے مطابق حقیقت بالکل مختلف ہے اس رپورٹ کے مطابق ۱۹ نومبر کو یو سی نے مدورا کے ایک مکان پر جانا مارا اور جیٹارہ کا رکن موجود تھے جو آل انڈیا یو سی اور آل انڈیا صوبہ مزدور کانگریس کے یوسرنگ سے جا رہے تھے۔ کامریڈ ٹی۔ منادین جنکی تلاش میں یو سی تھی وہاں موجود تھے۔ کامریڈ منادین کی تلاش میں تقریباً ایک ہزار گرنٹار بیان میں اور تقریباً ۳ ہزار مکانوں کی تار شبیلیا میں۔ کہا جاتا ہے کہ کامریڈ منادین اور کامریڈ ماری کے مل جانے پر یو سی انکو بازو دھ دیا اور بدوق سے مار ڈالا۔ اسکے علاوہ جو ۱۵ اشخاص گرنٹار کیئے گئے انکو سمیت ہزاروں انڈینس جو نجائی ٹیٹن مثلاً انگلیوں سے پورے بدن میں پینس اور کیدیں جیوٹی گیشن - انکے دین میں پیمانہ ڈالا گیا۔ اور انکو منہ پر ایک کوڑھ کا سرتا سو پانچھ پیر آیتا دینجیو۔ اس اطلاع کے مطابق اس بات سے قطعی انکار کیا گیا ہے کہ یو سی نے محض اپنے بھاد کیلئے کوئی جلائی تھی۔

میں کامریڈ جیٹارہ کے مدرا میں کے وزیر اعظم کے تمام خط کی دل سے تائید کرتا ہوں۔ جس میں انکو نے کہا ہے کہ۔ کسی شریف آدمی کیلئے ان واقعات کی آرا بسند ذہنیت کو سمجھنا اگر ناممکن نہیں تو مشکل ضرور ہے۔ یہ واقعات رپورٹ کیئے گئے ہیں اور اس میں ایک شخصانہ بائچ کی آپکی طرف سے مداخلت اور ایسے وحشیانہ حرکات کے مجبوروں کیخلاف کارروائی کرنا اشد ضروری ہے۔

میں تمام ٹریڈ یونین اور دوسرے ترقی پسند جماعتوں اور اشخاص سے اسقہ حکمت سناہوں کہ ان وحشیانہ مظالم کی مذمت کریں اور انکے بارے میں کوئی بائچ اور مجرم انسران کی سرکار کا مطالبہ کریں۔



मद्रास फ़ाईरिंग के विषय में बयान

यू पी टी यू सी

प्रान्तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के उपाध्यक्ष का० शिव नाथ पाठक ने निम्न लिखित वक्तव्य समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ दिया :— अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस  
 यू पी ट्रेड यूनियन कांग्रेस की ओर से मे/उपाध्यक्ष का० चक्रवर्ती चेतियार के वक्तव्य का जिस में उन्होंने मद्रास (मद्रास प्रान्त) में १६ नवम्बर १९४६ को हुई गोली कण्ड के किल्ले मिलमिले में खुली और आम जांच की मांग की है, जोरदार समर्थन करता हूँ।

संक्षेप २१ नवम्बर को मद्रास से पी. टी. आई. का समाचार था कि १६ नवम्बर को पुलिस ने एक घर में कापा मारा वहाँ पर कुछ कम्युनिस्टों ने उन पर बम्ब फेंके और वह कि पुलिस ने अपनी रक्षा में उनपर गोली चलाई जिस के फल स्वरूप ३ कम्युनिस्ट मारे गये।

लेकिन मद्रास प्रान्तीय ट्रेड यूनियन (द्वारा प्राप्त समाचार, जो कि चक्रवर्ती द्वारा मद्रास के प्रधान मंत्री के सामने रखी गई से मालूम होता है कि दर असल बात दूसरी ही थी. इस समाचार के अनुसार घटना इस प्रकार थी कि पुलिस ने १६ नवम्बर को एक घर में कापा मारा जहाँ ६ मजदूर जो अखिल भारतीय श्रान्ति कांग्रेस और अखिल भारतीय टैक्सटाइल मजदूर कांग्रेस के पोस्टर लिफाफों के लिये वहाँ ठहरे हुए थे. यह का० टी. मनावलम् पी थे जिन की पुलिस तलाश में थी. का० टी. मनावलम् की तलाश में पुलिस ने १००० आदिमियों को गिरफ्तार किया था और ३००० घरों की तलाशी ली थी. यह कहा जाता है कि का० मनावलम् और का० मारी जो पाते ही पुलिस ने उनको बांध दिया और गोली का निशाना बना दिया. और साथ ही साथ जो पांच व्यक्ति गिरफ्तार किये गये थे उन के साथ बहुत अमानुषिक व्यवहार किया गया जैसे नाखून और उंगलियों के पोरों में तिल और पिन ठोसना, कैंसरे उबके उबके पाखाना कौरह उन के गले में उडेलना, और मोठ के मरीजों से उनके बदन पर हाथों को इन माधियों के मुँह पर गड़वाना आदि आदि. पुलिस का यह कहना कि उन्होंने आत्म रक्षार्थ गोली चलाई को एक दम फूँटा हूँ कहा गया है.

मे का० चेतियार के पत्र का पूर्ण रूप से समर्थन करता हूँ जिस को उन्होंने मद्रास के प्रधान मंत्री को भेजा है और जिसमें उन्होंने एक समानदार और सच्चे आदमी के लिये इस प्रकार की घटनाओं के पीछे उन कुत्सित कक्सण पाशविक मनोवृत्ति को समझना असंभव नहीं कठिन अवश्य ही है. ये सब चीजें हैं जिन के समाचार मिले हैं और यहाँ आम के निरपेक्ष जांच के द्वारा हातक्षेप करने और इस प्रकार के अत्याचार के मुजरिमों के खिलाफ कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

"मे सभी ट्रेड यूनियनों और प्रगतिशील संस्थाओं और व्यक्तियों को आह्वान करता हूँ कि वे इस प्रकार के अत्याचारों की निन्दा करें और इस को आम लुके खुली जांच और मुजरिम अफसरों को सज़ा देने की मांग बुलन्द करें."



यू पी टी यू सी मसूला १/५०

३२, लाटूश रोड लखनऊ  
१६ . १ . ५०

मदुरा फ्राइरिंग के विषय में

प्रिय साथी,

आप के पास यह वक्तव्य भेजा जा रहा है, आप इस को अपने स्थानीय पत्रों में निकलवाये, इस को पर्वी में <sup>आम जनता</sup> रूपवाकर मजदूरों और खेत मजदूरों के बीच बढाये, फ्राइरिंग के विरोध में भीटिंग और मुजाहिदे कीजिये और उनमें इस आशय की निन्दा के पुस्ताव पास कराइये और पब्लिक जंच की मांग उठाइये और ये पुस्ताव मदुरा के प्रधान मंत्री और ए. आई. टी. यू. सी. और प्रान्तीय टी. यू. सी. के दफ्तरो, नया संवेरा, सात दिन, मशाल, कास रोड आदि में भेजे जाय.

इस प्रकार की मुहिम आज के मजदूर आन्दोलन के अभिन्न अंग है.

एक्टिंग प्रेसिडेन्ट  
यू पी टी यू सी

नया हुआ १६ . १ . ५०



# पहली सूचा रेलवे मजदूर कांफ्रेंस

20  
और 29  
जनवरी

प्रिय साथी,

आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस और आल इंडिया यूनियन आफ रेलवे वर्कर्स के ऐतिहासिक राष्ट्रीय आम हड़ताल और कुल-हिन्दू रेल हड़ताल के फैसलों को सूबे के रेलवे मजदूरों में अमली शक्ति देने के लिये प्रान्तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस और सूबे की तमाम लाल भांडा रेलवे यूनियों की बीच कमेटियों के नेतृत्व में 20 और 29 जनवरी को लखनऊ में पहली सूचा रेलवे मजदूर कांफ्रेंस होने जा रही है। हमारे सूबे के रेलवे मजदूर आन्दोलन के लिये इस कांफ्रेंस का वही महत्व है जो कुल-हिन्दू मजदूर आन्दोलन और रेलवे मजदूर आन्दोलन के अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के 23वें जलसे और कुल हिन्दू रेल मजदूर कलकत्ता कांफ्रेंस का था।

- यह कांफ्रेंस (1) राजनंदारी पर भती के खिलाफ गैजमेंटों की लड़ाई को, भाऊपुर (कानपुर) की गैजमेंटों की हड़ताल को, बैरोही से मिर्जापुर तक के गैजमेंटों की हड़ताल, पी. डब्ल्यू. आई और जमशेदपूर के वेराव और प्रदर्शनों को लखनऊ के सैकड़ों इन्जीनियरों मजदूरों के इस भयंकरी के रेट के जंगी विरोध को गहरा कर के और पूरे सूबे में फैला कर राजनंदारी पर भती के खिलाफ फैसला-कुल लड़ाई का संगठन करेगी।

- यह कांफ्रेंस शोड स्टाफ के मजदूरों की गौरकान्ती घंटे काम के खिलाफ, शोड एलाउन्स के लिये शिफ्ट ड्यूटी के मजदूरों की 'जिनेवा रैट' (दिसंबर घंटी) पर हमले के खिलाफ और गैजमेंटों के लिये लड़ाई को, इलाहाबाद शोड के मजदूरों के जंगी प्रदर्शनों, और लखनऊ के रनिंग शोड के बहादुर मजदूरों की 18 दिसम्बर और 2 जनवरी की शानदार हड़तालों को सूबे भर के शोडों में फैला कर रेलवे बोर्ड के इस हमले को नाकामयाब करने वाली लड़ाई का इलाज करेगी।

- यह कांफ्रेंस सबे भर के वर्कशापों के मजदूरों की तनखा काट, छटनी और काम बढ़ौती के खिलाफ लड़ाइयों को भोसी और गोरखपुर के बहादुर मजदूरों के प्रदर्शनों और लखनऊ, कौरा और लौको के मजदूरों की जंगी तनखाओं को पूरे सूबे में फैला कर रेलवे मजदूरों के अगले दस्तों की लड़ाई को सूबे के पैमाने पर सज्जित करेगी।

- यह कांफ्रेंस सैनेटरी स्टाफ की दलेल, घुसखोरी, चार्जशीटों, और छटनी के खिलाफ हर एक सेक्टर की लड़ाइयों को एक साथ पिरो कर, उनको कामयाब बनाने के लिये, लड़ाई को एक जंगी स्तर पर ले जायेगी।

- यह कांफ्रेंस गैर-मुस्ताफिज और बदली के मजदूरों के ऊपर होने वाले छटनी, तनखा काटनी, और दूसरे हमलों के खिलाफ लड़ाई का संगठन करेगी और इस के अलावा

रेलवे मजदूरों पर होने वाले हमलों के खिलाफ तमाम लड़ाइयों का जायजा लेकर, इस कांफ्रेंस में जाने वाले छटनी के हमले और अन्ध के नाम पर रेलवे मजदूरों पर 311 रु और 211 रु माहवारी तनखा काट के हमले के खिलाफ फैसला कुल लड़ाई छेड़ने का फैसला होगा।

9 मार्च के बाद हमारे सूबे के एक-एक रेलवे-मजदूर ने तमाम दूसरे मजदूरों की तरह अपने कड़वे तजबों से देखा लिया है कि, बिना बुनियादी मांगों को हासिल किये वह चैन की जिन्दगी नहीं बिना सकता और इन बुनियादी मांगों को हासिल करने का एक ही तरीका है, वह है इन मांगों के लिये आम हड़ताल सज्जित करना। 20 जून और 9 मार्च की वह मांगें जिनके लिये एक से कई बार रेलवे बस्तियां, शोड, यार्ड, स्टेशन और वर्कशाप गूँज चुके हैं

1. बुनियादी तनखाह अनस्विचड मजदूरों के लिये कम से कम 50 रु (पानी कास 8 वाले) 120 कास 2 वाले को, बराबर सालाना तरक्की, इस हिसाब से कि 120 रु और 200 तक आरिबरी तनखाह हो।
2. सस्ती प्रोवेंशियल जनवरी '89 से पहले की तरह फिर चालू हो।
3. महंगाई के हिसाब से महंगाई भत्ता।
4. छटनी बन्द हो, निकाले गये मजदूरों को काम पर वापस लो।
5. तमाम गैर मुस्ताफिज (डेप्युटी और कैजुअल) मजदूरों की नौकरी पक्की करो।
6. उनके में 10 घंटे काम, राजा 7 घंटे।
7. एक महीने की तनखाह समेत रिअर्थनी छटनी और साल में 20 दिन की इतिहासिक छुट्टी सबको मिले। तनखाह की बुनियादी पर फर्क करना बन्द हो।
8. तमाम नजरबन्द कोरेम खिला शर्त रिहा किये जाये, और नजरबन्द किये गये रेलवे मजदूरों का काम पर बहाल किये जाये।
9. रेलवे इन्फोर्सी (जांच) कमिटी रिपोर्ट वापस ली जाये।
10. नजरबन्द या छटनी किये गये मजदूरों को नजरबन्दी या कर्बख्तगी के दिन से लेकर अब तक का पूरा मुआजा पूरी माहवारी आमदनी के हिसाब से दो।
11. पब्लिक सेवोरी एक्ट (अन सुरक्षा कानून), इण्डियन ट्रेड्स डिस्प्यूट्स एक्ट (औद्योगिक नगडा कानून) रेलवे सर्विस रूल, 1989 और मजदूरों की जनताधिक औपदेड यूनियन अधीन और हड़ताल के लिये कानून के हक पर रोक लगाने वाले सारे कानून वापस लो।
12. ट्रेड यूनियन सज्जित करने के पूरे अधिकार और लुबिधाये ट्रेड यूनियन को हक के तौर पर मान्यता दो।
13. सबको फ्री क्वार्टर दो या बख्त में हाउस रेंट (भाडा-भत्ता)

आज फिर फौरी मांगों की शक्ति में हर सेक्टर में उठ रही है। इस कांफ्रेंस में पूरे सूबे के मजदूर अपनी लड़ाइयों दूसरे सूबे के रेलवे मजदूरों और दूसरे मजदूरों की लड़ाइयों के तजबों का तर्बमोना लेकर, आम हड़ताल की तैयारी के लिये दोस पैसले लेंगे।



इस तरह रेलवे मजदूरों पर होने वाले हमलों के खिलाफ मजदूरों के जंगी एके को संगठित करने के लिए उन के विशेष को संगठित करने, उसे गहरा और विस्तृत बना कर, संवे मर के पैमाने पर उसे हमले की शक्ति देने के लिये और देशवापी आम-हड़ताल की तैयारी में यह कान्फ्रेंस एक फैसला कर्म कदम होगा। अगर हम देश की और अपने सूबे की इल्हावी परिस्थिति का ध्यान रखें तो हम देख सकेंगे कि इस कदम की आज क्या अहमियत होगी।

कपडे के मजदूरों को लडाइयां पक कर आम हड़ताल की शक्ति आखिरी करने के दिवस पास है। छटनी और काम-बटोरी के खिलाफ अलग-अलग हड़तलों की शक्ति और जंगी प्रदर्शन किसी भी समय, आम हड़ताल की शक्ति आखिरी कर सकेंगे है। इसी तरह शंकर, बिजबा, म्युनिसिपल कर्मचारियों वगैरह में जगह ब जगह असंतोष हड़तलों में फूट रहा है और वह देशवापी आम हड़ताल के लिये कपडे, और रेलमजदूरों के कंधे से कंधा मिला कर लडाइयों के लिये खिलकल तैयार है।

देहातो में रहे तिरु मजदूरों की रहनुमाई में गरीब किसानों और मजदूरों किसानों की पंजीवादी-सामन्ती लूट के खिलाफ लडाई एके नई अर्थात् सतह पर जा रहा है जिसे हम अपने सूबे में जुहवा नटकी में जलना बसली की आड में होने वाली पत सरकार की लूट की जंगी और खुनी मुरवालफत में, बलि या, सुल्तानपुर, गौजीपुर आत्ममगद में जंगी प्रदर्शनो, पुलिस और जमींदारों से टक्करों में देखते हैं।

कीमतों के बढ़ने, मुद्रा प्रसार, मजदूर घटन वगैरह से पूरे देश की गरीब जनता की आर्थिक अवस्था असहनीय होगई है, और वह मजदूर तबके के नेतृत्व में अपनी फैसला कर्म लडाई छडने के लिये जगह जगह अपने दिन बदिन बढ़ने वाले गुस्से को जंगी तरीके से इजहार कर रहा है।

इस तरह हमारे सूबे की जनता और तैलंगाना के बहादुर किसानों और कलकत्ता के इल्हावी मजदूरों और शहरियों के कंधे से कंधा मिला कर अपनी लडाइयों को दिन पर दिन गहरा कर रही है।

ऐसी हालत में प्रान्तवापी रेलवे मजदूरों की लडाई को संगठित करने और अपर लजाने वाली यह कान्फ्रेंस एक ऐतिहासिक महत्व की चीज होगी।

यह कान्फ्रेंस सूबे के रेलवे मजदूरों की लडाई को और गहरा कर रेलवे आम हड़ताल को एक कदम और नजदीक लायेगी। रेलवे मजदूरों को दिन पर दिन जंगी शक्ति लेने वाली यह लडाइयां और उन को आम हड़ताल का एलान कपडे के मजदूरों की लडाइयां और आम हड़ताल के एलान के साथ मिला कर सूबे के कम संगठित दूसरे मजदूरों मजदूरों में एक नया जोश भर देगे। और आज के कान्फ्रेंसकारों युग में जब छोटी छोटी लडाइयां भी इधियार बंदी टक्करों की शक्ति ले रही है, हमारे सूबे के रेलवे मजदूरों को अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस और अखिल भारतीय यूनियन ऑफ रेलवे वर्कर्स के नारा को अमली शक्ति देने का एक-एक फैसला और एक-एक कदम पूरी इल्हावी परिस्थिति को और गहरा कर देगा।

कान्फ्रेंस के कामों का शुुरुआत करनी चाहिए। लेकिन इस कपडले कि हम कान्फ्रेंस के कामों को ले हमारे लिये यह समझ लेना जरूरी है कि हमारी कान्फ्रेंस वर्ग-संघर्ष की ही एक हिस्सा है और उसे कामयाब बनाने के लिये हमें निर्भीक हो कर दुश्मन के हर हमले को झुटकर मुकाबला करना पड़ेगा।

पंजीपति वर्ग और उस की सरकार संसद के इनके गहरे दारदल में फसे हुये है कि वह कोई भी वैशाली से बेगम कदम उठा सकते है और हमे बराबर उस के लिये तैयार रहना चाहिए। कलकत्ता कान्फ्रेंस के बाद ही मद्रास में कम्प्युनिस्ट पार्टी के साथ १९ ट्रेड यूनियनों का और अन्धी को चीन में ३२ ट्रेड यूनियनों और दूसरे जनसंगठनों की जोर कानूनी वनाया जाना यह दिखलाता है कि अब सरकार इतनी कमजोर होगई है कि वह जनता के मामूली अधिकारों को बिल्कुल टबाये और एक कदम नहीं चल सकती।

**दमन।** जनता के बढ़ते हुये आन्दोलन से बौरवलाई हुई कांग्रेसी पंजीपति सरकार और उसके दलाल सोशलिस्ट और दूसरे सुधारवादी मजदूर नेता रेलवे मजदूरों के रास्ते में हर तरह शकावट डाल कर मजदूरों के बढ़ते हुये कंधों को रोकने की कोशिश करेगा। हमारे प्रचार में हर तरह शकावट डालने की कोशिश होगी और एक तरफ हम पर और लजाने वाले के बीच संगठित मजदूरों पर दमन लग किया जायेगा और दूसरी ओर मजदूरों को आतंकिन करने के लिये प्रचार किया जायेगा।

हमारे जलसे, जलूसों और प्रदर्शनो पर रोके और कडी की जायेगी और दूसरी ओर फूट परस्तों को फूट फैलाने के लिये हर तरह की सुविधा दी जायेगी, लेकिन अगर हमारे साथी याद रखेंगे कि ९ मार्च की गिरफ्तारियों के बाद और कैरिस्ट आतंक के खिलाफ न खाली कानपुर इलाहाबाद, भांसी, गोरखपुर और दूसरे शहरों के रेलवे मजदूरों ने पहले से भी बड़ी बड़ी भीटिंगों की है, प्रदर्शनो हड़तलों को संगठित कर के दिखा दिया है कि ९ मार्च की लडाई में तपे हुये रेलवे मजदूरों को दमन अब नही जक सक्ता।

लखनऊ के रेलवे मजदूरों का पुलिस से टक्कर लेकर अपने नेता साथी जगन्नाथ की हिफाजत करना तरलनऊ के बहादुर मजदूरों का पुलिस सागानों के बीच पुलिस लाठियों का मुकाबला कर के रेलवे मजदूरों का मौज दिवस मनाना यह दिखलाता है दमन से रेलवे मजदूर वजाय आतंकिन होने के राज सत्ता में फूट कर लड़ने का सबक ले रहे है।

अगर हमारे साथी इस बात को याद रखेंगे कि ९ मार्च के बाद रेलवे मजदूरों ने संगीनों को धरदशा में आने वाले कांग्रेसी नेताओं की बात को चुपचाप सुनने के बजाय लखनऊ में जगन्नाथ शंम और भांसी में सम्पूर्णान्त को उन की भीटिंगों के सामने उनकी मुरवालफत में जंगी प्रदर्शन संगठित किया है, इलाहाबाद, भांसी आगरा वगैरह शहरों में अपने पुराने नेताओं के जल जाने पर मामूली संगठनों खलसाये को फिटरो और दूसरे निचले मजदूरों ने खाली अपने संगठनों की हिफाजत की है, बल्कि सोशलिस्टों और सुधारवादीों को शिकस्त दी है।

तो वे इस सत्य को समझ सकेंगे कि आज दमन मजदूरों को परत करने के बजाय और भी दमना से लड़ने के लिये आगे आगे बढ़ता है। जब आतंक से लडाइय जनता के क्रोध और दृढ़ निश्चय को ही बढ़ावा मिलता है और बजाय दमन से परत हिम्मत होने के कपे थेकीन के साथ दमन से पैदा होने वाली हर दिक्कत को पार करेगे और उन्हें मजदूरों की लडाई की रहनुमाई के रास्ते से कोई ताकत नहीं रोक सकेगी।

रेलवे मजदूर दूसरे मजदूरों ही की तरह अपनी रोजमर्रा की लडाइयों की मद्दी में तप कर मौलादी हो रहे है, काजमा नेताओं के प्रति उनका मोह संघर्ष की आग में जल कर राख हो रहा है और लडाई के हर मोड़ पर वे अपने आन्दोलन के बीच में घसे हुये पंजीवादी दलालों की शक्ति और भी साफ़ रख रहे है।

जरूरी यह है कि हमारे पास के नेता और साधारण पार्टी में बहर इन हमलों की पीछे कांग्रेसी सरकार की बुनियादी कमजोरी दरनू सके और बजाय उनके सामने धुटने टुकने के हर हमले का जवाब और मो तजा से देने के लिये मजदूरों के बीच में जाये और इस बात को याद रखें कि हमें हर दमन



और फूट परस्ती के खिलाफ कान्फ्रेन्स संगठित करना है, हमें हर दमन और फूट परस्ती के खिलाफ रेलवे मजदूरों के हितों की हिफाजत करना है, हमें हर दमन के खिलाफ टक्कर लेकर रेलवे मजदूरों के हर संधर्ष को गहरा और विस्तृत कर के कामयाब बनाना है।

कान्फ्रेन्स के काम।

1) कान्फ्रेन्स को कामयाब बनाने के लिये हमारा पहला काम अपने अपने केन्द्रों में ~~सुव्यवस्था~~ सुव्यवस्था दिपार्टमेंट में चलने वाली मजदूरों की लड़ाइयों को तेज करना। इन लड़ाइयों को चलाने के लिये खुनी हुई हड़ताल कमेटियों के नीचे मजदूरों के जंगी एके को और मजबूत करना। हर दिपार्टमेंट में उन्हे वास्तविकताओं को देखकर उनकी बुनियाद पर दिपार्ट और केन्द्रीय हड़ताल या जंगी कमेटियाँ बना लड़ाई को तेज करना।

मजदूरों के उठने वाले पौरी सवालनों और उन के लिये आंशिक संधर्षों की ही मदद से मजदूरों को अपनी लड़ाई तक पर धकीक बढ़ाया और वे अपने दुरमनों की असलियत पहिचानेंगे और इन संधर्षों में निकली हुई और नयी हुई मजदूरों की कमेटियाँ ही आज के काल में मजदूरों की रहनुमाई कर के दुरमन को हर मौके पर शिकस्त दे सकती है।

जो साथी इस संधर्ष में अलग कान्फ्रेन्स के दूसरे कामों को करने की कोशिश करेंगे वे न तो कान्फ्रेन्स के मुख्य ध्येय को ही पूरा करने को और बढ़ेंगे और न ही मामूली कामों में ही कामयाबी पायेंगे।

2) मजदूरों के इन पौरी सवालनों से बुनियादी मांगों को जोड़ कर मांगों की लड़ाई में कान्फ्रेन्स का स्थान बनाइये। आज केवल पौरी मांगों को लेकर आंशिक संधर्षों को आंशिक संधर्षों को सहलदमन मजदूरों के साथ जोड़ा है। मजदूरों की चेतना स्वयं अपने संधर्षों को बढ़ाकर प्रांतीय और देशव्यापी संधर्ष चलाने की ओर है। हमें मजदूरों की हर लड़ाई में कुल-हिन्द रेल हड़ताल और कुल-हिन्द मजदूर हड़ताल को नजरिया देनी चाहिए।

आगे बिना पौरी मांगों को लेकर आंशिक संधर्षों के लिये वगैर आम हड़ताल की श्रावण करना केवल लफ्फाजी करना है तो बिना बुनियादी मांगों और आम हड़ताल के नजरिये के केवल पौरी मांगों को लेकर आंशिक संधर्ष करना मजदूरों की लड़ाई को तोड़-छोड़ के जरिये उन्हें कामयाब बनाने के बराबर है।

3) मजदूरों की चलने वाली लड़ाइयों के नेताओं और उन में पैदा होने वाली कमेटियों की मदद से कान्फ्रेन्स के लिये मांगों के प्रस्ताव पास करा के खुने हमें नुमाइशों के जरिये मजबूत करनी है कि जब हर के लड़ाई मजदूर एक साथ इकट्ठा होकर अपनी अपनी लड़ाइयों के तजवों की मदद से आगे के लिये दोस फेंकते हैं।

कान्फ्रेन्स की कामयाबी के लिये जरूरी है कि हर एक केन्द्र में मजदूरों की लड़ाइयाँ तेज हो और उन के नेता अपने यहाँ की मांगों लेकर उसमें शिकत करें। दूसरी ओर कान्फ्रेन्स की कामयाबी हर एक केन्द्र के मजदूरों की लड़ाई को कामयाब बनाने में उनकी दिक्कतों को हल करने में एक नया प्रयत्न होगी।

4) मजदूरों की लड़ाइयों में फूट डालने वाले घुटनाटेक पूंजीवादी दलालों के नेतृत्व में चलने वाले समर्थनों फेडरेशन, ई. आई. आर और जी. आई. पी. के स्थानीय नेतृत्वों को हर फूट परस्ती के काम की दोस मिसालों के साथ फेडरेशन की गद्दारी नेतृत्वों का सडाफोड करना और उनके अग्र के इमानदार मजदूरों के साथ जंगी एका बनाकर मांगों की लड़ाई को आगे बढ़ाना।

श्री शलिस्ट और दूसरे सुधारवादी नेताओं की १९४६ से लेकर अब तक की तमाम गद्दारी की मिसालें देकर मजदूरों को समझाना होगा कि किस तरह ~~यह सब~~ और ~~किसी~~ ~~के~~ ~~द्वारा~~ ~~से~~ ~~पर~~ ~~कर~~ ~~के~~ ~~उन्होंने~~ ~~बार~~ ~~बार~~ ~~मजदूरों~~ ~~को~~ ~~घोँट~~ ~~में~~ ~~धुरा~~ ~~मामा~~ ~~है~~ और आज किस तरह छटनी और कटनी के हमलों में सरकार के दलालों का काम कर रहे हैं। इस के लिये साधियों को "रेलवे मजदूरों के खिलाफ साजिश" और कलकत्ता कान्फ्रेन्स की रिपोर्ट में दिये गये मसालों की रोजमर्रा के अरबबारों में निकलाने वाली इन की गद्दारी की खबरों की मदद से करनी चाहिए।

- २७ जून १९४६ की हड़ताल वापस लेने में श्री शलिस्टों की गद्दारी
- १६ मई १९४७ के पी. कामीरान के मुखमरी के स्केलों को मान कर फेडरेशन के श्री शलिस्ट नेताओं की गद्दारी
- २७ जून १९४७ को होने वाली बम्बई के ४० हजार रेलवे मजदूरों के साथ गद्दारी
- दिल्ली की अगस्त १९४७ की मीटिंग में जय प्रकाश एण्ड कम्पनी का हड़ताल का विरोध
- जय प्रकाश और उन के दोस्तों का रेलवे मजदूरों पर कामचोर और धूसखोर होने की तुहमत मटना
- तिलुका में आम हड़ताल की मुखालफत कर के गद्दारी करना।
- ६४ नवम्बर १९४८ को गुरु स्वामी का रेलवे जन्म कमेटियाँ रिपोर्ट पर दस्तरखत करने पूरे ४० हजार रेलवे मजदूरों की छटनी का कुबूल करना।
- ९ मार्च को ३ १/२ लाख रेलवे मजदूरों की इच्छाओं के खिलाफ हड़ताल से गद्दारी करना।

इसके अलावा इस गद्दारी पूंजीवादी दलालों के जोरों ने रेलवे मजदूरों के साथ हर मौके पर गद्दारी की है।

रेलवे मजदूरों की जरूरतों, उनकी मीटिंगों, जुलूसों पर लाठियों और गोलियों का इन्होंने समर्थन किया है। वी. बी. एण्ड सी. आर्. आर और जी. आई. पी. के ४०,००० मजदूरों की हड़ताल से शहीद होने वाले २ मजदूर साथियों, एस. आर्. आर. के २ शहीद मजदूरों और डिब्रूगढ़ में रेलवे मजदूरों के खून के धबकों से इन गद्दारों का भी दमन नापाक है।

5) कान्फ्रेन्स का मुख्य ध्येय-रेलवे मजदूरों पर होने वाले हमलों के खिलाफ मजदूरों को जंगी एके को मजबूत करना-हर हमले के खिलाफ मजदूरों के विरोध को संगठित कर के हमले को रोकना-प्रतिरोध को गहरा और फैला कर जबकी हमले- आम हड़ताल का संगठन करना और फसला-कुल लड़ाई के जरिये बुनियादी मांगों को हासिल करना- की प्रचार हमारा लड़ाई के साथ बराबर पचो पोहरों, छोटी बड़ी मीटिंगों और प्रदर्शनों के जरिये होना चाहिए।

हमें यह प्रचार दिन पर दिन तेज करना चाहिए और इसी सिलसिले में हम कान्फ्रेन्स के रिपोर्टों की (जो आप के पास में जगैर है) आम विक्री करना चाहिए, रेलवे मजदूरों पर निकलने वाले पैसों और दूसरे मजदूर साथियों की विक्री का संगठन करना चाहिए।



इस काम के लिये हमें मजदूरों के

(१) पोस्टर और नारे लिखने वाले जन्य

(२) पोस्टर चिपकाने वाले जन्य

(३) प्रमात पेरिथा निकालने, मीरिणों का संगठन करने और प्रदर्शनों के करने के लिये वालंटियर टल बनाने चाहिये।

हमारे प्रचार और संगठन दोनों ही का मतलब मजदूरों की चलने वाली लड़ाइयों में मदद देना और उन्हें अपर उठाना है। हम अपने संगठन तथा कामों में तभी कामयाब होंगे जब हम उन्हें संघर्ष की भावना में करें। लेकिन काफी यह धार रखें कि बिना शुरूआती संगठन तथा कामों के हम किसी भी संघर्ष का संगठन नहीं कर सकते।

हर एक सेक्टर को चाहिये कि वह अपनी जिम्मेदारी महसूस करें और इस कान्फ्रेंस को काम-याब बनाने के लिये हर तरह से सब की मदद करें, यानी अपने स्थानीय कामों को करने के अलावा सबे को रूप में भेज कर के अपने पास के दूसरे कमजोर केन्द्रों में प्रचार जन्य भेज कर सबे को जिम्मेदारी में हाथ बटायें।

(६) हमें अपनी लड़ाइयों को तेज करने और कान्फ्रेंस के प्रचार के साथ अपनी अपनी यूनियनों की आम सेम्बरी करके बराबर मजबूत करना चाहिये। हमें हर एक सेक्टर में यूनियन के सेम्बर बनाने का मोटा लेकर उसे पूरा करना चाहिये। बिना लाल भान्डा यूनियनों को मजबूत किया हुये रेलवे मजदूरों की लड़ाई को ज्यादा आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। वर्गीय संगठन रेलवे मजदूर केवल लाल भान्डे के नाचे संगठित होकर दमन और गद्दारी के खिलाफ ~~आप~~ आप मजदूरों की लड़ाई को संगठित कर के कामयाब बना सकते हैं, इस लिये लाल भान्डा यूनियनों के संगठनों के कमजोर रहने देना पूरे रेलवे मजदूर आन्दोलन को कमजोर रखना है।

कान्फ्रेंस की कामयाबी के लिये भी यह जरूरी है कि हमारी वरान्त कमेटियां अपने संगठन को बढ़ा कर हर डिपार्ट में पहुंच जायें और वहां पर दी गई हिदायतों को पूरा करें।

इस के अलावा हमें अपने केन्द्रीय संगठनों कुल-हिन्द ट्रेड यूनियन कांग्रेस और कुल-हिन्द यूनियन आफ रेलवे वर्कर्स को आम रेलवे मजदूरों में प्रचार करना चाहिये।

(७) कान्फ्रेंस के बारे में दी हुई तमाम हिदायतों को पूरा करने के लिये डी.सी. और रेलवे प्रैक्शन वरान्त कमेटियों की मदद से अपने यहां तैयारी कमिटी बनायें जो पूरे काम की दरत भात और रहनुमाई करें।

(८) कान्फ्रेंस में इतीगोट भेजने के लिये हर टेकनिकल चीज के बारे में नेतृत्व को पूरी तरह से योजना बनानी चाहिये।

जिला कमेटियां और प्रैक्शन इस सर्कुलर को पुराने सर्कुलरों के साथ पढ़कर और बहस कर के पौरन काम शुरू करें। कान्फ्रेंस को कामयाब बनाने के लिये यह अपने सुभावों को अपने यहां इस्तेमाल करने के साथ ही सबे को लिखें ताकि उन का इस्तेमाल दूसरी जगहों में भी किया जा सके।

जिन जगहों में हमें अपने रेलवे काम को अभी तक नहीं संगठित कर सके हैं वहां जिला कमेटियों को चाहिये कि वे इस कान्फ्रेंस की तैयारी के सिलसिले में पौरन काम शुरू करें।

अपनी तैयारियों की रिपोर्ट बराबर नया सेवरा, यू.पी. टी. यू. सी. दफ्तर, तथा अपनी अपनी यूनियनों के केन्द्रीय दफ्तरों में भेजते रहिये।

आपने इस सर्कुलर के मिलने के बाद अपने यहां क्या किया इसकी रिपोर्ट जरूर भेजिये।

लाल सलामी

सुबा रेलवे प्रैक्शन.

नेथा ६/३/६९

★  
★ ★ ★  
★



# मोहर वाव-शान के बारे में

सन्धियों

२५, २६ फ़ावरी को मुबारकपुर, क्वेशन कानपुर में होने जा रहा है, यह क्वेशन आज ऐसे मोर्चे पर होने जा रहा है जब कि पूरे मले के अन्दर इन्कलाबी तन्त्रिय और ६ मार्च की आप हड़ताल का बज गया है, हमारी आवाज चौताफ़ा गुंज रही है, इस हड़ताल को और कभी और जोरदार बनाने का एक ही रास्ता है कि संघर्ष को तेज़ करने के लिये जितने दिन हम दौरान में अपनी अवामी संस्थाओं की ताफ़ से मनाये जायें वह कड़ी जोरदार तैयारी के साथ होने चाहिये, जैसे क़ैर गौली दिवस १५ फ़ावरी को सुभाष मुखर्जी दिवस, १६ फ़ावरी को दामन विरोधी दिवस २२ फ़ावरी को जहाज़ी आगत दिवस, ( जिन्होंने ४६ में बम्बई में क्रिस जहाज़ों पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया था, जिस की हिमायत में आगे बढ़ कर हमारी आमोद क़मल डौड़े गौली से शहीद हुई थी ) २३ फ़ावरी को लाल फ़ौज दिवस ( जिसने हिटला टीजी, मैगोलेनी को स्वतन्त्र विद्या और मरणाण बर्णों, ज़मींदारों क़ठक क़ठक संपाजियों, जंगलों के दिल में हौल पैदा का दिया है ) उसी दिन खेत मज़दूर आप हड़ताल दिवस, इन दिनों को जितने जोरदार तरीक़े से हम मनये गे और इनकी तैयारी में जितनी लड़ाइयां हम लड़े गे उतना ही ६ मार्च की हड़ताल बनी होगी, हम संघर्ष का स्वयं रुदम २५, २६ को मले क्वेशन है, जिस में हमने मले के हा मज़दूर मोर्चे के लड़ाकू नुपहंदों को आना बहुत ज़रूरी है, आज चौताफ़ा करिये जा किड़ी हुई है, हम में किसी ताह का डीलाना पन नुख़सान देह होगा, इस लिये हा मज़दूर मोर्चे में नुपहंदों का आना बहुत ज़रूरी हो गया है, चाहे वहां आप किसी शक़ल में शुक्र हुआ ही, जैसे तैले टेकटाल, तेल मिल, बूड़ी, कक पानी कल, पाकानी पहकामे, डारु तरा, बिजली बेंक मुलाज़मीन, इक़रा तांग, खेत मज़दूर कुठ, म्युनिसिपलटी के मुलाज़िम हा जाह में अपने मोर्चे के सन्धियों का आना इस सतरा क्वेशन में बहुत ज़रूरी होगया है, और अपने अपने मोर्चे की मंगों की तज़वीज़ भी लाना ज़रूरी है हम मले क्वेशन को लड़े जोरदार तरीक़े से आना है और आगे का रास्ता ते बनना है, हम में डीलाना नहीं होना चाहिये.

आज जब पूरे मले के अन्दर ऐसी ऐसी लड़ाइयां चल रही हैं जो एक कोने में दूपो कोने तक ही मरुद नहीं है, यह टक़्तों आज पूरे देश में तेज़ी से आगे बढ़ती हुई चली जा रही है इस लिये अपने मले की तज़क़ती जंग को एक धागे में जाड़ का लड़े जोरदार तरीक़े से एक कोने में दूपो कोने तक एक लाल तंगे में पिरोना बहुत ज़रूरी होगया है, आगहन मले टक़्तों को हम एक में जोड़ें तो किसी एक मिल का खाने, शहा या एक गांव की लड़ाई पूरे देश की लड़ाई होजाये गी, यह जो लड़ाइयां आज पूरे मले में किड़ी हुई है उन्हे बढ़ा का वनी पैमाने पर चलाना बहुत ज़रूरी होगया है, यह लड़ाइयां एक इन्कलाबी चिन्तारी हैं जो पूरे मले और देश में फैल गई हैं, कानपुर, अगार, फ़ीरोज़ाबाद, कानपुर, लखनऊ, फ़र्रुखी, इलाहाबाद, भाठ, अलीगढ़, गौली, ग़ज़ीपुरा, हिं बलिया, आजमगढ़, गोरखपुर देवाया, बस्ती गौंडा, बेहायेव, इटावा, बनपुरी, उन्नाव, मुल्तानपुरा, ग़ायेगौली जोनपुरा, फ़ैजाबाद, बुन्दशहा, यानी पूरे मले में चाहे जहां कहीं यह लड़ाइयां हो रही हैं हा लड़ाई एक ज़बादस्त शक़ल अखतियारा का पकती है, और कराही है, जैसा कि आल इंडियन ट्रेड यूनियन कंग्रेस ने अपने २३ वें अधिवेशन में एलान किया था पूरे देश में आप हड़ताल के इसी तरह की ताफ़ आज मज़दूर की तेज़ी के साथ बढ़ती हुआ कला जा रहा है, इस लिये ६ मर्च को एक दिन की कठि पने देश में आप हड़ताल होने जा रही है, और खेत मज़दूर तो इसी दिन में पूरे मले में आप हड़ताल शुक्र करने जा रहे हैं, इस लिये हा जाह कठ के सन्धियों का यह बहुत



ज़रूरी फ़र्ज़ होगया है कि इस सूबा कन्वेंशन में अपने अपने मोर्चों के साथियों को भेजे और अपने अपने मोर्चों की फ़ीरो और बुनियादी चीज़ों और प्रस्ताव अपने ज़रूरी हैं। इस में मुफ़लत करने से बहुत भारी नुक़सान होगा, आज जिस तरह से सरमायेदार ज़मींदार, मुदक़ोर, चोरबाज़ार वाले सेठ साहूकार और उन सब की हिमायती इस सरमायेदार ज़मींदार परस्त कंग्रेसी सरकार की पुलिस फ़ौज, रज़ादल, और इन के चले चपटे इनटक, मोशलिस्टों की हैअंडी बन्द होजाती, जहाँ लड़ाइयाँ छिड़ जाती हैं, वैसे लाख हम गुदार, दलाल या दुक़ भी क्यों न रहते रहें यह नो नहीं होते, जहाँ लड़ाई छिड़ी कि यह नेता साफ़ अपने नये रूप में आजाते हैं, और पूरी मेहनत का जनता पार्टी के लोगों को अपना लेता है और पुलिस, फ़ौज, रज़ादल, क्या वह बलिक उन नेताओं को परम्मत करना शुरु करदेती है, इसका सूत्र, आप को बोलो के वाक्यात से सबक लेना चाहिए जहाँ रेलवे मज़दूर, विद्यार्थियों और आम जनता ने कई पुलिस चौकियाँ, मोटर मसूम करदिये, ट्रफ़िक का रुक़ार का लिया, यह सर्व विमका नारा जनता अपना रही है। स्टूडेंट फ़ेडरेशन, रेल गेड वर्कर्स यूनियन के तहादुर आवाइ कर रहे हैं, यह नारा पार्टी का नारा है जिसे आज पूरे मुंबे की जनता ने अपना लिया है। फ़ीरोज़ाबाद में मज़दूरों ने काख़ानों पर रुक़ार किया, कई मद्रियाँ जला दीं, कानपुर में रोज़ बग़ी टक़ों होती रहती है, सरमायेदारों को कोई रास्ता नहीं दिखाई देरहा है, इस लिये वह धडाधड कारख़ाने बन्द करने पर अग्रहे है, और मज़दूरों को मला मानने पर उतर आये हैं, लेकिन यह भी नहीं चल पा रहा है, इसी लिये 29 फ़रवरी को पूरे कानपुर में बड़े पैमाने पर मज़दूरों ने ले किया है हड़ताल करके पूरी मिल अपने हाथ में ले लें, यही बात आज गाँव में फैल गयी है, जाह खेत मज़दूर, ग़रीब किसान संघर्ष का रहे हैं, हा जाह वगीय टक़ों तेज़ होती जा रही है, यही रास्ता एक द्वाप, तेलंगाना, का रास्ता है, इस सब लड़ाइयों को जोड़ें और एक साथ मुंबे भर की बनाने का यही रास्ता है, कि हर मज़दूर मोर्चों के साथी इस मज़दूर कन्वेंशन में आयें और 6 मार्च को आम हड़ताल का कामयाब बनाने का एक इन्क़लाबी फ़ैसला लें, ताकि पूरे मुंबे के साथ हमारा सूबा भी कन्वेंशन से एक कन्धा मिलाने का शहर और गाँव को एक दूसरे को जाड़ दे, ट्रेड यूनियन कमेस के फ़ाँडे के नीचे सारे देश में 6 मार्च का नारा पूरे मुंबे के कोने कोने में गूजादे, और यह नारा पूरी बुका है, इसे और जोरदार करना है,

ही ज़िला कक़ यूनिट का काम है कि अपने अपने ज़िलों से इस सूबा मज़दूर कन्वेंशन में अपनी अग़ामी संस्थाओं की तरफ़ से पैग़ाम भिजवायें और उस दिन अपनी अपनी जगहों पर जुलम, प्रदर्शन 25, 26 के मज़दूर कन्वेंशन की हिमायत में लें, जैसे किसान संघ, स्टूडेंट फ़ेडरेशन, महिला संघ, प्रगति शील लेखक संघ शान्ति कमेटी, तबज़ाती जी विद्यार्थी इंदो बवाअर कमेटी की तरफ़ से जोरदार तैयारी के साथ होने चाहिये,

लाल सलाम

प्रोपेक



# منردور کنولشن کے بارے میں

ساقیو

۲۵ مارچ ۲۶ فروری کو صوبہ منردور کنولشن کا بیور میں ہونے جا رہا ہے۔ یہ کنولشن آج ایسے

موقع پر ہونے جا رہا ہے جب کہ پورے صوبے کے اندر انقلابی لہلہ اور ۹ مارچ کی عام بڑتال کا آج گما ہے۔ اس کی آواز جو طرف گونج رہی ہے۔ اس بڑتال کو وسیع اور زوردار بنانے کا ایک ہی راستہ ہے کہ آج کے دن اس دوران میں ہماری عوامی اجماعوں کی طرف سے منائے جائیں، وہ بڑی زوردار تیاری کے ساتھ ہونے چاہئیں۔ جیسے 'یوم بریل' ۲۵ فروری کو سبھی اس مکرچی دن ۱۹ فروری کو ظلم مخالف دن۔

۲۲ مارچ کو 'جمہاری بغاوت دن' (جنہوں نے ۱۹۷۵ء میں کمیٹی میں بیس چھاپوں پر اپنا اقتدار چھالتا تھا جس کی حمایت میں آج ٹرک ٹرہماری کامیوڈ کمل ڈونڈے پر پھیرا ہوا تھا)۔ ۲۳ فروری کو 'لال فوج دن' (جس نے بٹلر، توجو، مسولینی کو ختم کیا اور سرماہ داروں، زمینداروں، سامراجیوں، جنگ خوردن بدل میں ہول پیرا کر دیا ہے)۔ اسی دن کفایت منردور عام بڑتال دن۔ ان دنوں کو جتنے زور دیا جائے

کے ہم منائیں گے اس کا ہی اثر مارچ کی بڑتال کو وسیع ہوگی۔ اس سرگرمی کا خاص قدم ۲۵-۲۶ مارچ کا ہے۔ کنولشن ہے۔ جس میں ہمارے پورے صوبے کے منردور صوبے کے لڑاکو نمائندوں کا اناہت ضروری ہے۔ آج جو طرفہ طبعاتی جنگ چھڑی ہوئی ہے۔ اس میں کسی طرح کا ڈھیلہ بن لڑمان نہ ہوگا۔ اس لیے ہر منردور مورچے سے نمائندوں کا اناہت ضروری ہوگا ہے۔ چاہے وہاں کام کسی شکل میں شروع ہوا ہو۔ جیسے

میلو، ٹیکسٹائل، ٹیل میل، جوڑی، بانی کل، مسرکاری، بجلی، ٹرانسپورٹ، بجلی، بینک، ملازم، ایلے، ٹائل، کفایت منردور، منولینٹی، ملازم، ہر جگہ سے اپنے مورچے کے ساتھ ہونے کا اناہت ضروری کنولشن میں بہت ضروری ہوگا ہے۔ اور اپنے اپنے مورچے کی مانگوں کی توجہ بھی لانا ضروری ہے۔ اس صوبہ کنولشن کو بڑے زوردار طریقے سے کرنا ہے اور آگے کارا سٹاپے کرنا ہے۔ اس میں ڈھیلہ

بن نہیں ہونا چاہیے۔

آج جب پورے صوبے کے اندر ایسی ایسی لڑائیاں چل رہی ہیں جو ایک کونے سے دوسرے کونے تک ہی محدود نہیں ہیں۔ یہ ٹکریں آج پورے دیس میں تیزی سے آگے بڑھتی ہوئی چلی جا رہی ہیں۔ اس لیے اپنے صوبے کی طبعاتی جنگ کو ایک دھاگے میں جوڑ کر بڑے زوردار طریقے سے ایک دھاگے میں جوڑ کر بڑے زوردار طریقے سے ایک کونے سے دوسرے کونے تک ایک لال تانگے میں بیروناہت

ضروری ہو گیا ہے۔ اگر ان سب ٹکروں کو ہم ایک میں جوڑ دیں تو کسی ایک مل کارخانے، شہر یا ایک گاؤں کی لڑائی پوری دیس کی لڑائی ہو جائے گی۔ یہ جو لڑائیاں آج پورے صوبہ میں چھڑی ہوئی ہیں انہیں بڑھ کر وسیع پیمانے پر چیلنا بہت ضروری ہو گیا ہے۔ یہ لڑائیاں آج کل کے

جنگاری ہیں جو پورے صوبہ اور دیس میں پھیل گئی ہیں۔ کانپور، آگرہ، قنور، اباد، بنارس، لکھنؤ، جمالی، الہ آباد، میرٹھ، علیگڑھ، بریلی، غازی پور، علیا، آغلیگڑھ، گورکھ پور، دیوبند، لکھنؤ، بہرائچ، اٹارہ، میں پوری، اٹارہ، سلطان پور، رائے بریلی، جونپور، فیض آباد، بلنڈ شہر، ایسی پور

صوبے میں چاہے جہاں ہیں یہ لڑائیاں ہورہی ہیں ہر لڑائی ایک زبردست شکل اختیار کر سکتی ہے۔ اور کر رہی ہے۔ جیسا کہ آل انڈیا ٹریڈ یونین کانگریس نے اپنے تین سو سالہ اس میں اعلان کیا تھا پورے دیس میں عام بڑتال کے اسی رخ کی طرف آج منردور طبقہ تیزی سے

ساتھ بڑھتا ہوا چلا جا رہا ہے۔ اس لیے ۹ مارچ کو ایک دن کی پورے ملک میں عام بڑتال



ہونے جارہی ہے اور کفیت مزدور تو بہتر ہے۔ اس دن سے یورپ میں  
 تمام ہڑتال شروع کرنے جارہے ہیں۔ اس لیے ہر ایک جگہ کے ساتھیوں کا یہ بہت ضروری فرض  
 ہو گیا ہے کہ اس صورتہ کنولشن میں ایسے مورچے کے ساتھیوں کو بھیجیں اور ایسے مورچے کی  
 فوری اور بنیادی مائٹیں اور تجویزیں آئی ضروری ہیں۔ اس میں غفلت کرنے سے بہت بھاری  
 نقصان ہوگا۔ آج جس طرح سے سرمایہ دار۔ زمیندار۔ سمورے حور۔ جو ہر بار اوروں کے ساتھ ہوا  
 اور ان سب کی حمایتی اس سرمایہ دار زمیندار پرست کانگریسی سرکاروں یولیس فوج  
 رکشادل اور ان کے حیدر جیٹھے اننگ سوشلسٹوں کی ہیکٹری بند ہو جاتی جہاں لڑائیاں  
 چھیڑ جاتی ہیں۔ ویسے لاکھوں غدار دلال یا کچھ کیوں نہ کہتے ہیں یہ نیگے نہیں ہوتے۔ جہاں  
 لڑائی چھیڑی کہ یہ نیتا صاف اپنے نیگے روپ میں آجاتے ہیں۔ اور یوری ہیڈ کٹش جنتا پارٹی کے  
 لغروں کو اپنا لیتے ہے اور یولیس فوج رکشادل کیا بلکہ ان نیتاؤں کی مرہمت کرنا شروع  
 کر دیتی ہے۔ اسکا ثبوت داب کر سہل کے واقعات سے بھی لینا چاہیے جہاں ریلوے مزدور طالب  
 علموں اور عام جنتا کے کئی یولیس جو کیاں مورچے کھم کر دئے۔ ٹرانک پر قبضہ کر لیا۔ یہ بند  
 کس کا لغزہ جنتا پارٹی ہے۔ اسٹوڈنٹس فیڈریشن ریل ورکرس یونین کے بہادر اوروں  
 کر رہے ہیں۔ یہ لغزہ پارٹی کا لغزہ ہے جسے آج یوروں جنتا نے اپنا لیا ہے۔ فیروز آباد میں مزدوروں  
 نے کارخانوں پر قبضہ کیا۔ کئی چھٹیاں جلادیں۔ کانپور میں روز بروز کٹریں ہوتی رہتی ہیں۔  
 سرمایہ داروں کو کوئی راستہ نہیں دکھا کر دے رہا ہے۔ اس لیے وہ دفعہ ادھر کا رخ کر کے ہڈ  
 کرنے پر آ رہے ہیں اور مزدوروں کو کھوکھو کا مارنے پر اتر آتے ہیں۔ لیکن یہ بھی نہیں حل یا رہا ہے  
 اسی لیے ۲۷ فروری کو یورپ کا بیورو میں بڑے پیمانے پر مزدوروں نے طے کر لیا ہے ہڑتال کر کے یوری  
 مل ایسے ہاتھ میں لے لیں یہی بات آج گاؤں میں پھیل گئی ہے۔ ہر جگہ کفیت مزدور چھریاں کان  
 جتہ و جہد کر رہے ہیں۔ ہر جگہ ملتقاتی ٹنگر تیز ہوتی جا رہی ہے۔ یہی راستہ گا کہ یہی تیلنگا نہ کا  
 راستہ ہے۔ ان سب لڑائیوں کو چورٹے اور ایک ساٹھ صورتہ بھری بننے کا یہی راستہ ہے۔  
 کہ ہر مزدور مورچے کے ساتھی اس مزدور کنولشن میں آئیں اور ۹ مارچ کی عام ہڑتال کو کامیاب  
 بنانے کا ایک التذنی فیصلہ لیں تاکہ یورپ کے ملک کے ساتھ ہمارا صورتہ بھی کندھے سے اتر دھا  
 منلا کر شہر اور گاؤں کو ایک دوسرے کو چورٹے۔ ٹریڈ یونین کانگریس کے چھوڑنے کے بجائے  
 سارے ہڈیشن میں ۹ مارچ کا لغزہ یورپ صورتہ کے کوئے کوئے میں گویا دیں۔ اور یہ لغزہ گویا  
 ہے۔ اسے اور زور دار کرنا ہے

ہر صلح یونٹ کا کام ہے کہ ایسے ایسے ملکوں سے اس صورتہ مزدور کنولشن میں ایسی  
 عوامی الجھنوں کی طرف سے پیغام بھجوائیں اور اس دن ایسی ایسی جگہوں پر جلوس بننا ہے  
 ۲۶، ۲۷ کے مزدور کنولشن کی حمایت میں کریں۔ ہیٹے کان سبھا اسٹوڈنٹس  
 فیڈریشن مہینڈ سنگھو انجمن ترقی پسند مصنفین۔ امن کمیٹی۔ طبقاتی جنگی سیاسی قیدی  
 بھاؤ کمیٹی کی طرف سے زور دار تیاری کے ساتھ ہونے چاہئیں۔

لال سلام  
 سردکٹ



# बरेली फायरिंग के बारे में

हा रोज़ बोली से उभरने वाली ख़बरें आ रही हैं। आम जनता ने विद्यार्थियों के साथ मिल कर पंत पत्रि मंडल को एक ज़रूरत बोट पहुँचाई है, ४ फ़रवरी को पुलिस, फ़ायरिंग, लाठी चार्ज और गिरफ्तारियों का जवाब अवासी प्रदर्शनों और टक्करों और २५००० की महान भीड़ों के ज़रिये दिया गया, उस ने सरकार को चौख-लाहट में डाल दिया। विद्यार्थियों ने ट्रैफ़िक (अव्यवस्थित) का हस्तग्राह अपने हाथ में ले लिया, पूरा शहर ५ दिन से हड़ताल पर है, हर तरफ़ से यही भाँग उठ रही है कि सारे के सारे सिविल (जिला) और पुलिस हथियार हटायें जायें, और बुद्धि फ़ायरिंग की पब्लिक जांच हो और उन अफसरों को सज़ा दी जाये जिन्होंने विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज और फ़ायरिंग कराई, यह भाँग इतनी ग़ोर-दार है कि पंत और हुज़ामी कांग्रेसियों और सोशलिस्टों के इतमीनान दिलाने पर भी जनता वार करती रही, अवासी प्रदर्शन जारी रहे, और पुलिस से नहीं टक्कर होती रही, ख़ार भिली है कि ज़िला कोतवाली और दो एक दूसरी पुलिस चौकियाँ फूटती गईं और पुलिस भाग खड़ी हुई, माधुली पुलिस कमिस्ट्रिबल ड्यूटी देने से इनकार कर रहे हैं, ख़ार है कि लखनऊ पुलिस ने भी बोली जाने से इनकार कर दिया।

ऐसी गंभीर परिस्थिति में जब कि बोली में सरकारी मशीनरी एक दम टूट सी गई है पत्रि मंडल ने अब लासतार अफ़सूरी लगा दिया है और फ़ीज बुलवाई है, उस पर लड़ी लड़ाई के साथ ख़ारों पर पदों डाला गया है, हुज़ामी तौर पर 'बोली शहरी कमेटी' की सदस्य से कोशिश की जायेगी कि लड़ाकू विद्यार्थियों मज़दूरों और दूसरी को अलग दिया जाये और उस तरह बोली में आम जनता के लड़ाकू एके में फूट डाल कर दी जाये।

इस वक़्त जहाँ तक आलम हो सका है 'स्टूडेन्ट ऐक्शन कमेटी' जिस में स्टूडेन्ट फ़ेडरेशन ही आगे आगे है विद्यार्थियों की रहनुमाई कर रही है, सोशलिस्टों और स्टूडेन्ट्स कांग्रेस वालों की पूरी तरह झुलई खुल गई है, जनता ने कांग्रेसियों की परममत की, मज़दूर, रेलवे, चीनी, रोज़िन और दूसरे कारख़ानों के मज़दूर लड़ी तेज़ी के साथ इस संघर्ष में खिंचते आ रहे हैं।

बोली ने लड़े ही ज़रूरत तरीक़े से दिखला दिया कि कांग्रेस में भ्रम किस दर्जे तक टूट चुका है, जनता का उभार कितना ज़रूरत है, और लड़ाई किस ऊँची सतह तक पहुँच चुकी है, बोली ने दिखला दिया कि छोटी-छोटी पार्लियमेटो ने कितना ठीक कहा था कि छोटी छोटी टक्करों में लड़ी तेज़ी के साथ लड़ी टक्करों, आम हड़तालों राजनैतिक लड़ाईयों और छोटी गृह-युद्धों का रूप धारण कर लेती है, उसने यह भी दिखला दिया कि जनता के ताज़तवर लड़ाकू एके के आगे यह पूँजी वादी और उनकी सरकार कितनी बेस है।

मज़दूरों, खेत मज़दूरों, किसानों, मध्यम वर्गीय मुलाज़िमी, विद्यार्थियों और दूसरों की लड़ाइयाँ अब एक नहीं और ऊँची सतह पर पहुँच गई हैं, पत्रि मंडल कोशिश कर रहा है कि वह शिपाना दान करे, संघर्षों की तमाम ख़ारों पर पदों डाल कर और अपने 'अमानतों' का नगाड़ा पीट पीट कर इन लड़ाईयों को ख़त्म किया जाये।

उनटक और सोशलिस्टों ने भी इन लड़ाईयों को अमानतियों को माँड़ने के लिये अपनी कोशिश दुगुनी कर दी है, और जब किसी तरह दाल न गली तो उनटक सोशलिस्ट पंत पुलिस, सभी जनता के खिलाफ़ गुन्डई पर उतर जाये, यह सारी कोशिशें पूरी तरह फ़ेल हुईं और जनता की टक्करों दामन से दान जाने के बदले उलटे और भी तेज़ हुईं, जलिया

६ फ़रवरी के दूसरे दिन ५० हज़ार खेत मज़दूर और ग़रीब किसानों के लिये लुधिया मारिज पुर में जमा हुये, इलाहाबाद, लखनऊ, जयपुर, अलीगढ़, अगरा और गोडरा के विद्यार्थियों के ऊपर लाठी, जेल और फ़ायरिस्ट गुन्डई का जवाब ४ फ़रवरी को बोली के विद्यार्थियों ने दिया, ६ फ़रवरी को लखनऊ युनिवर्सिटी के



एक हजार विद्यार्थियों ने स्टूडेंट फ़ेडरेशन के फ़ाँडे के नीचे जोली के विद्यार्थियों के साथ एक बड़ा हज़ार होने के लिये मीटिंग की और काउन्सिल हाउस के सामने एक ब्राम्प प्रदर्शन हुआ सूबे पर ये बड़ा मज़दूरों, रेलवे और दूसरे मज़दूरों का संघर्ष के लिये जंगी एक बढ़ता जा रहा है और वह मालिकों और सरकार के हमले के खिलाफ़ रोज़ रोज़ लड़ते जा रहे हैं, और ६ मार्च को एक दिन की विरोध हड़ताल और कुल-हिन्द ब्राम्प हड़ताल के लिये तैयारी कर रहे हैं, इस वक़्त हमारे सूबे में चारों तरफ़ शहरों और देहातों में हर जगह मज़दूरों किसानों और दूसरे मेहनत कशों के आन्दोलन तेज़ी से फूट रहे हैं और एक ऊंची सतह पर मालिकों और कांग्रेसी सरकार से सीधी टक्कर की शकल ले रहे हैं,

पूर्वी और मध्य यू पी और दूसरी जगहों के खेत मज़दूरों और ग़रीब किसानों की लड़ाइयाँ ज़मींदारों और सुतलों को ख़त्म करने, खुली भिन्नत और पुलिस के खदेह भाने की ऊंची स्क्वैड फ़ैसला इन सतह तक पहुंच रही है, अब विद्यार्थियों की शुरुआत हो चुकी है इस महान संघर्ष की जारी है, इस तरह जोली की घटनाएँ न अलग हैं और न इस्तेफ़ाज़िया, यह अवाजी ध्वनी की ज़्यादाती, भ्रम टूटने और पूंजी पतियों और कांग्रेस सरकार के खिलाफ़ गुस्से की खुली हुई निशानियाँ हैं, और जन स्त्रि सरगानी की नई ऊंचाइयाँ पर पतर देती हैं, जोली की घटनाएँ इस जगत का ज़रूरत मुक्त देती हैं कि ब्राम्प हड़ताल और राजनैतिक हड़ताल का दौर कोई दूबकी चीज़ नहीं है, इस के अख़िलाफ़ मज़दूर और दूसरे मेहनत कश कतई तौर पर इस नज़िल को पहुंच गये हैं, और अब अंग्रेज़ों में उसी की जारी है, उसे ख़ाना, फ़ालाना और आगे लेजाना है, हकी हमें अभी तक इस काम में पिछड़े रहने के मुजरिम हैं,

हर ज़िला स्टेटी का फ़र्ज़ है कि वह जोली के हमले को फ़ोरन ले, और जोली की जनता की मांगों के समर्थन के लिये मज़दूरों के विद्यार्थियों और दूसरों को कारख़ानों के अन्दर और बाहर सड़कों पर और खेत मज़दूरों और किसानों को गाँवों में सरगमों को कि

- तमाम विद्यार्थी और दूसरे वर्ग संघर्ष राजनैतिक बन्दी छोड़े जायें,
- मज़दूरों का हक़ि हटायें जायें,
- पुलिस जांच की जायें, और अफ़सरों को भेजा दो जायें,
- फ़र्ज़, फ़ैज़, ब्राम्प पुलिस और पुलिस हटाई जायें,
- जन सुरक्षा और दूसरे दमनकारी क़ानून रद्द हों,
- यह पूंजी वादी सरकार ख़त्म की जायें,

हमारा प्रचार-आन्दोलन इतना ताज़क़्त वर होना चाहिये कि अख़बारी सियाफ़ा (ख़बरों का दायना) और पत्रान्दियों के पारखे उड़ जायें और हम मज़दूरों और दूसरे वर्गों को दिखायें कि किस तरह जोली के विद्यार्थियों और जनता ने एक ज़रूरत चोट लगाई है जिस से पूंजी पति वर्ग और उनकी सरकार भग्न खड़ी हुई, हमें दिखलाना चाहिये कि यही वह रास्ता है जिस की तरफ़ सारी मेहनत कश जनता अपनी बुनियादी और रोज़ मर्रा की मांगें हासिल करने के लिये मज़दूर वर्ग और उसकी पार्टी रस्तुमाई से तेज़ी से आगे बढ़ रही है, हमें आवाज़ देनी चाहिये कि :-

- जोली के विद्यार्थियों और ब्राम्प के साथ जो जान से एक ज़ायम करो,
- ११ या १३ फ़रवरी को जोली फ़ायरिंग ख़त्म दिवस मनाओ,
- उस की जनवादी मांगें लड़ना जीतने के लिये मज़दूरों, विद्यार्थियों और केब तमाम मेहनत कशों का एक ज़ायम करो,
- ६ मार्च को एक दिन की विरोध हड़ताल के लिये आगे बढ़ो,
- कुल हिन्द ब्राम्प हड़ताल के लिये आगे बढ़ो,

लागल सलाम

प्रोसेक्ट



تمام ضلع کمیشنوں کے نام

# بریلی فائرنگ کے بارے میں

بیارے ساتھیو!

ہر روز بریلی سے ابھارنے والی خبریں آرہی ہیں۔ عام جنتا کے طالب علموں کے ساتھ مل کر نیت وزارت کو ایک زبردست جھوٹ لگائی ہے۔ ضروری کی پولیس ٹائٹلنگ خارج اور گرفتاریوں کا جواب عوامی مظاہروں اور ٹکڑوں اور پچیس ہزار کی عظیم الشان میتنگ کے ذریعہ دیا گیا۔ اس نے سرکار کو کھلے دھڑ میں ڈال دیا۔ گرفتار طالب علموں کو چھوڑنا پڑا اور ٹرافک پولیس بٹان پڑی۔ طالب علموں نے ٹرائنگ (آمدورفت) کا انتظام اپنے ہاتھ میں لے لیا۔ پورا شہر پانچ دن سے بڑتال ہے۔ ہر طرف سے ایسی مائگ اٹھ رہی ہے کہ سارے کے سارے سبیل (ضلع) اور پولیس عالم بٹانے جائیں۔ فائرنگ کی پہلک خارج ہوا اور ان افسروں کو سزا دی جائے جنہوں نے طالب علموں پر لاکھن جارج اور فائرنگ کر دئی۔ یہ مائگ اتنی زور دار ہے کہ نیت اور مقامی کانگریسیوں اور سوشلسٹوں کے اہلکاروں کو لے کر بھی جنتا دار کرتی رہی عوامی مظاہرے جاری رہے اور پولیس سے ٹکڑے میں ہوتی رہیں۔ جس پر مل ہے کہ قلعہ کو تو ابی اور ایک دو دوسری پولیس جو لیاں چھوڑ دی گئیں اور پولیس کھانگ کھڑی ہوئی۔ مگھولی پولیس کانسٹیبل ڈیوٹی دینے سے انکار کر رہے ہیں۔ جس پر لے لکھو پولیس نے بریلی جانے سے انکار کر دیا۔

ایسی نازک صورت حال میں جبکہ بریلی میں سرکاری مشینری ایک دم ٹوٹ گئی ہے وزارت نے اب لگاتار کرفیو لگا دیا ہے اور فوج بلوائی ہے۔ اس پر سے بڑی سختی کے ساتھ ظہروں پر پردہ ڈالا گیا ہے۔ مقامی طور پر منہ بولی "شہری کمیٹی" کی مدد سے کوشش کی جائے گی کہ لڑاکو طالب علموں مزدوروں اور دوسروں کو الگ کیا جائے اور اس طرح بریلی کی عام جنتا کے لڑاکو ایک میں جھوٹ ڈال دی جائے۔

اس وقت جہاں تک معلوم ہوتا ہے اسٹوڈنٹس ایکشن کمیٹی جس میں اسٹوڈنٹس فڈریشن ہی آئے۔ آگے بڑھے طالب علموں کی رہنمائی کر رہی ہے۔ سوشلسٹوں اور اسٹوڈنٹس کانگریس والوں کی پوری طرح قلعی کھل گئی۔ جنتا کے لڑاکو پولیسوں کی خوب مہرمت بھی ہے۔ مزدور بریلے 'جینٹی' روزوں اور دوسرے کارخانوں کے مزدور بڑی تیزی کے ساتھ اس جدوجہد میں کھینچے آ رہے ہیں۔

بریلی کے بڑے ہی زبردست طریقے سے دکھلا دیا کہ کانگریس میں جھڑم کس درجہ تک ٹوٹ چکا ہے جنتا کا اجمار کتنا زبردست ہے اور لڑائی کس اونچی سطح تک پہنچ چکی ہے۔ بریلی نے دکھلا دیا کہ بولت بیورو نے کتنا ٹھنک باجھا کہ چھوٹی چھوٹی ٹکڑوں کی تیزی تیزی کے ساتھ بڑی ٹکڑوں عام ہڑتالوں سیاسی لڑائیوں اور چھوٹی خانہ جنگیوں کی شکل اختیار کر لیتی ہیں۔ اس نے یہ بھی دکھلا دیا کہ جنتا کے طاقتور لڑاکو ایک کے آگے یہ سرمایہ دار اور انکی سرکار لیتے بے بس ہیں۔

مزدوروں، کدیت مزدوروں، گن 'اور میانی طبقہ والے ملدزموں' طالب علموں



اور دوسروں کی لڑائیاں اب ایک نئی اور اونچی سطح پر پہنچ گئی ہیں۔ وزارت کو شش کر رہی ہے کہ وحشیانہ تشدد کے لڑائیوں کی تمام خبروں پر سوردہ ڈال کر اور اپنے "کارناموں" کا لگاؤ اپیٹ پیٹ کر ان لڑائیوں کو ختم کیا جائے۔ انڈیا اور سوئٹزرلینڈ میں ان لڑائیوں کو قانونی نالیوں میں موڑنے کے لئے ایسی کوششیں دگنی کر دی ہے۔ اور جب کسی طرح حال نہ گلی تو انڈیا - سوئٹزرلینڈ - بینٹ پولیس میں بھی جنتا کے خلاف غنڈوں پر اتر آئے۔ یہ ساری کوششیں بری طرح خیل ہوئیں اور جنتا کی ٹکر میں تشدد سے دیکھنے کے بدلے آئے اور بھی تیز ہوئیں۔ بلیا فائرنگ کے دوسرے دن پچاس ہزار کھیت مزدور اور نریب کان کا نفرس کے لئے کوڑا مانڈ پور میں جمع ہوئے۔ الہ آباد، لکھنؤ، کانپور، علی گڑھ، اتر پردیش اور گورنر کے طالب علموں کے اوپر لاکھی، جیل اور فاسٹ غنڈوں کا جواب لہر نوری کو بریلی کے طالب علموں نے دیا۔ ۶ فروری کو لکھنؤ یونیورسٹی کے ایک ہزار طالب علموں نے اسٹوڈنٹس فدریشن کے عہدے کے نیچے بریلی کے طالب علموں کے ساتھ ایک کا اظہار کرنے کے لئے میڈنگ کی اور کاؤنسل ہاؤس کے سامنے ایک عام مظاہرہ ہوا۔ صوبہ بھر میں لیکچر مزدوروں، ریلوے اور دوسرے مزدوروں کا ڈرامہ کے لئے جنگی الطائر ہٹا جا رہا ہے اور وہ مالکوں اور سرکار کے حملے کے خلاف روز روز لڑتے جا رہے ہیں۔ ۹ مارچ کو ایک دن کی اہتجاجی ہڑتال اور کل ہند عام ہڑتال کی تیاری کر رہے ہیں۔ اس وقت ہمارے ہونہ میں چاروں طرف شہروں اور دیہاتوں میں ہر جگہ مزدوروں کا لڑنا اور دوسرے محنت کشوں کی ہڑتالیں تیزی سے بھوٹ رہی ہیں اور ایک اونچی سطح پر مائیکرو اور کانگریس سرکار سے سیدھی ٹکر کی شکل میں ہیں۔

یورپی اور وسطی یورپی اور دوسری جگہوں کے کھیت مزدوروں اور نریب کانگریس لڑائیوں زہیداروں اور مالکوں کو ختم کرنے کی گھنٹی بھڑکتی اور پولیس کو گورنر مسٹرانے کی اونچی جیلوں کی سطح پر پہنچ چکی ہیں۔ اب طالب علموں کی شروع کی ہول اس عظیم الشان لڑائی کی باری ہے۔ اس طرح بریلی کے واقعات نہ الگ ہیں اور نہ القاعدہ۔ یہ وہاں ہے جہاں کی زیادتی 'بھگت سنگھ' اور سرمایہ داروں اور کانگریس سرکار کے خلاف غنڈوں کی گھنٹی بھڑکتی لڑائیاں ہیں اور وہاں سرگرمی کی نئی اونچائیوں کا پتہ دیتے ہیں۔ بریلی کے واقعات اس بات کا زبردست ثبوت دیتے ہیں کہ عام ہڑتال اور سیاسی ہڑتال کا دور کوئی دور کی چیز نہیں ہے۔ اس کے برخلاف مزدور اور دوسرے محنت کش قطعی طور پر اس منزل کو پہنچ گئے ہیں۔ اور اب ہر ڈگروم میں اسی کی باری ہے۔ اسے بڑھانا 'پھیلانا' اور آگے لے جانا ہے۔ ہمیں ابھی تک اس کام میں بھڑکتے رہنے کے مجرم ہیں۔ ہر ضلع کی کمیٹی کا فرض ہے کہ وہ بریلی کے مسئلہ کو فوراً لے۔ اور بریلی کی جنتا کی مالکوں کی حمایت کے لئے مزدوروں، طالب علموں اور دوسروں کو کارخانوں کے اندر اور باہر سڑکوں پر اور کھیت مزدوروں اور سالوں کو گاؤں میں سرگرم کرے گا۔

- تمام طالب علم اور دوسری طبقاتی جنگی سیاسی قیدی چھوڑے جائیں۔
- موجودہ حکم نامے جائیں۔
- بیلنگ بائیکاٹ کی جائے اور افسروں کو سزا دی جائے۔
- کرنیو فوج 'آرم پولیس' اور پولیس ہٹائی جائے۔
- "محفظہ" اور دوسرے ظالمانہ قانون رد ہوں۔
- یہ سرمایہ دار سرکار ختم کی جائے۔

ہماری ہر جگہ - محریک اتنی طاقتور رہنی چاہیے کہ اشاری سیاہ یا (خبروں کا دبانہ) اور بائیںوں کے پیرھے اڑ جائیں اور ہم مزدوروں اور دوسرے طبقوں کو دکھا سکیں کہ کس طرح کہ بریلی کے طالب علموں اور عوام نے ایک زبردست جوش لگائی ہے جس سے سرمایہ دار طبقہ اور اپنی حکومت بھاگ گئی ہوگی۔ ہمیں دکھانا چاہیے کہ یہی وہ راستہ ہے جس کی طرف محنت کش جنتا اپنی ہمدردی اور زور متوا کی مانگیں حاصل کرنے کے لئے مزدور طبقے اور اپنی پارٹی کی رہنمائی میں نریب کان سے بڑھ رہا ہے۔ ہمیں آواز دینی چاہیے کہ - \* بریلی کے طالب علموں اور عوام کے ساتھ جس جہاں سے ایسا قائم کرو۔ ۱۱ مارچ اور ۱۳ فروری کو بریلی فائرنگ کے "مناظرہ" \* سب کی جمہوری مانگیں لڑ کر جنتا کے لئے مزدوروں۔ طالب علموں اور عام محنت کشوں کا ایسا قائم کرو۔ \* ۹ مارچ کو ایک دن کی اہتجاجی ہڑتال کے لئے آگے بڑھو۔ \* کل ہند عام ہڑتال کے لئے آگے بڑھو۔



# विधानसभा सप्ताहकी रिपोर्ट के संवेदन में

प्रिय माधियो

केन्द्र द्वारा भेजे गये विशेष मुद्रित में यह कहा गया था कि सत्र प्रान्तीय सभों को आदेश दिया जाता है कि २६ जनवरी से २, ३ हफ्ते के अन्दर इस आन्दोलन की पूरी रिपोर्ट केन्द्र को भेजे. रिपोर्ट का मतलब समीक्षा में नहीं है उसे जाद को भी भेजा जा सकता है. रिपोर्टों के मुख्यतया: हैं जैसे आन्दोलन के दौरान विभिन्न स्थानों में सभों की संख्या, उनमें हिस्सा लेने वाली जनता की संख्या, विरोध के स्वरूप आदि और इसके साथ-साथ पर्वे ही इस बात की इत्तला हो कि किस तारीख को ऐक्शन में उतरा गया. केन्द्र चाहता है कि वह संसदीय में इस बात की चेक करे कि ये आदेश किस हद तक कार्यान्वित किये गये और इस प्रकार मालूम करना चाहता है कि उसकी जनता को संवर्धित करने की शक्ति कितनी है.

" प्रान्तीय सभों को यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यह आदेश कि आन्दोलन की वास्तविक रिपोर्ट जो केन्द्र द्वारा तय की गई और प्रान्तीय आन्दोलन की रिपोर्ट जो केन्द्र द्वारा तय की गई हो, ये हमारे आदेश हमेशा के लिये माने जायें. इस प्रकार के आन्दोलन की रिपोर्टों को भेजा जाय."

तयारिणी करना और अपने जिलों में हमारे पास रिपोर्ट भेजना आप का फ़ौरी काम है. इस काम के लिये एक डी पी से नमिपुक कीजिए. रिपोर्ट आप की आली डाक के साथ भेजी जानी चाहिये.

लाल बलराम

प्रोसेक

तयारिणी जिले के नाम

# उर्दू मुलतिन के बारे में

प्रिय माधियो

कुछ जिलों में उर्दू में पार्टी मुलतिन की मांग आई है. लेकिन इस से पतिल कि हम उर्दू मुलतिन निकालें, यह मालूम होना जरूरी है कि किस जिले में कितनी मुलतिन ली जा सकती है. वनर्स द्वारा पार्टी की माल्टी हालत को देखते हुये इस ज़ादा खर्च को उचित करना मुश्किल हो जायगा. उर्दू मुलतिन के दावा ला भा वही होंगे जो हिन्दी में.

आप जल्द से जल्द लिखिये कि आप के जिले में कितनी उर्दू मुलतिनों की जरूरत है.

लाल बलराम

प्रोसेक



آئین مخالف ہفتہ کی رپورٹوں کے متعلق

پیارے ساتھیو -

سسر کے ذمہ دہ بھیجے گئے خاص سرگلہ میں بدرا گیا تھا کہ -

وہ تمام عورت کشیوں کو یہ بھی ہدایت دی جاتی ہے کہ ۶ مارچ خوری کے دن - میں ہفتہ کے اندر ہی سسر کو اس تحریک کی پوری رپورٹ بھیجیں - اپنے - رپو کا مطلب رپو سے ہیں ہے جو پور کو آگے لگتا ہے رپورٹ میں واقعاتی اطلاع ہوئی جائے جسے تحریک کے دوران میں مختلف جگہوں پر میٹنگوں کی تعداد، حاضرین (مجموعہ) مظاہرہ کی شکل وغیرہ اس کے ساتھ خاص ہرچے ہوں اور یہ اطلاع کہ کون کون سے طبقے شرکت میں آئے - سسر ہفتہ سنی سے جیکے رواج کرنا چاہتا ہے کہ اس کی ہدایتیں کہاں تک عمل میں آتی لائی گئیں اور معلوم کرنا چاہئے کہ جتنا کو ملانے کی بہاری طاقت کتنی ہے -

عورت کشیوں کو یہ بھی نوٹ کرنا چاہئے کہ سسر کی طے کی ہوئی ہمسروں اور عورتوں کی طے کی ہوئی عورتوں کی ہمسروں کی واقعاتی رپورٹ بھیجیں گے جو ہدایت دی گئی ہے وہ ہفتہ کبھی ہے - اس طرح کی تمام تحریکوں کی رپورٹ "فورا" بھیجیں جائے -

تیار یا کرنا اور صلہوں سے بہارے یا اس رپورٹیں بیونا آیفانوری کام ہے - اس کام کے لئے ایک ڈی۔سی۔ ایم مقرر کیجئے - رپورٹ آئی اٹل ڈاک سے بھیجی جان چاہئے -

لال سلام

پروسیڈر

تمام ضلع کمیٹیوں کے نام

اردو بلتین کے بارے میں

پیارے ساتھیو!

کچھ ضلعوں سے اردو میں یاد ڈل بلتین کی مانگ آئی ہے - لیکن اس سے پہلے کہ ہم اردو بلتین نکالیں یہ معلوم ہونا ضروری ہے کہ کس ضلع میں کتنی بلتین کی مانگ ہے - وہ نہ کوئی کمیٹی کی مالی حالت کو دیکھتے ہوئے اس زائد خرچ کا برداشت کرنا مشکل ہو جائے گا - اردو بلتین کا دام لگ بھگ وہی ہوگا جو ہندی کا - آپ جلد سے جلد لکھئے کہ آپ کے ضلع میں کتنی بلتینوں کی اردو میں ضرورت ہے -

لال سلام

پروسیڈر



★ दमन विरोधी आन्दोलन और जन संघर्षों को और तेज करो -  
 ★ १८ फरवरी को दमन विरोधी दिवस मनाओ।

प्रिय सगंधियों,

मजदूरों, खेत मजदूरों, मेहनतकश किसानों और आम मध्यम वर्गीय जनता के बढ़ते हुये गुस्से, जनवादी शान्ति की उभड़ती हुई ताकतों, विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों और दूसरे लोगों के सामाजिक विरोधी संघर्ष नये विधान के उदघाटन उत्सव के शुरु के और उसके दौरान में जगह-जगह हुये जनता के गुस्से ने यू पी सरकार को और ज्यादा चौखलाहट में डाल दिया है.

शान्ति सम्मेलन, विद्यार्थियों, रेलवे कर्मचारियों और खेत मजदूरों के सम्मेलनों पर किये गये पुलिस के हमलों, विधान विरोधी सप्ताह के दौरान में किये गये आक्रांशों और गिरफ्तारियों तथा जेलों के अन्दर किये हमलों से साफ जगह होता है कि हमारे लीडर जनता के बढ़ते हुये असंतोष को और उसकी लड़ाकू ताकत को कम करके आंफते हैं. लीडरों ने हमलों की ताकत रक्षात्मक रूप अपनाया, या दुश्मन पर रहम किया, या वे लड़ाइयों से भागे हैं. जब कि मजदूर और दूसरे मेहनतकश अवाम मुस्तेदी से डटे रहे, लड़े और हमले भी आगे बढ़ने को तैयार थे. अगर लीडरों ने हमलावर लड़ाकू रचनाएँ की होती तो हमने जरूर उन हमलों को कुचल कर आगे बढ़ कर दुश्मन की रक्षात्मक यानी लचक की लड़ाई लड़ने पर मजबूर कर दिया होता, और कार्य अफिसरों को भी इतना मुस्मान न उठाना होता. इस सम्मेलनों के पूरे सिंहालोनों से यह गलतियार विस्तार में मालूम होगी.

लेकिन इस वक हम इस बात पर जोर चाहते हैं कि इन हमलों के बाद पीछे हटने, काम में सुस्ती लाने या सगंधियों के जेल से कूटने का इंतजाम करने के सभी रूफान को शिवाय कार्यरत या गद्दारी के और कुछ नहीं कहा जा सकता है. ऐसे विचार रखने वाले सगंधियों से डट कर संघर्ष करना लाजिमी है. ऐसे विचार रखने वाले सगंधी मेहनत कश जनता के बढ़ते हुये गुस्से और जन संघर्षों को और भी आगे बढ़ाने के ज़रूरत पीछे ही कनीटेंगे. मजदूर वर्ग की कुछ सशस्त्र हमलावर लड़ाइयों को पंगु बनाने में और इस पूंजीवादी सरकार के मददगार शान्ति होंगे. इस लिये ऐसे सगंधियों से जम कर मोर्चा लेना है. तभी हम अपनी लड़ाइयों को और आगे बढ़ा सकते हैं.

मजदूरों और मेहनत कश जनता ने यह सब अपनी तरफ पर देख लिया है. उसने इन्टर और सोशलिस्ट लीडरों और गुंडों जैसा फूट परस्तों, गद्दारों को भी देख लिया है. साथ ही साथ उसने यह भी देख लिया है कि मजदूर वर्ग के हितों के लिये लड़ने वाली पार्टी सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टी है. जो उनके हितों की रक्षा करती है और उनकी लड़ाइयों को लड़ती है. वह हमारे लिये ज़रूरत है कि हम मजदूरों और दूसरे मेहनतकशों, अवाम में अपना नज़दीक रिश्ता ज़ायम करें, और जहाँ कहीं भी यह रिश्ता टूट गया हो उसे जितना जल्दी हो केव सके फिर से ज़ायम करें और आगे आने वाले हमलों के खिलाफ़ उसका गुस्सा और तेज़ करे. इस तरह जनता सरकार को हराने में सफल होगी और अपनी लड़ाइयों को और आगे बढ़ायेगी. यह ज़रूरी है कि हर मोर्चे पर दमन के खिलाफ़ तेज़ से तेज़ रफ़्तार से और ज्यादा से ज्यादा ताकत के साथ लड़ाई और आन्दोलन चलाने जायें.

सूबा खेत मजदूर युनियन किसान समार और कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ़ से जुड़वा भानिपुर : बलिया : में सूबा खेत मजदूर कान्फ़ेस पर की गई गोली बारी के बारे में एक ध्यान बँट दिया गया है जो नयासवेरा में हुआ है. एक संयुक्त ध्यान और उसकी एक



प्रति इस सचिवालय के साथ भेजी जा रही है।

आप को स्थानीय प्रेस के द्वारा, जनसंगठनों और पीटिंगों में इन्हीं मुद्दों पर प्रस्ताव पास करा कर तथा इन वक्तव्यों को जिले की शक्ति में छपवाकर छंटवा कर इन वक्तव्यों को ज्यादा से ज्यादा विज्ञापित देने की कोशिश करनी चाहिये।

आप को स्थानीयकट्टे इन हमलों से सीखे हुये सचिव, पार्टी की आगामी मुक्ति और दान विरोधी आन्दोलन और लड़ाई, जिसका नेता मजदूर वर्ग है, फ़ौरन चलाये जाने की आवश्यकता पर अपनी ज़रूरतों को रिपोर्ट देनी चाहिये।

ज्यादा से ज्यादा और आक्रामकता के साथ १६ फ़रवरी की तैयारियों फ़ौरन शुरू कर दीजिए ताकि जनता मजदूरी के साथ अपने मुस्से और आगे बढ़ने के इरादे का प्रदर्शन करे, वक्तव्य, पर्चे और पोस्टर ज़रूर निकालने चाहिये। गेट और मुहल्ला पीटिंग और प्रदर्शन होने चाहिये, कानून तोड़ कर और जहाँ जहाँ मुमकिन हो जनता की छी रैलियों की कोशिश करनी चाहिये।

हरजगह इस दान विरोधी आन्दोलन का संघर्ष चटैती, बेरोज़गी कायदा और जिले की खिलाना तथा ज़मीन जोतने वाले को, सस्ती शिक्षा आदि के पक्ष में होने वाली रोज़मर्रा लड़ाइयों से जोड़ा जाना चाहिये। जेल के अन्दर भी लड़ाइयों को जारी जनता के रक्षुमन्त्रों और साथियों, जो इन्विवादी ( रिहाई या मुकदमा, का विभाजन, परिवारिक भत्ता इत्यादि) के लिये लड़ रहे हैं, को लड़ाइयों के रूप में रखकर दिखाना चाहिये कि वे मुश्तक़ी शत्रु पूंजी पतिवर्ग के खिलाफ़ लड़ाई की कामयाबी के साथ चप्पे आगे लेजाने के लिये ज़रूरी हैं।

अन्त में हम "नया सवेरा", "सात दिन", "ग़स रोड", एक प्रान्तीय टी. यू. सी. और तास नयी दिल्ली को फ़ौरन ख़ारे भेजने की एक बार फिर याद दिलाते हैं, इसके साथ हमारे लिये घटनाओं की पूरी रिपोर्ट और पार्टी तथा जन संगठनों द्वारा निकाले गये महत्व पूर्ण पर्चे और पोस्टर इत्यादि भेजे जायें।

लाल बल्लभ

प्रोसेक्ट



تمام ضلع کیڈیوں 'کارکنوں' اور آرگنائزروں کے نام

# تشریح مخالف دن کے بارے میں۔

مخالف تحریک اور عوامی جدوجہد کو اور تیز کروا  
۱۹۰۱ فروری کو تشریح مخالف دن مناؤ!

پیارے ساتھیو!

مزدوروں کی تحریک مزدوروں کی محنت کش کاروں اور عام درمیانی طبقہ والی جنتا کے بڑھتے ہوئے غمخیز۔ جمہوری انقلاب کی الجھری پونش طاقتوں، طالب علموں، لوگوں کا بیشتر لوگوں اور دوسرے لوگوں کی سرکار دشمن جدوجہد اور نئے آئین کے افتتاح کی تقریب کے شروع میں اور اسکے دوران میں ظاہر ہونے والے جنتا کے غمخیز نے یو۔ پی۔ سرکار کو اور زیادہ بوجھ دینے میں ڈال دیا ہے۔

امن کانفرنس، طالب علموں، ریلوے ملازمین اور کھیت مزدوروں کی کانفرنس برہمن والے پونیس کے حملوں، آئین مخالف ہفتہ کے دوران میں ہونے والے حملوں اور گرفتاریوں اور حملوں کے اندر ہونے والے حملوں سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ ہمارے لیڈر جنتا کی بڑھتی ہوئی پھینسی کو اور اس کی طاقت کو کم کرنے کے آئینے ہیں۔ لیڈروں نے حملوں کی طرف دفاعی رخ اپنایا ہے یا دشمن برہمن کیلئے یادہ لڑائیوں سے بھاگے ہیں۔ جبکہ مزدور اور دوسرے محنت کش عوام مستعدی سے ڈٹے رہے اور اس سے پہلے آگے بڑھنے کو تیار تھے۔ اگر لیڈروں نے حملہ آور لڑائیوں کی ہوتی تو ہم نے ضرور ان حملوں کو ٹیل کر اور آگے بڑھ کر دشمن کو دفاعی یعنی بھاؤ کی لڑائی لڑنے پر مجبور کر دیا ہوتا۔ اور کارکنوں کا بھی اتنا نقصان نہ اٹھایا ہوتا۔ ان کانفرنسوں کے بارے میں جانتے سے یہ غلطیاں تفصیل سے معلوم ہوتی ہیں۔

لیکن اس بات پر ضرور دینا چاہیے ہیں کہ ان حملوں کے بعد کام میں سہستہ لانے یا ساتھیوں کے جیل سے چھوٹنے کا انتظار کرنے کے سببیں رہا ہوں تو سولہ ہزدائی یا ہڈاری کے اور کچھ نہیں کہا جاسکتا۔ ایسے خیال رکھنے والے ساتھیوں سے ڈر کر اگر لینا لازمی ہے۔ ایسے خیالات رکھنے والے ساتھی محنت کش جنتا کے بڑھتے ہوئے غمخیز اور عوامی ٹکڑوں کو اور بھی آگے بڑھانے کے بجائے پیچھے ہی ٹھیکہ دینے کے۔ مزدور طبقہ کی ہڈی ہڈی حملہ آور لڑائیوں کو منلوج بنادیں گے اور اس سرمایہ داری سرکار کے مددگار ثابت ہوں گے۔ اس لئے ایسے ساتھیوں سے ہم کو مورچہ لینا ہے۔ تمہیں ہم اپنی لڑائیوں کو اور آگے بڑھا سکتے ہیں۔

مزدور دن اور محنت کش جنتا نے یہ سب عملی طور پر دیکھ لیا ہے۔ اس نے اننگ اور سوشلسٹ لیڈروں اور غمخیزوں جیسے بیٹھ پرست غداروں کو بھی دیکھ لیا ہے۔ اس کو ہی ساتھ اس نے یہ بھی دیکھ لیا ہے کہ مزدور طبقہ کے مفاد کے لئے لڑنے والی پارٹی صرف کمیونسٹ پارٹی ہے جو ان کے مفاد کی حفاظت کرتی ہے اور ان کی لڑائیاں لڑتی ہے۔ یہ ہمارے لئے ضروری ہے کہ ہم مزدوروں اور دوسرے محنت کش عوام سے اپنا نزدیکی رشتہ قائم کریں اور جہاں کہیں بھی یہ رشتہ ٹوٹ گیا ہو اسے جنتا جلد ہو سکے کھیر سے قائم کریں۔ اور آگے آئیو الے حملوں کے خلاف اس کا غمخیز اور تیز کریں۔ اس طرح جنتا سرکار کو ہرانے میں کامیاب ہوگی اور ایسی لڑائیوں کو اور آگے بڑھائیگی۔ یہ ضروری ہے کہ ہر مورچہ پر تشریح مخالف تیز سے تیز رفتار سے اور زیادہ سے زیادہ طاقت کے ساتھ لڑائی اور تحریک چلائی جائے۔



صوبہ کیفیت مزدور یونین آگن سبھا اور لیبرلسٹ پارٹی کی طرف سے لٹرڈ ایمپلائز  
 (بلیا) میں صوبہ کیفیت مزدور کانفرنس پر ہونے والی گولی باری کے بارے میں ایک بیان  
 دیا گیا ہے جو "نیاسویرا" میں چھپا ہے۔ ایک مشترکہ بیان اور چھپیگا۔ اس کی ایک کاپی  
 اس سرٹیکل کے ساتھ بھیجا جا رہی ہے۔

آپ کو مقامی ایس کے ذریعے عوامی انجمنوں اور میڈیکل گروپس میں انہیں بنیادوں پر  
 تجویز یا اس کر آکر اور ان بیانات کو پینڈ بل کی شکل میں چھپوا اور پھیلوا کر ان  
 بیانات کو زیادہ سے زیادہ شہرت دینے کی کوشش کرنی چاہئے۔  
 آپ کو ان جھوٹوں میں سیدھے ہونے سببوں، پارٹی کی ہر اولیت اور لٹرڈ مخالف  
 تحریک اور لٹرڈ (جس کا ہنہا مزدور طبقہ ہے) فوراً ایلڈے جانے کی ضرورت پر اپنی  
 قطاروں (Ranks) کو پروٹ دینی چاہئے۔

زیادہ سے زیادہ طاقت اور باقاعدہ حساب (Precision) کے ساتھ ۱۹ فروری کی  
 تیاریاں فوراً شروع کر دیکئے تاکہ جتنا ضروری کے ساتھ اپنے غلطیے اور آگے بڑھنے کے  
 ارادے کا مظاہرہ کرے۔ بیانات پر بے اور یوسٹر ضرور لکھنے چاہئیں۔ گیت اور عمل  
 میڈیکل اور مظاہرے ہونے چاہئیں۔ قارئین کو لٹرڈ اور جہاں کہیں ممکن ہو جتنا بڑھا  
 رہیلیوں کی کوشش کرنی چاہئے۔

برہنگہ اس لٹرڈ مخالف تحریک کا تعلق کموٹی، بیروزگاری، کام بازو اور  
 مل بندی کے خلاف نیز زمین ہوتے والے کو اس سستی تعلیم وغیرہ کی حمایت میں ہونا  
 ۱۹ روز مہرہ کی لٹرڈوں سے جوڑا ہانا چاہئے۔ جیل کے اندر لٹرڈوں کی باری  
 جتنا کہ رہنماؤں اور ساتھیوں، اہو بنیادی ساتھیوں (زبانوں یا مقدمہ درجہ بندی، خاندانی  
 بھگتہ اور دیرہ) کے لئے لٹرڈوں کی شکل میں رکھ کر دکھانا چاہئے کہ وہ  
 مشترکہ دشمن سرمایہ دار طبقہ کے خلاف لٹرڈوں کو کامیابی کے ساتھ آگے لے جانے کے  
 لئے ضروری ہے۔

آخر میں، ہم پھر "نیاسویرا" "سات دن" "کراس ووڈس" صوبہ لٹرڈ  
 یونین کا، ریس اور طاس۔ نئی دہلی کو فوراً خبریں بھیجنے کی ایک بار پھر یاد دلانے  
 ہیں۔ اس کے ساتھ ہمارے لئے واقعات کی پوزی، رپورٹیں اور پارٹی اور عوامی انجمنوں  
 کے ذریعہ لگائے گئے خاص خاص پر بے اور یوسٹر بھیجے جائیں۔

لال سلام  
 پروڈسٹ





# स्वतन्त्र प्रजातन्त्र विमर्श

सार्थियो

तीन साल की मेहनत के बाद भारतीय विधान परिषद ने एक विधान तैयार किया है, और अगली २६ जनवरी को इसी विधान को कानूनी जमा पहना कर एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र का एलान किया जायगा.

अगस्त सन १९४७ में भी 'आजादी' का एलान किया गया था, उस 'आजादी' का असली मतलब क्या था, इसकी परख उस दो साल से ज्यादा अर्से में जनता ने अच्छी तरह कर ली है. पिछले तजुर्तों के आधारे पर यही भी अच्छी तरह समझा जा सकता है कि आजादी के बाद अब उस स्वतन्त्र प्रजातन्त्र के क्या मानी होंगे और जौन सी नहीं जौनगत देश और जनता को इस से मिलेगी. इस आजादी और स्वतन्त्र प्रजातन्त्र की असलियत है छोखे बाज़ी और जनता के पीठ पीछे और उसकी पीठ में कुआ भोंक कर कांग्रेसी नेताओं ने अगस्त ४७ साम्राज्यवाद के साथ जो गठजोड़ वादी समझौता किया था और आज भी उसी समझौता के मुताबिक अंगरेज, अमरीकी धन्ना मेठों के सामने जो घुटना टेक नीति बर्त रहे है देश का आर्थिक मविष्य जिस तरह उनके हाथों में च रहे है, देश की जनता, बरफ़कवक भावियत रुस और दूसरे जनवादी देशों के खिलाफ़ लड़ाई : जग : की भाजिशों और तैयारियों में जिस प्रकार साम्राज्य वादीयों का खुले आम साथ दे रहे, उन्ही सब अपने बाले कारनामों को छिपाने और उन पर पदों डालने के लिये २६ जनवरी को स्वतन्त्र प्रजातन्त्र, व आजादी का फूठा तमाशा खड़ा किया जायगा. लेकिन उस तरह के तमाशों और फूठे दावों से यह असलियत तो नहीं छिप सकेगी कि कांग्रेसी हुकमत करने वालों ने अंगरेज अमरीकी साम्राज्य वादियों के हाथों देश की आजादी को चंचु का उसे उनका दुम कल्ला बना दिया है.

स्वतन्त्र प्रजातन्त्र के बाद भी कांग्रेसी शासकों ने ब्रिटिश कप्तान वेल्थ यानी अंगरेजी राष्ट्र गुट में ही रहने का फैसला कर लिया है और यह भी तै कर लिया है कि वे अंगरेज बादशाह को ही अपना प्रधान : कप्तानवेल्थ का समनता : मानते रहेंगे. यह इस लिये कि भारतीय कांग्रेसी हुकमत करने वालों ने दक्षिण पूर्वी एशिया में होने वाले जनता के आजादी के आन्दोलन को कुचलने में एक साम्राज्य वादियों के पहलुये जुते का काम अपने ऊपर लिया है. साथ ही यह भी मान लिया है कि शान्ति और जनवाद के अद्भुत भावियत रुस के खिलाफ़ तीसरे महा युद्ध में हिन्दुस्तान की जौन की साम्राज्य वादियों की लड़ाई का अड़डा बनाया जायगा. लड़ाई की यह तैयारी यह लोग देश की रक्षा और कर्ष पाकिस्तान व कम्पूनिज्म का का हौआ दिखाने कर रहे है.

नेहरू ने राष्ट्रीयकरण न करने देशी व विदेशी पूंजी में भेद न रखने मज़दूर आन्दोलन को दबा कर मुनाफ़े की खुली कुट देने की गारंटी देकर विदेशी पूंजी को जो न्योता दिया है उसका भी यही मतलब है.

इस प्रकार सरकार यह विधान

- कांग्रेसी नेताओं की ग़दारी पर कानूनी क़ायम लगाता है.
- अंगरेज अमरीकी जगरी दावों के सामने उन की घुटना टेक नीति जिस के कारण देश उनका उपनिवेश बन गया है को मज़री देना है.
- देश के अगाड़ों मेहनत क़शों की पूंजी पतिधों, ज़मींदारों और प्रतिप्रिया वादियों द्वारा नंगी लूट को कानूनी जमा पहनाता है.



- मजूदरों मध्यमवर्गी नौकरी पेशा लोगों के लिये बेकारी भूख और तबाही, और उनके बच्चों को शिक्षा की सुविधाओं से इनकार की सरकारी नीति को विधान कह कर हमारे ऊपर लादता है,
- ज़मींदारों व सामंतों को मुअवज़ा दे कर सदियों पुराने सामंत वादी शोषकों व लूट की क़ायम रखता है,
- जनता पर होने वाले फ़ॉर्मिस्ट इनन, जिना वॉरंट गिरफ्तारीयों, जिना मुकदमा जेल, फ़ॉर्मिस्ट कन्वेन्शन कैम्प, जलों पर खुली गोली-बारी, आज़ादी के सिपाहियों को फांसी आदि, को इस विधान ने राज्य के नियंत्रण बना कर क़ानूनी करार दे दिया गया है,

अधोद्वे शब्दों में अगस्त 89 को जिस महान राष्ट्रीय ग़दारी को आज़ादी का नाम दिया गया था जनवरी 26 को उसी ग़दारी को क़ानूनियत का ज़ामा पहिना कर स्वतन्त्र प्रजातन्त्र की शक्ति दी जायगी।

इस विधान के मुताबिक जो राज्य उसे गा वह स्वार्थी वर्गों के राज्य होगा, वह पूरी तरह जनवाद विरोधी हो गा,

इस विधान में जीतने वालों के ज़मीन पाने पर और उद्योग धन्धों के राष्ट्रीय करण पर रोक लगा दी गई है, इस में दली खुली जनता के आन्दोलन और कारवाइ करने अपनी यूनियन बनाने हड़ताल करके स्वार्थी वर्गों के हमले तथा हिंसा के खिलाफ हथियार उठाने और भाषण, समा, तथा खुलकर अपने विचारों को ज़ाहिर करने का अधिकार देने से इनकार कर दिया गया है। इस लिये :-

सच्ची आज़ादी और जनता के जनतन्त्र के लिये ज़रूरी है कि इस विधान को फाड़ कर रदी की टोकरी में डाल दिया जाय और उसके अनुसार बनने वाले राज्य को धूल में मिला दिया जाय,

इस सिव शासक वर्ग ने जनता के पढ़ते हुये अमंतीष और उसकी जंगल लड़ाइयों को देखकर देखा है, और उन सब से उसके दिल में कपकपी बना गई है, इसी लिये वे इस स्वतन्त्र प्रजातन्त्र के क़ाद कोसला खड़ा करने में जल्दी कर रहे हैं, कि इस से जनता को धोखे में डाला जा सके।

हैं शासक वर्ग की इस चाल का पर्दा फ़ाश कर असली आज़ादी व सच्चे जनवाद के लिये लड़ाइयों को और भी तेज़ जाना है,

बक़्के आने वाली 26 जनवरी को सभी आने बक़्क वाली महान जाल साज़ी से जनता को आगाह करने, उस के खिलाफ़ आवाज़ उठाने, जन संघर्षों को ले जा कर इस गुलामी के दस्तावेज़ : विधान : की धजियां उड़ाने और उसके आधार पर बनने वाले पूंजी वादी राज को उखाड़ फेंकने का क़ान्तिकारी जंगल सकल्प करने के लिये पार्टी के एक सप्ताह मनाने का निश्चय किया है जिसका कार्य क्रम अलग से दिया जा रहा है,

साथियों को चाहिये कि क़फ़ी तैयारी के साथ इस सप्ताह के क़क़ठ को मनायें, समाजों में बोलने वाले साथियों को पहले से अपने विषय को तैयार करना चाहिये,

याद रखिये कि सिर्फ़ ग़दार करने पर से किसी का मंडा फोड़ नहीं होता होना यह चाहिये कि आप अपनी बात इस तरह हवाले देते हुये रक्के कि सुनने वाले के मुंह से अपने आप निकल पड़े 'ग़दार', पक्की एसा आइये कि पढ़ने वाला पढ़ते ही कह उठे 'देश दोही' हेह

सरकुलर के साथ में व्याख्यान दाताओं के लिये विधान के बारे में कुछ खास 2 बातें दी जा रही हैं जिसका इस्तेमाल आप अपने लेखकों में कर सकते हैं, साथ ही और जानकारी के लिये नीचे लिखे हवालों से पूरा फ़ायदा उठाइये,

मार्क्स वादी लेख संग्रह में :- भारतीय विधान का असली स्वरूप



जो साथी हिन्दी नहीं जानते वे अंग्रेजी के माकिनिस्ट पत्रिका में भी लेख पढ़ सकते हैं,  
मशाल न० ३ : २५ दिसम्बर ४६ : मे ६ अफ्रे पर विधान पर लेख.

१६ दिसम्बर ४६ का आम रोड

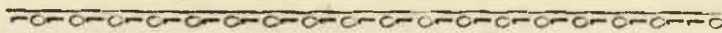
२४ दिसम्बर का मसौदा से निकले वाला स्टूडन्ट : दक्षिण आश्रित मकान :  
२५ दिसम्बर का सात दिन

यहाँ पर एक आगाही कर देना भी जरूरी है कि देखने में आता है कि अक्सर व्याख्यान देते  
समय साथी भूल जाते हैं कि वे हमारी तरह १० जी० नहीं हैं वे दो २ शब्दों का इस्तेमाल करने  
लगतें हैं जो उन्हें ख़ाम ख़वा क़ानूनी शिफ़ाई का शिकार बना देते हैं भिखार के तौर पर व्याख्यान  
में यह जरूरी नहीं है कि आपने नेहरू सरकार की हथियारों के जरिये उखाड़ फेंकना है, कहें,  
उसकी जगह आप कह सकते हैं " पूंजीवादियों की इस नेहरू पटेल सरकार को बदल कर ही जनता  
सच्ची आज़ादी पा सकती है. अगर आप के शब्दों में दलील है, मसाला है तो आप शब्द  
कोई भी इस्तेमाल करें उसका एक ही परिणाम होगा, कि उस सरकार को जाना चाहिए,  
आज से ही सप्ताह बनाने की तैयारी में लग जायें.

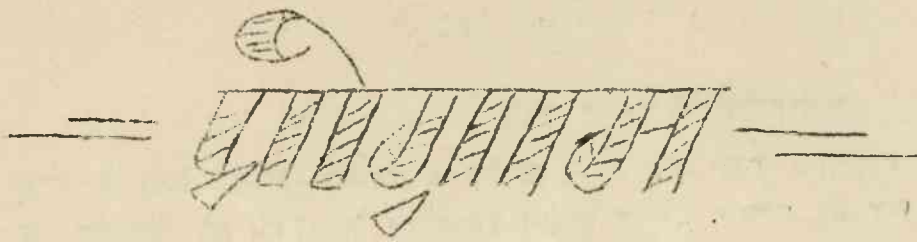
साथियों, जनता हमारे साथ है. और सही तरीके से काम करें हम जरूर इस विधान  
और उस पर साख़्ख़ा साख़्ख़ा आधारित, स्वतन्त्र पुनः तन्त्र की धज्जियां उड़ा कर सचा क़ानून  
जुद्ध कराने राज़ करायें कर सकेंगे.

लाल मलाम

प्रासैक्ट







20 जनवरी : -- जन संघर्ष समर्थन और पतन विरोधी दिवस

— कैलिंग, बंगाल, मलाबार, तलिया, शाण्णिका फ्रीरोजाबाद, कानपुर की बहादुर जनता के संघर्ष का समर्थन, पुस्तक, उनके मार्ग पर चलने का संकल्प, जेलों के उन्द साधियों की शानदार लड़ाइयों का समर्थन, पुस्तक, संकल्प कि हम अपने पास इन साधियों को बाहर निकाल कर ही दम लेंगे, उनकी मार्गों और रिहाई पर पुस्तक.

— सुविधा कानून, दमन, गोलीकांड आदि को निन्दा पर पुस्तक, उसके उन्द करने का संकल्प, गाली से मारे जाने वाले या जेलों में मारे गये साधियों के प्रति प्रदीपजलि.

— जिस विधान में इस फ्रांसिस्टी दमन को कानूनी बनाया गया है उसका नागरिक आज़ादी विरोधी विधान के रूप में विरोध और उसे समाप्त करने का संकल्प.

— आज हम नागरिक आज़ादी ही की, दमन उन्द करने की, हमारे नेताओं व साधियों को छोड़ने की भीत नहीं मंगते, जनता यह काम अपनी ताकत से पूरा करेगी. फ्रांसिस्टों को कुचल कर ही यह काम हो सकेगा. यह कार्य देश के कोने २ में शुरू हो गया है.

— समर्थ, जुलूस, जेलों के सामने प्रदर्शन.

21 जनवरी : -- लेनिन दिवस

— लेनिन भी एक विधान और उस पर आधारित एक राज के निर्माता थे.

— सोवियत विधान और इस भारतीय विधान की तुलना, स्टालिन विधान की खास बातें बताये, एक आज़ादी व जनवाद का विधान दूसरा गुलामी दमन व शाण्णिक विधान,

— आज़ादी व जनवाद तक पहुंचने के लिये लेनिन का बताया हुआ रास्ता.

— हम लेनिन के बताये मार्ग पर चल कर सोवियत जैसा जनवादी विधान बनायेंगे, आम सभा

22 जनवरी : मज़दूर मंग दिवस

— विधान में मज़दूरों के सभी बुनियादी अधिकारों जैसे पूनियन आना, समर्थ करना, हड़ताल करना, पेन्शन व मिलाई की गारंटी आदि, से इन्कार किया गया है.

— ऐसे विधान को समाप्त करने का निश्चय.

— मज़दूरों और सरकारी कर्मचारियों को बुनियादी मंगों के लिये लड़ाई का आगे बढ़ाने व तेज़ करने का निश्चय, देश व्यापी आम हड़ताल का निश्चय दोहराया जाये.

— मज़दूर वस्तियों में समर्थ व प्रदर्शन,

— ए.आ.टी.यू.की के बुनियादी मंगों के पुस्तक पास कराया जाय और बड़ी तादा में मज़दूर समर्थों को मेम्बर बनाये जाये.



२३ जनवरी : अन्तर्राष्ट्रीय एकता दिवस

- भारतीय पंजापतियों ने अंगरेज अमरीकी धन्ना लेठों के हाथ देश को आज़ादी का जो संदेश दिया है इस विधान के ज़रिये उसे कानूनी बनाया गया है, नेहरु पटेल का यह तथा कश्चित 'स्वतन्त्र' 'पुजातन्त्र' एशिया में प्रतिष्ठित वाद का पहलू आने का, साम्राज्यवादियों ने दक्षिण पूर्वी एशिया के आज़ादी के आन्दोलन को दबाने का भार नेहरु पटेल को सौंपा है,

- साथ ही हिन्दुस्तान की ज़मीन पर भाविपत विरोधी तीसरे युद्ध के लिये अंगरेज अमरीकी जंगी ब्रह्मे बनाये जाये नै,

- विश्व शान्ति को तोड़ कर दूसरे देशों को गुलाम बनाने का यह काम आज़ादी की रक्षा के नाम पर किया जाय ग,.

- देश को जनता साम्राज्यवादियों और उनके भारतीय पिढुओं का आज़ादी पसन्द देशों के खिलाफ़ युद्ध केडने का डट कर विरोध करेगी

- विश्व शान्ति की लड़ाई में भाविपत देश, लाल चीन की रक्षा में, दक्षिण पूर्वी एशिया के आज़ादी के आन्दोलन की सहायता में अन्तर्राष्ट्रीय एकता का एलान .

- दूसरे देशों के आज़ादी आन्दोलन की मदद अपने देश के प्रतिष्ठित वादियों के खिलाफ़ लड़ाई तेज़ करके ही हो सकती है,

२४ जनवरी : फूठार पुजातन्त्र वादी विधान विरोधी दिवस

- प्रचार के पुाहन्तस , सरकुलर में दे दिये गये है,

- स्मरहडनाल , जलूम , प्रदर्शन , हर मोर्चे के खुले माथियों को उस दिन सड़क पर होना चाहिये,

- शिक्षणालय विद्यार्थीमण विवस

२५ जनवरी : खेत मज़दूर , किसान मण दिवस

- गांवों में खेत मज़दूरों किसानों की सभाये .

- विधान के ज़मींदारी मिटाने के नाम पर घोषणा जारी है,

- खेत मज़दूरों व गरीब किसान को न धर्ती मिलेगी न गुज़ारे लायक मज़दूरी

- गुज़ारे लायक मज़दूरी और ज़मीन के लिये सस्ते ग़ल्ले व कपड़े की दुकानों के लिये , महंगाई मत्ता के लिये और काम के लिये और काम के घटे कम करनेके लिये ज़मींदारी तिला पुआवज़र मिटाने दस मुनवा ज़त्म कराने और किसान मज़दूर राज्य बनाने के लिये गांव २ में इस सरकार के खिलाफ़ लड़ाई तेज़ करने कास्लान,

- ज़्यादा तादाद में खेत मज़दूर सभा को बनानी,

२६ जनवरी : फ़ार्मिस्त विधान विरोधी दिवस,

- प्रान्त भर में मज़दूरों विद्यार्थियों , किसानों मध्य श्रेणी के शोषितों , प्रगति शील बुद्धि जीवियों की मिली जुली विराट सभाये और प्रदर्शन,

- विधान के प्रतिष्ठित वादी स्वतप का मंडा फोड रु

- उसके खिलाफ़ सभेक मोर्चे और लड़ाई का एलान

- राजीतिक पुस्तावे

- विधान का जनज़ा घुमाया जाय और उसे जताया जाय,

नोट. इस काई कम की सफलता आप के संगठन और तैयारी पर निर्भर की गी, इस के लिये पत्रों , पोस्टरों , दीवार अक्षरों के ज़रिये , कस्तियों , गांवों , मुहल्लों में ठक सभाओं व नक़द सभाओं के ज़रिये, मिल कारज़ानों व मोहल्लों अमेटियों के ज़रिये, गाने वालों के जत्थों के ज़रिये, डट कर प्रचार कीजिये, हर सभे का काम पहले से तैयार कीजिये.



# कॉन्सिस्ट - विधान का असली स्वरूप

सभाओं में बोलने वाले साथियों के लिये.

भारत पर हुकूमत करने के लिये कांग्रेसी नेताओं के एक विधान गढ़ कर तैयार किया है. देश की ८७ फ्रीसदी जनता का उसके बनाने में कोई हाथ नहीं है. सिर्फ १३ फ्रीसदी ऊंचे वर्ग के प्रतिनिधियों ने उन्ही के हितों की रक्षा के लिये यह विधान बनाया है.

विधान परिषद का निर्माण जनवादी तरीकों से नहीं किया गया था.

इस लिये कि जनता को अपने देश का विधान बनाने के अधिकार से वंचित रखा जा सके.

## विधान का उद्देश्य :

कांज्य की नीति को चलाने वाले सिद्धान्तों को व्योरे वार अतन्ते हुये धारा ३९ में कहा गया है :

इस भाग के नियमों को किसी भी अदालत के ज़रिये लागू नहीं कराया जा सकेगा. प्रांती राज्य विधान के सिद्धान्तों को पूरा करने के लिये बाध्य नहीं है और जनता को भी यह अधिकार नहीं होगा कि वह राज्य से ये नियम लागू करने की मांग उठाये.

ये कौन से नियम या मांगे हैं जिनकी पूर्ण ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर लेने से भारतीय राज्य अपने बुनियादी विधान तक में इनकार करता है उन अधिकारों को धारा ३६ में पूरे विस्तार से गिनया गया है, जिसमें के लिये, जिन्दा रहने के लिये रोजी और जाने लायक तनखा पाने का नागरिकों का अधिकार, काम करने, बेकारी को हालत में सहायता पाने और बुढ़ापे में पेंशन पाने का अधिकार, मुफ्त में प्राथमरी शिक्षा पाने और जनता के रहन सहन ~~सुरक्षा~~ तथा खान पान के स्तर को ऊंचा उठाने और अच्छा बनाने के अधिकार आदि.

यही वे अधिकार या नियम हैं जिनका मतलब साधारण जनता की आज़ादी है, सोविपत रुम और पूर्ण प्रोगेप के जनवादी देशों के विधान में इन को जनता का बुनियादी अधिकार माना गया है और वहाँ जनता के इन अधिकारों को पूरा करना राज्य के लिये लाज़िमी घोषित किया गया है, पर भारत के विधान में इन अधिकारों को विस्तार के साथ गिनया भी गया है तो सिर्फ़ इसी लिये कि राज्य कानूनी तौर से इन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने से बरी रहे.

उन्ही धाराओं ३६ में धन और पैदावार के साधनों के ऐसे केन्द्रीकरण को सुरक्षा देने की ज़रूरी ज़िम्मेदारियों से भी इनकार कर दिया गया है जो 'सर्व साधारण के लिये नुस्खान देह हों'.

विधान की यह धारायें भारत को इजारेदार पूंजी पतियों के शोषणकेकुल में बेरोक छोड़ देती हैं. वे देशीय से यह एलान कराती हैं कि आम जनता के हितों के खिलाफ़ देश के धन और प्राकृतिक साधनों के मुठ्ठी पर इजारेदारों के हाथों में जमते आने पर कोई कानूनी रोक नहीं है.

इस तरह यह बात आइने की तरह साफ़ हो जाती है कि विधान का उद्देश्य जनता को रोजी खुश हाली, स्वास्थ्य, शिक्षा या आराम देना नहीं है, और न विधान का उद्देश्य यह है कि वह संख्याक जनता को भूखी मार कर मुठ्ठी पर लोगों के हाथों में धन का जमा होना रोक जाय.

## लूट और शोषण की खुली कूट

— धारा २४ : २ : में बताया गया है कि बिना मुआवज़े के 'किसी व्यापारिक या औद्योगिक धन्धे ..... के हितों समेत किसी कल अथवा अकल सम्पत्ति को



जनता के फ्रायदे के लिये कब्जे में न लिया जायगा, यन्तों पूंजी पतियों, ज़मींदारों, ब्राह्मणों आदि के कुक्कड़ मुनाफ़ा टोमने, लगान वसूल करने के अधिकारों को कानून के ज़ारिये रद्द करी जायगी.

— धारा ६२ ठरह : ३: और ६३ में बताया गया है कि भारत सरकार को जो भी कर्ज़ व्याज आदि चुकाना है वह राज्य की आमदनी से ज़रूर २ दिया जायगा और पार्लियामेन्ट, तब जो उसके बारे में वोट देने का अधिकार न होगा.

यानी भारत को गुलाम बनाने रखने और दमन राज चलाने के लिये अंगरेज़ों ने जो कर्ज़ लिये थे उनका फ़ातान बरक करना भारत की जनता के क़ठ लाज़िमी है.

इसी ताह तेलवे में अंगरेज़ धन्ना सेठों द्वारा लगाये गये कर्ज़ का मूद १५ करोड़ रुपया सालाना भारत की आमदनी से कुक्कड़ चुकाना जायगा.

— पूंजी वादी उद्योग को मज़बूत बनाने तथा पूंजी पतियों को गारंटी के लिये गये मुनाफ़ों को चुकाने के लिये सरकार पर जितना कर्ज़ होगा और ज़मींदारों तथा राजवाड़ों को मुअवज़े के नाम पर सरकार जो ढौंड देगी उन सभी का जोफ़ भारत की मूखी जनता को हमेशा के लिये ढोना पड़ेगा. विधान कहता है कि आज़ाद भारत में देशी और विदेशी पूंजी पतियाँ, ढौंड प्राने वाली ज़मींदारों और दूसरे सभी निठले शाबक वर्गों को शोषण करने की स्थायी आज़ादी रहेगी.

— भारत के स्वतन्त्र प्रजातन्त्र बनने के बाद भी अंगरेज़ी राष्ट्र गुट का सदस्य रहेगा और इस तरह साम्राज्यवाद का रशियाई पहलू का काम करेगा.

— रिपब्लिकी जनता पर देशी नरेश पहले ही की तरह क़ाये रहे गे.

— धारा २८५ में पूराने अंगरेज़ मक़ टोडी अफ़सरी को बरकरार रखने का आश्वासन है

— विधान का उद्देश्य यह भी है कि ज़िा की ज़ावत में सम्मती राजवाड़ों को बचाया जाय और विधान ज़ान्त के तहत तब से ज़मींदारों को सम्पत्ति को रद्द करी जाय. जवादी राज्य नहीं पुलिस राज.

जनता को छोखे में रखने की सभी मोशिशों के तावजूद ऐस प्रतिक्रिया वादी राज्य लाज़िमी तौर से जनता में गुस्सा पैदा करेगा. इस लिये उन्हों ने अन्त में जनतन्त्र के सभी नरेशों को उतार फेंका और विधान की दूसरी धाराओं को उस तरह बनाया है जैसा कि जैसे पुलिस राज्य और तेलगाम ताना शाही में हाता है.

— जनता के मुनिमदा अधिकारों में पिकेटिंग करने का अधिकार नहीं माना गया है. धारा १७ : २ :

— जनता के हथियार रखने के अधिकार को नहीं माना गया है.

— अख़बार निकालने माषण करने और विचारों को ज़ाहिर करने की आज़ादों देने का अधिकार दिया गया है.

— ब्रिटिश शासन के सभी दमन कानूनों को जैसे दफ़ा १२४ : राजदोह : क़ो फ़ैस स्कट, कर्षि धुआ, फेलाने के कानून अमर स्वाकार कर लिये गये है

— जमा होने, जमा और प्रदर्शन के अधिकार बरके बनाने से इनकार किया गया है.

— दफ़ा १४४ अफ़ूरी आदि बरक चालू रहे गे. : धारा १३ : ३: :

— पूनिर्मा और क़ाठन बनाने के अधिकार में भी इनकार किया गया है.

— बिना मुअदमा चलाने ज़िमी को जेल में बन्द नहीं रखा जा सकता इस सबसे महत्व फ़ी और मुनिमदी नगरिक अधिकार को भी कीन लिया गया है. : धारा १५ :

— प्रजातन्त्र का प्रेसिडेन्ट व्हिलर होगा और गवर्नर काटे व्हिलर हंगे. और सारा शासन क़ेगए एलाज़ों के ज़ारिये.



- प्रेसीडेन्ट का चुनाव जनता नहीं होगी.

- वह किसी प्रान्त या प्रान्तों के अधिकारों को केन्द्र के हाथ में ले सकता है : धारा 269 :

किसी प्रान्त के सम्बन्धी के अधिकार को खत्म कर सकता है. : धारा 299 :

- नगरियों के हाकिमों के हेतुओं के अर्थों को खत्म करने के अधिकार अन्तर्गत नगरियों के मामूली अधिकार तक सीमित रहता है : धारा 296 और 297 :

- किसी प्रान्त या प्रान्तों में वह विधान तब भी अमल में लाने से रोक सकता है. : धारा 298 :

- केन्द्रिय पार्लियामेंट के फैसले के ज़रिये उसके किसी या सभी अधिकारों को मजबूत या कम करके भी या उसके अधिकारों को खत्म कर सकता है. यानी बहुमत पार्टी अधिष्ठाता परिस्थिति के नाम पर वैधानिक कानूनों को भी खत्म कर सकती है. : धारा 296 की :

अगर प्रेसीडेन्ट संतुष्ट हो जाय कि खतरा सामने है तो वह एक ऐलान निकाल कर तानाशाह बन सकता है.

इस विधान के अन्तर्गत या जो राज्य अगर वह स्वार्थी गति का राज्य होगा वह पूरी तरह जनवाद-विरोधी होगा.

इस लिये ज़रूरी है कि यह विधान फाड़ कर रदी की टोकरी में डाल दिया जाय, और उसके अधिकार पर लाने वाला राज्य धूल में मिला दिया जाय.

जनता ने इस काम की शुरुआत कर दी है.

: राज के संघर्षों, टकरावों का हवाला देकर समझाये. :

उसके स्थान पर हमें जनता की सत्ता स्थापित कर एक जनवादी राज्य बनाना है.



# آئین کے خلاف مظاہرہ

پیارے ساتھی! ہم اب کے آئین کے بارے میں سرکاری کنٹریکشن کا اعلان نامہ تجسیر ہے۔ اس اعلان نامہ کی تائید یا جسی ہوگی یا بیاں وراہیں ضلع کے پتلاؤں اور عام نمبروں کو مل جانی جائیں تاکہ وہ برائے طریقہ سے آئین و روڈ ہی تحریک کو جلا سکیں۔

آئین اعلان نامہ میں ہمارے کارکنوں اور عام نمبروں کے لئے تقریر کی لائن دی گئی ہے جس کی مدد سے وہ پراثر طریقہ سے آئین کا پردہ فاش کر سکیں۔ اس لئے یہ ضروری ہے کہ انکو اسکی گایاں فوراً ملیں یہاں تک کہ اسکے چھوٹے پتے ہی انکو مل جائیں۔

آئین کے خلاف ہرجاڑا اسکا اور اسکے بنائے والوں کا پردہ فاش اور پھونڈا پھوڑا بہت ضروری اور اہم ہے۔ تحریک ہے اور اسکی بہت پراثر طریقہ سے تنظیم ہونی چاہیے۔ غیر قانونیت کے اندر سے یارٹی کانگریس کے لئے یہ حقیقتاً بہلا موقع ہے جب سرکاری کمیٹی سبھی کانگریس کو اتنے بڑے سیاسی مسئلہ پر ایک ہی دن میدان میں اترنے کے لئے آواز دے رہی ہے۔ آئینی بہادرانہ نکتوں کی رہنمائی اور اسکا رد کی تردید کرنا اس بات کی نیر کو ہے کہ ہم میں اپنی جنتا کو جلد سے اور جمع کر کے کتنی صلاحیت ہے۔ یہ اسکی بھی تاب ہے کہ ہمارا کل بندھنا کی حیثیت سے کتنا زور ہے۔ اس کا مقصد ہے کہ ہماری سرگرمی اور سچو سچو اپنی جنتا کی سرگرمی اور سچو کو ایک دھاگہ میں باندھا جائے۔

غیر قانونی حالات، اخباروں میں خبروں کا نہ دینا، یارٹی کے اخباروں کا بند ہونا ان سب باتوں کے کارن ہندوستان کے تمام حصوں میں ہونے والے بڑے بڑے واقعات کی خبریں چھپ جاتی ہیں جو کہ سب سے یارٹی لیڈروں، عام نمبروں اور کبھی کبھی جنتا کے کچھ حصوں کے اندر رہا یونٹی اکٹراؤں اور بے بس کا جذبہ پیدا ہو جاتا ہے اور وہ ہر دوسرے کار کو بند دینے کی اپنی زبردست طاقت کو کو حکم آگئے لگتے ہیں۔

آئین کے خلاف یہ ایک ہی وقت میں ایک ہی دھاگہ میں بندھا ہوا مظاہرہ ہمارا جنتا اور یارٹی کی اصلی طاقت ہر ایک کو دکھلا دے گا۔ اسی لئے تو یہ ضروری ہے کہ انتہائی زور سوز کے ساتھ اس مظاہرے کی تیاری کی جائے۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ ہم اس دن کی تیاری کی دقتوں کے ساتھ شروع کریں گے۔ سبب یہ ہے کہ ہم آئین پر لگاتار حملے نہیں کر پائے ہیں اور ابھی تک اسکے خلاف جنتا کے عقہ اور نظریات کو نہیں ابھارا ہے۔ پھر بھی لوگوں میں ہر دوسرے کار کے خلاف دل سے ہی کافی عقہ بھرا ہوا ہے اور آئین کے پھونڈا پھوڑا کا مقصد بڑی آسانی سے حاصل کیا جا سکتا ہے۔

۲۶ جنوری کو اس میں لگا رہنے میں ہمارا فوری مقصد کیا ہے؟ ہمارا مقصد ہے عوام کے شرے سے جھٹک کر آئین دشمن سرگرمیوں میں گھسنا۔ اور جنتوں کو بھی ہونے کے سچیت ڈھنگ سے اس احتجاج میں شریک کرانا۔ کانگریس کے پورے روٹی پیتا فوجی طاقت اور سرکاری دعووں دھڑک کا مظاہرہ کر کے۔ اپنے عاروں اور جنتوں کو پھولے لگا کر کے (عوام کے طبقہ میں سیکڑوں میں)۔ اپنے پیچھے چلنے والوں کی نظر باندھ دینا چاہئے ہیں اور جنتا کو دم بخود کر دیا جاتے ہیں۔ اس طرح وہ دکھلا دیا جاتے ہیں کہ انہیں عوام کی حمایت حاصل ہے۔ وہ اپنے شک یوٹیما بندوں کو اس عوامی حمایت کا تماشہ کھڑا کر کے مغالطہ میں ڈال دینا چاہئے ہیں اور جنتا کے دماغ میں پچھلی آٹھ اور شک پیدا کر کے ہیں۔

اپنے برائے مظاہرے کا ٹکریسی پیتا جس عوامی حمایت کا ڈھول بیدتے ہیں اسکا طبعان کردار کے لغات کر کے آئین کی طبعانی ماہیت کا پردہ فاش کر کے اور اصلی جنتا۔ دے لے عوام۔ کو آئین کے خلاف سرگرمی میں گھس کر پھولے لگا کر آئین کو دھالنے والوں کے تمام دعووں کا پردہ تار تار کر ڈالو کہ یہ جمہوری آئین ہے اور اسے عوام کے نمائندے بنا رہے ہیں۔

آئین کا پھونڈا پھوڑا اور لگا لگا جھگڑا قانون سازوں کا پردہ فاش کرنے کا کام جنتا کو پورے وا کے اتر سے لگانے اور ہر دوسرے کار کے خلاف لڑائی میں اپنے عوام کو اکٹرا کر قیادت کے فریقوں کی قیادت کے لئے کام کا ایک بہت اہم جزو ہے۔











اپنی اس پوری طاقت کو حرکت میں لانے میں کامیاب ہونا چاہئے جو ہم نے ان گذشتہ لڑائیوں کے ذریعے حاصل کی ہے۔

تمام صوبہ مکیشیوں کو یہ بھی ہدایت دی جاتی ہے کہ ۲۶ جنوری کو دو تین ہفتہ کے اندر ہی سنٹر کو اس تحریک کی پوری رپورٹ بھیجینی چاہئے۔ رپورٹ کا مطلب ریویو سے نہیں ہے جو لہجہ کو اسکتیک۔ رپورٹ میں واقعاتی اطلاع ہونی چاہئے جسے تحریک کے دوران میں مختلف جگہوں پر میٹنگوں کی تعداد، حاضرین کی جمعیت، مظاہرہ کی شکل وغیرہ۔ اس کے ساتھ خاص خاص پیرھے ہوں اور یہ اطلاع کرن کوں سے ہونے والی حرکت میں آئے۔ سنٹر بہت سستی سے جبک (جارج) کرنا چاہتا ہے کہ اسکی ہدایتیں تک بحال نہیں لائی گئیں اور معلوم کرنا چاہتا ہے کہ جنتا کو بلانے کی ہماری طاقت کتنی ہے۔

صوبہ مکیشیوں کو یہ بھی نوٹ کرنا چاہئے کہ سنٹر کے پیرھے کی ہونے والی ہیموں اور صوبہ کی طرف کی ہونے والی ہیموں کو ہدایتی ہیموں کی واقعاتی رپورٹ بھیجینی چاہئے۔ اسکی ہدایتیں وہ ہمیت کے لئے ہے۔ اس طرح کی تمام تحریکوں کی رپورٹ فوراً بھیجینی چاہئے۔

صوبہ مکیشیوں سے یہ بھی کہا جاتا ہے اس تحریک کو منظم کرنے میں عوامی انجنوں کو کھول نہ جائیں۔ عوامی انجنوں سرگرم کی جائیں انکی ایگزیکٹیو (انتظامیہ) کمیٹیوں کی میڈنگ ہو۔ ان میں تجویزیں پاس کی جائیں اور آئین مخالف دن پیرھے لگائے جائیں۔ ان عوامی انجنوں کی پوری پوری جمہوری مشین اس تحریک کو منظم کرنے کے لئے کام میں لانی چاہئے۔

صوبہ مکیشیوں کو آخری دن کے ایک تجویز کا مسودہ کا مسودہ تیار کرنا چاہئے۔ یا ایک ہی مسودہ تحریک کے پورے عرصہ کے لئے۔ جس میں آئین کی مذمت کی جائے اور یہ اعلان کیا جائے کہ آئین بنانے والوں کو عوام کی رضائیں حاصل ہے بلکہ وہ پیرطالوی سامراج کی ہدایتوں کے مطابق کام کر رہے ہیں۔ یہ آئین قبول کرنے کے قابل نہیں۔ یہ آئین واپس لیا جائے اور عوام ایک ایسا آئین چاہتے ہیں جو سیاسی تجویز کے اندر دی ہوگی مانگوں کی بنیاد پر بنایا ہو۔





آئین آئین کے بارے میں ہندوستان کی کمیونسٹ پارٹی کا

# ☆ اعلان نامہ ☆

کانگریسی حکمران ہندوستان کے عوام پر ۲۶ جنوری ۱۹۵۰ء سے اپنا غلام

آئین لاد دینے والے ہیں۔

جنگ کے فوراً بعد کے زمانے میں جب ہندوستان کے عوام آزادی کیلئے زبردست جنگ میں اٹھے۔ تو برطانوی ہندوستانی، دونوں پونجی پیٹیوں کے علیحدہ کانپ اٹھے کہ ہمیں جتنا کوڑے کھسوٹنے کے امکانات ان کے ہاتھ سے نکل جائیں۔ تب ہندوستان کے پونجی پیٹیوں کے طبقے نے اپنے کانگریسی نمائندوں کے ذریعہ ملک کی آزادی پیچ ڈالی۔ برطانوی سارج سے لینڈیشن اور مائنٹ بین پلان کے ذریعہ سوداگریا۔ اور ہندوستانی عوام کے خلاف دونوں نے سازش کی کہ لکھنؤ پر حکمرانی کر کے ہندوستانی اور برطانوی سرمایہ دار طبقے کے مفاد حاصل کریں گے۔ موجودہ آئین اس ہی سازش کا پھل ہے۔

کیا یہ آئین جو کہ قومی غداروں اور سامراجی استحصال کرنے والوں کے اختلاط سے وجود میں آیا ہے۔ ہندوستانی قوم کی خود مختاری کا ضامن ہے۔

نہیں ہرگز نہیں۔ آئین ہندوستانی قوم کی خود مختاری کا مظہر نہیں۔ بلکہ برطانوی سارج اور استحصال کرنے والے نئے امریکی آقاؤں کے ہاتھوں ہندوستانی قوم کی علامتی ہی اسے رگ و ریشہ میں موجود ہے۔

یہی تو وجہ ہے کہ کانگریسی لیڈروں نے لوگوں کی نظروں کے سامنے "آزاد ہندوستان" کا لفظ ہی آئین کے سرحد سے اڑا دیا ہے۔ حالانکہ تین سال پہلے لوگوں کو دھوکا دینے کی نیت سے انہوں نے خود تمہید میں لکھا تھا کہ ہندوستان ایک آزاد جمہوریہ ہوگا۔ آئین کو ڈھانسنے والے پونجی پیٹیوں کے



دلوں نے اس طرح کعب عام اعلان کر دیا ہے کہ یہ آزاد ہندوستان کا آئین نہیں بلکہ ایک  
تحت اور غلام ہندوستان کا آئین ہے۔

ہندوستان کی غلامی اور ماتحتی کا شہسوارت صاف ہو گیا تھا جب نہرو اسکو برطانوی سامراجی  
دولت مشترکہ میں لے گیا۔

برطانیہ کے آگے ہندوستان کی ماتحتی آئے دن اس سے بھی ثابت ہو رہی ہے کہ نہرو کی حکومت اپنی  
بیرونی پالیسی میں برطانیہ کی رضامندی کے بغیر ایک بھی قدم اٹھانے کی جرأت نہیں کر سکتی۔ اسکی یہ مجال نہ رہتی  
کہ دنیا کے دہلانے والے واقعات کو تسلیم کرتی۔ اسوقت تک چین کی جمہوری عوامی حکومت کو تسلیم کرنے کی اسکی  
ہمت نہیں ہوئی جب تک کہ اسے اپنے سامراجی آقاؤں کی اجازت نہ ملی۔ ہندوستان کی ماتحت حیثیت  
ہندوستان میں برطانوی پونجی کے مخصوص رعایتی مرتبہ کو قائم رکھنے سے اور ہندوستان کی حکومت کی اقتصادی  
پالیسیوں پر برطانیہ کے پوری طرح حاوی ہو جانے سے ایک بار پھر ظاہر ہوئی۔ جس کی کئی مثال  
پانڈی قیمت لگانے کے وقت ملی۔

سکلی قیمت لگانے کے بارے میں ”ہندوستانی ڈومین“ کی اسی دست نگر حکومت سے رائے لکھی  
گئی اور اسے بے چون و چرا فیصلہ قبول کر کے امریکہ اور برطانیہ کی سفاح کی ہوس کو پورا کرنے کے لئے  
اپنی ہی عوام کی جھلی ہوئی لہر پر زائد بوجھ لادنا پڑا۔  
برطانوی سامراج کی غلامی سے جی نہ بھرا تو حکمران لٹ نے اب امریکہ کے سہزوں کیلئے ہندوستان  
کا درکشادہ کر دیا ہے۔ اور ہندوستانی عوام کے استحصال کرنے میں سہزوں کے تحفظ کی پوری گارنٹی دے  
رہا ہے۔

امریکن سرمایہ داروں کے چند ٹکروں کیلئے۔ ہندوستانی عوام کو ملکر لوٹنے میں ان کی مدد پانے کیلئے۔  
اور اپنے لہر لگڑا تے راج کو سنبھال دینے کیلئے حکمران لٹ سو ویٹ یونین کے خلاف ایٹکو۔ امریکی جنگ  
بازوں کے فیمہ کا ساتھ دیتا ہے اور دکھنی پوربی ایشیا میں امریکن مداخلت کو غداری سے دعوت دیتا ہے۔ اور  
کیلئے رضامند ہو جاتا ہے۔ حکمران حلقہ کشمیر میں امریکن مداخلت کو غداری سے دعوت دیتا ہے۔ اور  
اپنی بیرونی پالیسی کا فیصلہ امریکی جنگ بازوں کے ہاتھ میں پھوڑ دیتا ہے۔ اور ہندوستان کا یہ آزاد  
حق بیچ کر کہ وہ اپنی بیرونی پالیسی خود طے کرے اسکو ویٹ یونین سازشوں میں شریک ہو جاتا ہے۔  
قوم کو ایٹکو امریکی ہلاک کا غلام بنا دینے کی یہ پالیسی۔ امریکی سرمایہ کے سامنے یوں دن بدن جھٹکتے جا



سرویت دشمن سازشوں میں ایسی شرکت - یہ سب آئین کی ان گارنٹیوں کی شکل میں پرے  
 طرف سے موجود ہیں جو بیرونی مستقل مفاد کو ان کے منافع کے تحفظ کے بارے میں دی گئی ہیں -  
 آئین - برطانوی اور بیرونی مہاجروں - جوٹ کے منافع خوروں - چائے کے اجارہ  
 داروں - ٹولہ کے کھلوں کے اس تمام منافع - ملکیت اور صنعتی اور اقتصادی اقتدار کی ضمانت  
 کرتا ہے - جسے انھوں نے ہندوستان میں صدیوں کی کھلی ڈکیتی سے سمیٹا ہے - اور اس کے علاوہ  
 ان سے اور اپنے نئے خداؤں امریکی سامراجیوں سے وعدہ کرتا ہے - کہ ہندوستان کو معاشی طور  
 پر اپنے شہنشاہی میں جکڑنے کی ان کو کھلی چھوٹ رہے گی - بے شہمی سے آئین میں اس بات کا :-  
 "بنیادی قانون" کے روپ میں اعلان کیا گیا ہے کہ ہندوستان عوام کو کسی بھی موجودہ - ماضی یا  
 مستقبل کے منافع خور کی صنعتوں اور پونجی کو ضبط کرنے کا حق نہیں ہوگا -

مستقل مفاد کی پوجا میں آئین اور پونجی آگے بڑھتا ہے - ہندوستانی اور بیرونی مفاد داروں  
 کے قرضہ اور سود - سرمایہ داری امدادوں جیسے انڈسٹریل فائیننس کارپوریشن کے منافع کی  
 گمانی کرتا ہے تاکہ سرمایہ دار صنعتیں اور کاروبار مضبوط ہوں - وہ بانڈ جو حکومت زمینداروں  
 یا مہاجروں کو مفاد خور کے نام پر دینے کے وعدہ کرتی ہے - یا وہ قرضہ جو کہ ہندوستان کے سرمایہ  
 داروں کی امداد کے نام پر امریکی اور برطانوی سرمایہ کاروں سے لئے گئے ہیں - ان سب کی گمانی  
 آئین میں یہ لکھی گئی ہے کہ یہ ریاست کی آمدنی میں سے - خرچ کی جلی مدد ہونے - جن پر پارلیمنٹ  
 بھی ووٹ نہیں کر سکتی ہے - یہ سرمایہ داری آئین ٹیکسوں کے ذریعہ ملتی اور غیر ملکی مستقل مفاد  
 کو زبردست منافع دیتے رہنے کیلئے عوام پر دائمی بھجوری عائد کرتا ہے -

اس طرح سے آئین میں ہندوستان کی غلامی مضمر ہے - یہ وہ آئین ہے - جو ہندوستانی  
 عوام کی غلامی کو دائمی بناتا ہے - اور جس کے مطابق ہندوستان کی جنتیوں کے خلاف اور  
 ایشیائی آزادی پسند قوموں کے خلاف جنگ میں جھونکی جائے گی - تاکہ انہیں امریکی سامراج  
 کا فائدہ ہو -

کیا آئین میں ہندوستانی عوام کی خود مختاری یا ملک کے گرد و دروں محنت کشوں کی آزادی



کی شکل موجود ہے؟ کیا وہ عوام کا اقتدار قائم کرتا اور ان کو اپنے استحصال کرنے والوں اور غربت اور مفلسی لادنے والوں کے خلاف لڑنے کے قابل بناتا ہے؟

ہرگز نہیں۔ اگلے برعکس۔ آئین کی ساخت بے حیائی سے پوچھی پیوں۔ زمینداروں۔ اور ہمارا جو کئی حکومت کی ہے۔ جو سامراجیوں کے مشیر کار ہیں۔ آئین کے مطابق ہندوستان کے کروڑوں محنت کشوں کے مقابلہ۔ ہندوستان کی جنتائے مقابلہ۔ بدلیسی استحصال کرنے والوں کو زیادہ حقوق اور رعایتیں حاصل ہیں۔ درحقیقت یہ ملکی اور غیر ملکی لیٹروں کا آئین ہے۔

لینے والے۔ ہندوستان کے عوام۔ مزدور کسان۔ کفایت مزدور۔ درمیانہ طبقہ۔ اگلے کوئی بھی حقوق نہیں۔ ان کو غربت اور غلامی کے خلاف لڑنے کی کوئی حق نہیں دیا گیا۔ اس کے برخلاف۔ نجی ملکیت اگلا کرنا یعنی دسروں کا خون چوس کر حرام کی کمائی جمع کرنے کے حق کی لیٹروں کو پوری گارنٹی دی گئی ہے۔

دلیسی اور بدلیسی لوٹنے والوں کو آئینی گارنٹی کی گئی ہے کہ حکومت بنا معاوضہ دے ان کی ملکیت پر قبضہ نہ کر سکے گی۔ اس گارنٹی کا محض یہی مطلب ہو سکتا ہے کہ لوگوں کے مفاد کے لئے صنعتوں کو قومی ملکیت نہ بنایا جائیگا۔ اور آئین کی بنیادی دفعات کے بل پر پوچھی پی لوگوں کو بنا روک لوٹتے رہیں گے۔

معاوضہ کی یہ گارنٹی قومی ملکیت بنانے کے بھاری وعدہ کو سرے سے ختم کر دیتی ہے۔ اور بنا استحصال اور مفلسی کے آزاد اور خوش حال زندگی بسر کرنے کی لوگوں کی تمام امیدوں کا خون کر دیتی ہے۔

یہ اس بات کا صاف اعلان ہے کہ آئین محض مستقل مفاد کے تحفظ کے لئے ہی بنایا گیا ہے۔

اس طرح نہرو رپورٹ کا بنایا آئین پوچھی پی مستقل مفاد کا آئین ہے جو ٹاٹا۔ بھٹا اور ڈالمیہ کی صنعتوں اور منافع کے ضبط نہ ہونے کی گارنٹی دیتا ہے۔ جو ان کے مزدور چاہت اور عوام کے بے روک ٹوک استحصال کی گارنٹی کرتا ہے۔



اپنے راج کو جو ویسے ہی مستحکم نہیں ہے، محفوظ کرنے کی غرض سے آئین کے پیش کرنے والے ہندوستانی پونجی تہذیبوں نے رجعت پسند اور سڑے گلے پر حکم عنقریب سے میل ڈھونڈ رکھا ہے۔ یہ آئین رجواروں - زمینداروں - جوئے داروں کی جاگیرداری جو ٹکوں کو سبک رکھ کر کھڑا کر دیتا ہے۔ جو اپنے والوں کو زمین سے محروم رکھ کر سائنسی مفاد کی جاگیریں عوام یا حکومت کے ذریعہ ضبط کئے جانے سے محفوظ رکھتا ہے۔ نظام - اور جہاں جہاں ہری سنگھ جیسی جو ٹکوں کو کسانوں پر ظلم توڑنے والی فوجیں رکھنے کا حق دیا جاتا ہے۔ اپنی پر جانے خلاف بیدردانہ جرموں کے ترکیب راجوں اور لوہوں کے خون بھوسے ہاتھوں کو گر جوشی سے ان کے کانٹریسی دوست ہاتھوں میں بیٹے ہیں اور ان کا آئین انھیں راج پر لکھ - اپنا راج پر لکھ بنا کر محرم ظلم اور زبردستی کرنے کا بیڑہ دے دیتا ہے اور عوام کے خسارہ سے انکو پیش ہوا نخواستہ - پیشکش - زمیندار اور جاگیریں دینے کی گارنٹی دیتا ہے۔

یہ آئین ملکی اور بیرونی مستقل مفاد کے حق میں اور ہندوستان کے نزدیک طبقہ کثرت مزدور اور کسان، کچلے ہوئے درمیانی طبقہ اور ترقی پسند دانشوروں کے خلاف برعکس ملکی تمام جمہوری آبادی کے خلاف آئین ہے۔

بے حیائی سے اس کا اعلان ہے کہ اپنے شہریوں کو روزگار اور روزی کے ذرائع مہیا کر دینے کی حکومت کی کوئی ذمہ داری نہ ہوگی۔ بے شرمی سے اس میں لوگوں کو گزارے لائق نخواستہ - بیکاری کا بھتہ، بڑھاپے کی پنشن، یا زمین سہن اور رکھانے لینے کے بہتر معیار مہیا کرنے کی ذمہ داری سے انکار کیا گیا ہے۔ یہ آئین ان ذمہ داریوں سے منحرف ہو کر جو مفت ابتدائی تعلیم مہیا کرنے کیسے لگائی جائیں - عوام کو کلچر سے محروم رکھتا ہے۔ (مختصر یہ یعنی آئین ہندوستانی اور سراجی منافع خور گھڑیاؤں کو عوام کا بے رحمانہ غیر انسانی استحصال کرنے کی پوری آزادی دیتا ہے۔ اور ہندوستانی انسان کو ناقابل برداشت غربت، لاشہا بیکاری، ناقابل نجات جہالت، دائمی قحط اور بیماری اور واپائی بے پناہ تباہی کے عذاب میں مبتلا کر دیتا ہے۔ آئین - ایگزیکٹو (مخلیہ) کے ہاتھوں میں کسی بھی ادارے کو بغیر ثبوت یا کو ایسی کے غیر قابل



قراردینے کے بے لگام اختیار دیکر نوکری پیشہ اور مزدوروں کو ٹرڈ یونین بنانے کے ابتدائی حق سے بھی محروم کر دیا ہے۔ ہر سال اور لینڈ کے حق سے بھی انکار کیا گیا ہے۔ پریس کی آزادی کا تو آئین میں کہیں نام تک نہیں ہے۔ اس کا یورپی طرح کلا گونٹ دیا گیا ہے۔ سرمایہ دار طبقہ کو گوارا ہی نہیں ہو سکتا کہ مزدور اور خنتائی اپنا پریس ہو جو لوہے والی بد معاشیوں کا بھونڈا پھوڑ کرے اور محنت کشوں کو سب سے کٹے۔ تقریر کی آزادی کا تو خاتمہ ہی کر دیا گیا ہے۔ جلسہ اور جلسوں کے حق پر ہر موجودہ پابندی عائد کر کے اور سرمایہ دار حکمرانوں کی خوشنودی کے مطابق آئینہ بننے والے "قانون" اور آرڈیننس (فرمانوں) کے ذریعہ اور پابندیوں کے بے حساب اضافہ کا وعدہ کر کے اس حق سے قطعی محروم بھی کر دیا گیا ہے۔ غلاموں کو قابو رکھنے کی برطانوی آقاؤں کی بائیس پر عمل کر عوام کے ہتھیار رکھنے کے حق سے انکار کر کے آئین بنانے والوں نے پوری جنتا کو نامرد بنانے کی کوشش کی ہے۔ صرف فاسٹنسٹ پولیس، فوج اور سیوا دل جیسے اداروں کو جن پر کانگریسی رہنماؤں کو پورا الجھوس ہے کہ ان کے موجودہ راج کی رکھوالی کریں گے۔ اور پونجی پٹیوں کے دوسرے کتوں کو ہی ہتھیار رکھنے کا حق ہو گا جو نہ محالہ ہتھیار عوام کے خلاف استعمال کئے جائیں گے اور آخر میں حکمران طبقہ کی مقرر کی ہوئی مدت تک بغیر مقدمہ لوگوں کو نظر بند رکھنے کے لامحدود اختیارات دیکر مزدور، کسان اور درمیانی طبقہ کی مدافعت کو کھینچنے اور جمہوری مخالفت کی ہر آواز کا گلا گھونٹنے کی کوشش کی گئی ہے۔ قوانین تحفظ (سیکیورٹی ایکٹ) کو آئین کا ایک بنیادی حصہ بنا دیا گیا ہے۔ غرض کہ یہ آئین تو بالکل فاسٹنسٹ استبداد کا آئین ہے۔

کانگریسی لیڈروں کی سرپرستی میں پیش ہونے والی یہ آئین ہندوستان کی مختلف قوموں کی ایسی تکرار کو اور بھی بڑھائے گا۔ قوموں کا علیحدگی کی حد تک حق خود ارادیت کے مطالبہ کو ہر عدالت کی آزاد اقتصادی اور سیاسی ترقی کی مانگ



کو تمام قومیتوں کی زبان اور تمدن کی آزاد نشوونما جیسی صحیح اور حق بجانب باتوں کو آئین کے ذریعہ دہانے کا حساب لگایا گیا ہے۔

آئین میں مضبوط کر کے خیال اور راج کے تحفظ کے نام پر مرکزی حکومت کو دیئے گئے وسیع اختیارات سوائے اسکے اور کچھ نہیں۔ تمام قومیتوں کی اقتصادی اور سیاسی زندگی پر مارواڑی اور گجراتی سرمایہ داری کو حاوی کیا جائے۔ اور آندھرا تامل ناڈ، بنگال، حیدرآباد، آسام، اڑیسہ، کیرلا، کرناٹک، اور تمام قوموں کے عوام کو مارواڑی و گجراتی پونجی کے استبداد کو سمجھنے کیلئے مجبور کیا جائے۔

آئین تمام زبانوں کی برابری تسلیم کرنے سے انکار کرتا ہے اور تمام قومیتوں پر انگریزی اور ہندی کو سرکاری زبان بنا کر لاد دیتا ہے۔ آندھرا۔ تامل ناڈ اور بنگال کے رہنے والے مزدور اپنی زبان کی برابری کے حق سے محروم کر دیئے جاتے ہیں۔

تمام زبانوں پر یہ ہیما راجد۔ ان علاقوں کی لپٹی قائم رکھنے اور وہاں کے عوام کو تسلیم اور تمدن سے محروم رکھنے کا ایک ہتھیار ہے۔ وہ ہتھیار جو مارواڑی گجراتی اقتدار کی ٹھوس بنیاد تعمیر کرتا ہے۔ کیونکہ اگر عوام اپنی زبان اور تمدن کی ترقی کر سکیں تو ان کا اقتدار خطرہ میں پڑ جائے۔

لسانی صوبے بنانے کے سوال پر کانگریسی مائکلوں کی خون چوسنے اور حاوی ہونے کی ہوسناکی بے نقاب ہو کر سامنے آ جاتی ہے۔

آندھرا۔ کیرلا وغیرہ کے مقامی استحصال کرنے والے لسانی صوبوں کی مانگ کرتے ہیں تاکہ اپنے لوگوں کو لٹھنے میں ان کا زیادہ حصہ رہے۔ حکمران گٹ گٹتے ہیں صوبوں کو یہ حق دینے سے انکار کرتا ہے کیونکہ ان علاقوں کی بوٹ کا منافع وہ اپنے ہی قبضہ میں رکھنا چاہتا ہے۔

آئین لہذا قومیتوں کو گلے کا آئین ہے۔ اس کے ماتحت مختلف قومیں علاقوں



کے ساتھ امتیازی سلوک اور ان پر علیحدہ روز بروز بڑھتا چلا جائیگا۔

آئین اس کے علاوہ آدی باسی علاقوں کے بے درک استحصال کو جائز قرار دیتا ہے  
ساتویں اس کے بنانے والے آسامی سرحد کے آزادی پسند قبیلوں پر اپنی گرفت  
تیز کرنے جا رہے ہیں۔ اور بہار اور اودیشہ کے آدی باسیوں کی بغاوت کو برہمنی  
سے کچل رہے ہیں۔

آدی باسی علاقے جہاں بیش قیمت دھاتیں اور انسانی دسترس سے بچے ہوئے  
قدرتی ذرائع پائے جاتے ہیں۔ استحصال کرنے والے اس گٹھ کے ہاتھوں پر ڈھنگے  
ہیں جو آدی باسی مزدوروں کو لوٹنے کے انتہا ہی سفاکانہ طریقے اختیار کر رہا ہے  
آئین چھوٹ چھات ختم کرنے کا بھی منافقانہ وعدہ کرتا ہے۔ لیکن اچھوتوں کی  
موجودہ حالت یا اقتصادی استحصال سے پیدا ہونے والی ان کی تکالیف۔ زمین کی  
ان کے پاس کمی۔ سندھ سماج کا ان پر دباؤ۔ یہ سب اس وعدہ کے باوجود بری نظر  
نہیں ہونے والی۔

آئین ان کو زمین نہ دیکھا بلکہ تمام حقوق سے ان کو محروم رکھے گا۔ کیونکہ اچھوت  
محنت کش مزدور کسان کا جز ہیں۔ اچھوتوں کی تعلیمی اور اقتصادی پستی اس زمین  
کے مطابق دور نہ ہوگی بلکہ اور بڑھ جائے گی۔

سماج کا دباؤ بھی ان پر ختم نہ ہوگا۔ کیونکہ کانگریسی لیڈر خود سب سے زیادہ عابری  
سندھ ہیں۔ جن پر ذات پات کا بھوت سوار رہتا ہے۔ وہ اچھوتوں کے دشمن ہیں کیونکہ  
مزدور کسانوں کے خلاف جدوجہد میں وہ سندھ و سبھا اور راشٹریہ سیکولر جیسی  
سندھ و راجت پسندی کی سیاہ قوتوں کی حمایت اور حوصلہ افزائی کر رہے ہیں۔ جو پرانے  
سندھ و ذات پات والے سماج کو بحال کرنے کی کوشش میں مبتلا ہیں۔

فرقہ پرستی مٹانے کے نام پر آئین اقلیتوں، خاص کر مسلم اقلیت کے حقوق کو  
پامال کرتا ہے۔ ڈرپوک، متفرقہ دے فرقہ پرست لیڈر جنہوں نے آج تک منظم منظم



گمراہ لیا آج بہت نہیں کر سکتے۔  
یہ لیڈر سائبراجیوں کے گروہ اپنے شیطان کی گھیل کھیلے ہیں۔ اور ذاتی آرام و منافع  
کو چھوڑ کر عوام کے صحیح مفاد کیلئے لڑنے کا ان کا مطلق ارادہ نہ تھا۔  
نئے آئین کے افتتاح سے پہلے ہی۔ ابھی سے مسلمانوں کا درجہ تیزی سے کم کرنا  
کا ہوتا جا رہا ہے۔

اردو زبان کو نئے آئین میں برابری کے درجہ سے محروم رکھا گیا ہے اور بے غیرتی  
سے اسکو روند جا رہا ہے۔  
آئین رسماً اعلان کرتا ہے کہ ہر شہری کو اپنے مذہب کا پیردر ہے کا اور ہر شخص  
کو اپنے تمدن اور اپنے رسم الخط پر کاربند رہنے کا حق ہے۔

کہا تو جاتا ہے کہ ہر فرد اپنی زبان اور رسم الخط کو برقرار رکھے گا۔ لیکن  
عمل میں سرکاری طور پر اردو زبان کے ساتھ برابری کا ہوتا نہیں کیا جاتا اور غیر سرکاری طور  
پر اسکو کھینچ دیا جاتا ہے۔

آئین رسماً تو ضمیر کی آزادی کو تسلیم کرتا ہے۔ لیکن اقلیتوں کو دوسرے مذہبی گروہوں  
کے جبارانہ فرقہ پرست رجعت پسندوں سے درحقیقت محفوظ رکھنے کی کوئی گارنٹی نہیں  
کرتا۔

اسکے برخلاف آئین کے مصنفوں نے اپنے عمل سے یہ صاف ظاہر کر دیا ہے کہ اقلیتوں  
کے عوام کے ساتھ امتیازی برتاؤ کرنے اور ان کو دبانے پر انھوں نے کمر باندھ لی ہے۔ اور  
آئین کے دفعات بعض لوگوں کی آنکھوں میں دھول جھونکنے لگے ہیں۔

مسلم لیگ جس پر آنسو بہانے والا بھی کوئی نہ ہوگا اس لیے نے سے ختم کر دی گئی کہ وہ  
فرقہ پرست جماعت تھی۔ مگر ساتھ ہی کٹر ہندو فرقہ پرست جماعتوں جیسے ہندو سماج اور  
راشدین یہ سوچ سنبھالوں کو کانگریسی نیتاً نہ صرف مرقہ اور بڑھا دیتے ہیں بلکہ ان جماعتوں  
کو کانگریسی لیڈروں کی سرپرستی بھی حاصل ہے۔



جو ایسے بعض کانگریسی لیڈر کرتے ہیں ان کا نتیجہ صرف یہی ہو سکتا ہے کہ اقلیتوں کے خلاف امتیازی رویہ برتنے کی پالیسی اختیار کی جائے۔ اسمبلیوں میں اکثریت کا اقلیت کے نمایندہ جمروں کو کانگریسی وزیروں نے نظم کھلا دھمکائے ہوئے۔ اور اٹلی تمام قوم کو تہمت لگائے اور دروا دیتے ہوئے یہودیوں کے خلاف نازیوں کی یاد تازہ کر دی ہے۔

اسی طرح ملازمتوں میں غیر سرکاری طور پر آئینوں کے خلاف امتیازی رویہ اختیار کرنا۔ اور تعلیمی اور اقتصادی حیثیت سے اچھے اور کھپے کی پالیسی کی طرف واقعات کا رخ ہے۔ ان باتوں کا تدارک کرنے سے آئین لاپس ہے۔ اس پالیسی کے خلاف آئین کوئی کارنی نہیں کرتا۔ اور اقلیت کو اکثریت کے پونجی پی حکمرانوں کے رحم پر چھوڑ دیتا ہے۔

آئین میں بالغ حق رائے دہندگی کی قابل رحم کوشش بھی محض دھوکہ اور فریب ہے جب پرچار کی پوری شین، سرکاری کنٹرول کارڈیو، پونجی پیوں کا کھیل نہیں، ہینڈ لاءڈ اسپیکر اور بال کے انتظامات وغیرہ سب ہی پونجی پی اور حکمران طبقہ کے ہاتھ میں ہیں اور جب ریالٹی کی شرط۔ امیدواروں کو بڑی رقم جمع کروانے کی شرط وغیرہ کے بہانے غریبوں سے ایجن کے معزلی حق بھی چھین لئے جاتے ہیں تو کھریہ کہنا کہ بالغ ووٹ کے قانون سے امیدوار غریب دونوں کو نکالیں آئین اقتدار حاصل کرنے کا موقع دیا جا رہا ہے۔ بالکل من گھڑت جھوٹ ہے۔

اور یہ جھوٹ دہرا فریب ہو جاتا ہے۔ جب موجودہ آئین کے مطابق مرکزی اور صوبائی دونوں اسمبلیوں کے ایوان بالا (ایر باؤس) میں آبادی کی بہت بڑی اکثریت کی نمایندگی پر ہی روک لگادی جاتی ہے۔ جبکہ عوام کو یونین کا صدر چننے کا بھی حق حال نہیں ہوتا۔ حالانکہ صدر کو جیسا کی موت اور زندگی کے اختیارات سونپ دیئے گئے ہیں جبکہ ہر صوبہ میں نادر شاہی اختیارات والا گورنر اور ہر سے متور ہو کر لوگوں پر لاد دیا جائیگا۔



جہد حریف کشن کے صوبہ اور چھوٹی چھوٹی ریاستوں کے کروڑوں انسانوں کو پارلیمانی  
 طریقہ اپنانے اور بحلیہ پیمانے کا حق ہی نہیں دیا گیا ہے۔ اور اعلیٰ قسمت شہرت ہی صدر  
 کے ہاتھوں سوئپ دی گئی ہے۔ ان حالات میں اس آئین کے مطابق جیٹو محض دھوکہ کی  
 ہی ہوگا

جیٹو کی فہرستوں کے ساتھ بھی نہایت بے حیائی سے کارستانی کی گئی ہے جس سے ایک  
 بڑی تعداد کے ووٹ کرنا ہی ناممکن ہو گیا ہے۔ جیٹو کے افسر کلم کلمہ لوگوں کے ووٹ ڈالنے میں  
 رخنہ اندازی کرتے ہیں۔ اور اس مقصد کے لیے ریاست کے اختیارات آزادی سے استعمال ہوتے ہیں۔  
 اور آخر کار عوام کے فیصلہ سے جان بچنے کے لیے حکومت نے کمیونسٹ پارٹی کو مزدور  
 طبقہ اور عوام کی پارٹی کو، اس واحد پارٹی کو جو عوام کے مقاصد کے لیے لڑتی ہے، غیر قانونی قرار دیا  
 ہے۔ اور مزدوروں کے قانون کو کھینچنے اور درمیانی طبقہ کو قابو میں رکھنے کے وسیع پیمانے پر تشدد  
 شروع کر دیا ہے۔ تلفغانہ اور بنگال۔ کیرلا اور آندھرا کے گاؤں میں وہ اندھا دھند جور  
 و ظلم توڑ رہی ہے۔ کلکتہ کی سڑکوں پر مزدوروں کی ہڑتالوں کے قانون کی لڑائیوں کے مقابلے  
 طلبہ کی ہڑتالوں۔ عورتوں کے جلوسوں کے درپیش وہ لاکھ چارج کرتی ہے۔ اور گولی برساتی  
 ہے۔ ایسے حالات میں عوام کو آزاد جیٹو کا کونسا موقعہ ملے ہے؟ اسی آئین کے ماتحت:-  
 کسان زمین کا مطالبہ نہیں کر سکتے۔

مزدور کیفیت مزدور، اور نوکری پیشہ، روزگار اور گزارے لائق تنخواہ نہیں  
 مانگ سکتے۔

درمیانہ طبقہ روزی کے ذرائع کا مطالبہ نہیں کر سکتا۔

پوری قوم شہری آزادی تعلیم اور کھیر کے حق کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔

چھوٹ جھمٹ ختم نہ ہوگی۔ آدی باسی دبا کے جائیں گے۔

الٹوگ ان مطالبات کو پیش کرنے کی جرات کس تو آئین میں اگلی آواز کو گونجنے کے ذرائع

موجود ہیں۔ وہ صدر اور گورنروں کو جتائی آواز دبانے کے لیے فرمانی (ڈارڈینس) بنانے کے اختیار



دیا ہے۔ اور بالآخر خود آئین کو معطل کرنے اور فرمان (پروکلیمیشن) کے ذریعہ حکومت کرنے کے اور جب کبھی مستقل مفاد کے قدم دیکھائیں تو ہمیں یہی ماننا ہے کہ مطلق العنانی سے حکومت کرنے کے اختیارات دیدیا ہے۔

اس آئین کی حمایت کرنے اور اسکی خدمت نہ کرنے کے معنی میں اس راج کی حمایت کرنا جو ہندوستان کے لوگوں کو دو سال سے دبا رہا ہے۔ اسکے معنی میں ان لوگوں کی طرف داری جو پر نیدنیسی جیل، صابرمتی جیل، ویلور اور کڈنور جیل میں سیاسی قیدیوں پر گولی چلاتے ہیں۔ اسکے معنی میں ان لوگوں کا ساتھ دینا جو کہ کلکتہ کے جیلوں میں سیاسی قیدیوں کو سزوں کے ساتھ شرمناک برتاؤ کرنے کے مجرم ہیں۔

یہی ماننا ہے کہ آئین مردہ باد، امریکی برطانوی سامراج کی محکومی کا آئین مردہ باد! فاشنزم اور غلامی کا آئین مردہ باد!

اس آئین کی حمایت نہ صرف نہرو کمپنی کر رہی ہے۔ نہ صرف ٹاٹا اور برلا کی منڈلی انکی معاون ہے۔ بلکہ سوشلسٹ پارٹی کے خمدار تیا بھی اس آئین کی طرف داری کر رہے ہیں۔ اور لوگوں کے دلوں میں یہ کیوم بعد کر رہے ہیں کہ آئین کے ذریعہ ان کے مسئلے حل ہوں گے یا عوام کے ذریعہ لوگوں کے ہاتھ میں اقتدار آسکے گا۔

سوشلسٹ لیڈر جو ہر ہڑتال اور سالوں کی ہڑتالوں میں دغا دیتے ہیں جو دراصل نہرو حکومت کی پالیسی کے حق میں ہیں۔ وہ نہرو حکومت کی جالبازی کو ہی دہرا کر عوام کو دھوکا دینا چاہتے ہیں۔

نہرو پبلس کمپنی نے جنٹا کو دھوکہ دیا ہے۔ ان کی بیٹھو پر پیر پیر کو لڑائی پر چڑھے۔ اور اب انکو ہی ادھر رہے ہیں۔

جے پرنکاش کی ٹولی بھی اگلے چناؤ میں جنٹا کا ووٹ چاہتی ہے تاکہ وہ بھی گڈی لیکر پھر ان کو دھوکہ دے۔ اور پھر مایہ دار طبقہ کا مفاد پورا کرے۔ یہ خمدار ہر قسم کی جنگجو لڑائی کے خلاف ہیں۔



نریندر دیو کے جس گٹ نے یو۔ پی میں زمینداروں کو گھر توڑنا و ضلع دینے کیلئے بی حیائی سے  
رضامندی دی۔ وہی آج اس معاوضہ کے مخالفین کا ڈھونڈ رہے ہیں۔

یہی دنیا باز ہیں جو کہ ٹری پارٹائیٹ کانزس میں ہزاروں مزدوروں کی چھٹی پر دہلی اور  
بدلی سرمایہ داروں اور نرو حکومت سے متفق ہو گئے۔ اور سابقہ ایسی نگہداری پر پردہ ڈانے  
کئے وہ بے روزگاروں کے مظاہرہ کرواتے ہیں۔

وہ برطانیہ کی سامراجی لیبر حکومت کی حمایت کرتے ہیں اور شیپٹ روک کے خلاف نریندر ہیں۔  
وہ سیدھے طور سے یا گھما پھرا کر چاہتے ہیں کہ مزدور کسان اس آئین کو تسلیم کر لیں۔  
تاکہ سرمایہ داری قائم رہے اور سولہ اقدار حاکم کر سکیں، وزارتوں پر قبضہ کر سکیں۔  
اور سرمایہ داروں کی خدمت کر سکیں۔

مزدوروں! کسانوں! طالب علموں! عورتوں! درمیانی طبقہ والوں!  
۲۶ جنوری کو خون چوسنے والوں کے اس آئین کے، قومی غلامی کے آئین کے  
خلاف مظاہرہ کرو۔

پڑتالوں، جلوسوں، اور مظاہروں کی تنظیم کرو۔ اور ہندوستانی مستقل مفاد اور بیرونی  
لوٹنے والوں کی اس سازش کے خلاف اپنے غصہ اور نفرت کا اظہار کرو۔

اعلان کرو کہ ہمارا فیصلہ ہے کہ ہم اس آئین کو دفن دینے کے جو سرمایہ داروں، زمینداروں  
راجوں، نوابوں، جو رہیو پارٹیوں، اناج چوروں کے ہاتھوں اقدار سوئپ دیتا ہے۔ جو مزدوروں  
کو غلام بناتا ہے۔ جو کسانوں کو غلام بناتا ہے۔ جو مسلم اقلیتوں کے خلاف امتیازی رویہ  
اختیار کر کے، اچھوتوں کے سماجی بوجھ کو جاکر قرار دیکر۔ تمام قومیتوں کو زیر کر کے غنت  
گشوں میں پھوٹ پیدا کرتا ہے۔

جنگ بازوں کا تیار کردہ آئین، جسے ہندوستان کو ایٹھوا میرلی جلی خیمہ میں کھینے والوں  
نے بنایا ہے، جو سودیت یونین کے خلاف جلی سازش کو امانے اور بڑھانے والوں کے ہاتھ  
میں اقدار دیتا ہے۔ مردہ باد!



۱۸  
ہندوستان کی کمیونسٹ پارٹی تمام محنت کشوں، تمام ایماندار مسالوں کو آواز  
دیتی ہے کہ سچی آزادی اور خود مختاری حاصل کرنے کیلئے آئین مخالف مظاہرہ کو عوام و محنت  
کشوں کے اتحاد کا مظاہرہ بناؤ۔

ہندوستانی کمیونسٹ پارٹی، ہندوستان کے پورے مزدور طبقہ اور مزدور طبقہ کی تمام  
تنظیموں کو آواز دیتی ہے کہ وہ آئین مخالف دن، پھوٹ پر سٹ سوسائٹیوں کی  
تمام کوششوں کے باوجود مزدور طبقہ کے اتحاد کا مظاہرہ کریں۔

مزدور طبقہ کو یہ سمجھنا چاہیے کہ ان کی طاقت کا شیرازہ بگیرا دشمن  
کی خیال ہے، جس کے مقابلہ کے لئے مزدور طبقہ کے پاس ایسا ہی ہتھیار ہے جو ہاں نہیں  
سکتا۔ اور وہ ہے اُسکے طبقاتی اکیے کا ہتھیار۔

سوشلسٹ لیڈروں کی مزدور سے مزدور کو جدا کرنے کی کاوش کو خاک  
میں ملا دو۔ مزدوروں کو دھوکہ دے کر ٹاٹا برلا کا قانون منظور کرانے کی ان کی  
کوششوں پر پانی پھیر دو۔ اور مزدور طبقہ کے اکیے کا مظاہرہ کرو۔

۲۶ جنوری کو مزدوروں، مسالوں، کمیونٹ مزدوروں، طالب علموں  
عدوتوں اور نوکری پیشہ کے زبردست جمہوری مورچہ کو قائم کرنے کا ہتھیار کا اعلان  
کرو۔ ایسا جمہوری مورچہ جس کی بنیاد مزدور مسال، اتحاد پر ہو۔

وہ آئین جو ہندوستان کے عوام جانتے ہیں۔ استحصال کرنے والوں کے بقول سے  
ہیں بلے گا، اس کو تو عوام اپنی جدوجہد کے بل پر سیاسی اور اقتصادی آزادی کی  
لڑائیاں جیت کر ہی حاصل کر سکیں گے۔

موجودہ آئین کو ڈھالنے والے جس وقت لوگوں کے حقوق کے ساتھ کارستانی  
کر رہے تھے۔ اُس وقت ملٹی حکومت کے بے مثال تشدد کے مقابلہ میں تلنگانہ  
کے جاناڑو کسان اپنی جیالی قربانیوں سے ہمت اور پامردی کے ساتھ عوام کے  
حقوق نقش کر رہے تھے۔



ملتان کے لڑاکو لسانوں نے دو سال قبل نظام کی جاہر فوج کو نکال کھڑا کیا۔

نظام کی ماتحتی سے بڑے علاقوں کو آزاد کیا۔ اور جو تیسے دایوں کے لئے زمین اور ہر ایک کے  
جینے بسنے کے لئے بہتر حالات حاصل کئے۔

وہ ان گنت لڑائیاں۔ جو ہندوستان بھر میں۔ کیریلہ۔ آندھرا۔ مدنا پور۔

گالک دسپ میں مزدور اور لسان۔ بہت۔ استقلال اور جان بازی سے لڑ رہے ہیں۔

اسی طاقتی جواز کو پیدا کر رہی ہیں جو عوام کے آئین کو دھجھ میں لاسکے۔ ان آتشیں لڑائیوں

کے ذریعہ لسانوں کا زمین پر حق۔ مزدوروں کا گزارے بھر تنخواہ کا حق۔ عوام کا سیاسی  
اور اقتصادی اطمینان کا حق تحریر کیا جا رہا ہے۔

موجودہ آئین مردہ باد!

عوامی آئین کیلئے آگے بڑھو!

وہ آئین جس میں ہندوستانی عوام کی آزادی اور خود بخاری مضمر ہوگی۔

جو جو تیسے والے کوڑیں۔ صنعتی اور کھیت مزدور کو گزارے لائق تنخواہ دلا سکا۔

جو صنعتوں کو قومی ملکیت بنا سکا۔ اور سب کی خدمت کرنے کے حق اور معاشی اطمینان  
کی گارنٹی دے سکا۔

جو محنت کشوں کے ہاتھ میں اقتدار دے گا۔ اور ہندوستان کے عوام کا سوویٹ

روس کے عوام سے، چین اور عوامی جمہوریوں کے عوام سے امن کیلئے اور

لڑائی کے خلاف اتحاد تقبلی کر دے گا۔



# नये विधान के खिलाफ पुचार आन्दोलन के बारे में

प्रिय साथी

हम आप के पास नये विधान के बारे में केन्द्रिय केमिटी का घोषणा पत्र भेज रहे हैं.

इस घोषणा पत्र को टारपी या छपी हुई प्रतियां फ़ौरन ही ज़िले के नेताओं और ग्राम मेम्बरों को मिल जानी चाहिये ताकि वे विधान-विरोधी आन्दोलन को पुर असर तरीके से चला सकें.

आप इस घोषणा पत्र को जनता में वितरण करवाने के लिये कृपया और यह देखें कि यह २६ तारीख़ से पहिले ही बाँट दिया जाता है.

इस घोषणा पत्र में हमारे कार्यकर्ताओं के लिये मासुकों की रजिस्ट्रार के लिये काने दो गई हैं ताकि वे पुरअसर तरीके से इस विधान का पदफ़ाश कर सकें. इस लिये यह ज़रूरी है कि उनको इसकी कृप प्रतियां फ़ौरन ही मिलें, यहां तक कि उसके कपने के पहिले ही उनको मिल जायें.

विधान के खिलाफ़ पुचार - इस का और उसके ठठ बनाने वालों का पदफ़ाश, और फंडा फोड बहुत ज़रूरी और अहम राजनैतिक पुचार आन्दोलन है और यह बहुत पुरअसर तरीके से संगठित किया जाना चाहिये.

गैर कानूनियत के बाद से पार्टी के नेतृत्व के बाद यह वास्तुतः पहिले मौका है जो केन्द्रिय केमिटी सभी यूनिटों को अपने महान राजनैतिक समस्या पर एक ही दिन मैदान में उतरने के लिये आहवाहन कर रही है. इस दिन का संगठन हमारे अपनी जनता को संगठित और एकत्रित करने में शक्ति और योग्यता का सफल होगा. और अपने बहादुराना संघर्षों के नेतृत्वके बाद यह हमारे अखिल भारतीय शक्ति को हैसियत से अपने को मापने का एक पैमाना होगा, और यह हमारे कार्यकर्ताओं और हमारी जनता को कार्यकर्ताओं और उनकी जागृतिशील एक सूत्र में संगठने के क्वकवक बुद्धि में किया गया है.

गैर कानूनी हालात, अज्ञानों में अज्ञानों का न देना, पार्टी के पत्रों की कन्डी, इन सब बातों के कारण भारत वर्ज के क्वकवकवक विभिन्न भागों में होने वाली महान घटनाएं अन्धकार में पड़ जाती हैं और अक्सर पार्टी नेतृत्व के एक हिस्से में, ग्राम मेम्बरों में और यहां तक कि जनता के एक हिस्से में परत हिम्मती की भावनाएं पैदा कर देती हैं वे अज्ञान में मग्न रहते हैं और उनके हाथ पैर फूल जाते हैं.

नेहरू सरकार को हिला देने की अपनी महान शक्ति को हम आंखें लाते हैं.

विधान के खिलाफ़ एके के साथ और एक ही समय पर प्रदर्शन, जनता और पार्टी को पूरी शक्ति और सभी के सामने प्रगट करोगी और इस लिये आवश्यक है कि इन प्रदर्शनों की बहुत ही पूर्णता के साथ तैयारी की जाय.

इस में शक नहीं कि इस दिन की तैयारी कुछ असुविधाओं के साथ करना होगा. कारण यह कि हम नये विधान के खिलाफ़ लगातार हमले नहीं करिये और जनता के गुस्से और क्रोध को उसके खिलाफ़ अभी तक नहीं उभारा है. फिर भी नेहरू सरकार के खिलाफ़ काफी गुस्सा लोगों में मौजूद है, और विधान का फंडा फोड और पदफ़ाश का लक्ष्य आसानी से हासिल किया जा सकता है.

२६ जनवरी को यह आहवाहन देने का फ़ौरी मसूदा क्या है? हमारा ध्येय है कि ज्यादा से ज्यादा, जितना भी मुमकिन हो, जनता के हिस्से को विधान के खिलाफ़ कार्यकर्ताओं के ला सके, ज्यादा से ज्यादा लोगों को चेतन रूप से इस क्वकवकवक विरोधी नये हिस्सा लेने के लिये ला सके. कांग्रेस के पूंजीवादी नेता जनता को फ़ौजी शक्ति के प्रदर्शन और शान शौकत भेजने बग़ैर और टोही पिछलग्गों का जमाव करके, ऊंचे तारों के



ऐसे अभी सैकड़ों लोग हैं - और यह दिखाते हैं कि उनको जनता का समर्थन हासिल है और इस कुक्कड़ प्रकार जनता को वशीभूत और निष्क्रिय करना चाहते हैं. वे अपने टुट्टुजिया कर्मी के अपने पीछे चलने वालों का इस 'जन प्रिय' समर्थन से भ्रम में डालना चाहते हैं और जनता के दिमाग में हिचकिचाहट और शक पैदा करते हैं.

हमारे पुरस्सर पुरदशनत्रों, काँग्रेसी नेताओं के पददगारों, जिन का वे ढोल पीटते हैं, के कर्मी, चरित्र का भेड़ा फोड़ करने व पदार्थ फ़ाश करने, विधान के कर्मी चरित्र का पदार्थ फ़ाश करने और सच्ची जनता - दलित तबकों - को विधान के खिलाफ़ कार्रवाईयों में लाकर विधान के बनाने वालों के सभी दावों - यह दावा की यह पुजातंत्रिक विधान है, कि यह जनता के प्रतिनिधियों का बनाया हुआ विधान है - का पदार्थ फ़ाश करना चाहिये.

विधान के पदार्थ फ़ाश करने का काम, विधान बनाने वाले पार्लियमेंटियों का भेड़ा फोड़ - यह काम पूंजीवादियों के असर से जनता को निकालने के काम का नेहरू सरकार के खिलाफ़ जनता का नेतृत्व पूर्ण भूमिका को बहाना हिस्सा है. निभाने कठ के काम का

विधान के उद्घाटन की घोषणा का दिन हमें एक केन्द्रिय निशान मिला है जिस पर हम अपने हमले को निशाने जमावें, हम नेहरू सरकार की तमाम तदुपायियों की पील खोले और भेड़ा फोड़ करे, और इस विधान द्वारा जिस की शुरुआत की <sup>जाने वाली है</sup> उनकी <sup>जाने वाली है</sup> रक्षा को सब के सामने खोल कर रखें.

इस लिये यह बहुत ज़रूरी है कि जहाँ कहीं भी पार्टीयूनिट हों विधान के खिलाफ़ प्रचार आन्दोलन छेड़े जाये, और विधान-दिवस के दिन विरोधी कार्रवाईयों का संगठन किया जाये

इसकी आवश्यकता नहीं कि हम सब जगहों पर एकही ताकत से कार्रवाईयाँ नहीं कर पाते. लेकिन अहम बात तो यह है कि जहाँ कहीं भी पार्टीयूनिट हों हम जितनी भी जनता भूमिका हो विधान के खिलाफ़ कार्रवाईयों में लगादे. साथियों को यह एहसास करना चाहिये कि जनता, चाहे उसकी संख्या कुछ भी क्यों न हो, जो इस प्रकार के पदार्थों में हिस्सा लेगी उनकी चेतना को शीघ्रता से बदल देगी, और उनको कर्मी-चेतन लड़ाका बना देगी.

हमें जनता को नेहरू सरकार की सीधी मुखालफ़त में लाना चाहिये, जिस से हम अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर सकें, और जितना ही ज़वादा अधियों को हम एकत्रित कर सकेंगे उतनी ही महान हमारी शक्ति का प्रदर्शन हो गा. किसी अन्य पार्टी को यह करने की न तो हिम्मत है और उम्मीद ऐसा करने की इच्छा ही रखते हैं. केवल हमारी ही पार्टी है जो यह कर सकती है. जितनी ज़वादा कामपायी हमें यहाँ मिलेगी उतना ही जनता एक के बीच तुल तुल यूनियन हिस्सों को <sup>को</sup> हमनी और बीच सके गैरोशलिस्टों अगदि के आम मेम्बरों को अपने पक्ष में कूब जीत सकेंगे.

हमारे संगृहित करनेकी शक्ति ही हमारे सीधे राजनैतिक असर का घोलक भी है जो हमने <sup>अभिनत</sup> तहदुराना संघर्षों के बाद प्राप्त की है. पिछले दो साल से जब से हम हथियार बन्द लड़ाई तेलंगाना में लड़ रहे हैं और राजनैतिक बन्धियों की वहादुराना संघर्ष लड़े हैं, हमारा अधिअतर ध्यान अंशिसंघर्षोंपर रहा है और हमतन ऊंचे स्तर पर उनका केवु नेतृत्व किया, जमी की उदौलत आज काकद्वीप - काल-मे अज़ाद इलाके कायम हो गये हैं, इन अइगिनत संघर्षों के दौरान में जब जनता को वहशियाने दमन का सामना करना पड़ा उसने नेहरू सरकार के प्रति पूरा पैदा करदी है और हमारे असर की जनता नेहरू सरकार को खत्म करने की आवश्यकता को महसूस कर रही है.

अब विधान का सवाल है, जो सीधे तौर पर राज्य के स्वरूप के मुश्किल को लाकर खड़ा कर देता है. वह -दबे पिसे कर्मी द्वारा राज्य सत्ता पर कब्ज़ा करने के सवाल को सामने लाता है. और हमको इस दशा में चाहिये कि हम अपने नेतृत्व की कूब तमाम जनता को विधान के खिलाफ़ भिड़ा दें. अगर हम कहीं नाकामयाब होंगे तो इस के माने होंगे कि हमने जनता को उसके हाल के कड़वे कूब तर्जुबों से कुछ नहीं सिखाया.

सभी पार्टीयूनिटों को इस लिये 18 जनवरी से 26 जनवरी तक विधान-विरोधी सप्ताह मनाया चाहिये. आन्दोलन और प्रचार अभी से आरंभ कर देना कूब चाहिये. लेकिन आखिरी सप्ताह में उसको अपनी चरम सीमा पर पहुँचाना चाहिये.



मजूदरों को विरोधी हड़ताल और कंधा कहीं मुमकिन हो विद्यार्थियों में इस के लिये फ़ौज नगर देना चाहिये, 26 ता० - अगर 26 को छुट्टी हो-तो 24 को सब मजूदरों को विरोधी हड़तालों में हमे लाना चाहिये, प्रदर्शन या हड़ताल की ठीक तारीख सुविधा के अनुसार 24 या 28 रखनी चाहिये, 30 भा० विद्यार्थी संघ और कुछ पार्टी यूनिटों ने हड़ताल की तारीख 28 रखी है.

गांवों और शहरों में, हड़तालों के अलावा, मीटिंगें जूलस, मुजहिदों ~~का~~ पाबन्दियों को तोड़ते हुए <sup>माराका करेने</sup> हमे <sup>विना</sup> विधान-विरोधी <sup>काले फंडों</sup> जगह के मुताबिक जैसे भी तरीके इस्तेमाल किये जा सकते हैं, किये जायें, ताकि ज्यादा से ज्यादा आंदोलियों को इन विरोधी प्रदर्शनों में लींचा जा सके.

अन्तिम मुख्य दिन की तैयारी सब लगातार धूम्रंधार प्रचार, मीटिंगों और जूलसों पहिले ~~क्रिया~~ से ही व्यापक पर्वे बाज़ियों से होनी चाहिये, जहां खुली ~~बाटिका~~ मीटिंगें नैर ज़ाननी कर दी जायें वहाँ पर्वे बाज़ी, बस्ती मीटिंगों आदि का संगठन किया जा सकता है.

यह सब इस मन्शा से कि जनता का जोश उभारा जाय, और अन्तिम दिन <sup>मा</sup> उससे पहिले पाबन्दियों को तोड़ते हुए आम मीटिंग की जाय.

मीटिंगों में पाबन्दियों के बावजूद पोस्टरों, बस्ती मीटिंगों व्यापक पर्वे बाज़ी आदि के ज़रिये हफ़ते की धूम्रंधार तैयारी की जाय, और सब वातावरण तैयार किया जाय जिसमें आम सभा किये जाने के लिये जनता को उसमें भाग लेने के लिये लाया जा सके, ताकि विधान के खिलाफ़ प्रदर्शन हो सके.

जब हम यह सब को ने हमारा दुश्मन चुप बैठा नहीं रहेगा, हमारे हास्ते में हर प्रकार के रुकवटें डाली जायेंगी, गिरफ़्तारियां, धमकियों आदि काम में लाई जायेंगी यदि हम जैसा कि कलकत्ते के अनुभवों ~~से~~ दिखाया, यह जानते हैं कि जनता से अपील किस प्रकार की जाती है, सरकारी पाबन्दियों के माने हो जाती है और नैर ज़ानूनियत चल नहीं पाती.

लामुहल्ला या तो प्रचार आन्दोलन के दौरान में या 26 जनवरी को प्रदर्शन करी जनता और पुलिस के बीच टक्कर हो, क्यों कि पुलिस सरकार के हर प्रकार की आलोचना को कुचलने पर तुली है, ऐसे मौकों पर निर्भीक कार्य नीति अपनानी चाहिये, ऐसी कार्य नीति जो जनता के उठते/उभार/स्तर के मुताबिक हो, और विधान के खिलाफ़ अपने प्रदर्शन करने के हक हक का पूरा उपयोग करने पर ज़ोर दिया जाय, यदि संघर्ष ऊंचे स्तर पर उठजाय उसके लिये जो कुछ आह्वान आदि देने हैं के दूसरे पर्वे में दी गई है जिस को स्थानीय कमेटी के नाम

से जारी किया जायें, यदि परिस्थिति इतनी परिपक्व हो जाय कि या तो <sup>उप</sup> नगरों को विधान विरोधी संघर्ष के सीधे अनुभवों के फल स्वरूप कार्यन्वित किया जासके या उनका प्रचार किया जा सके, ऐनिक नगरे परिस्थितों के अनुकूल ही दिये जाय, आरम्भिक और शुरु आत का नगर नम्बर व्यापक हड़ताल, प्रदर्शन, जूलस आदि है.

हमारी संचारित और एकत्रित करने की क्षमता इन बातों पर मुनहसिर कर ती है:

1. हमारे संगठन ~~का~~ के ज़रिये और योग्यता, 2. और हमारे प्रचार आन्दोलन का करगर होना, प्रचार आन्दोलन के आम लखन घोषणा पत्र में दी गई है और उसे अच्छी तरह समझना और उनके अनुसार काम करना चाहिये.

कुछ बातों पर फिर भी ज़ोर देने की ब़सब ज़रूरत है.

1. विधान और नेहरू सरकार का पदार् फ़ाश बढ़ते हुये संकट के साथ सम्बन्धित होना चाहिये, वेतन में कटौती, मिलों और फ़ैक्टरियों की ताला बन्दी और आम बेरोज़गारी, विधान इन्ही को बहाल करता है और कुछ नहीं.
2. विद्यार्थियों या मध्यम वर्ग के लोगों की सभा या उन के नाम अपील आदि में मध्यम वर्ग की ज़ास तौर पर विगडती आर्थिक हालत, बेकारी और, शिक्षा पर हमले आदि, का ज़िक्र करना चाहिये, देव (यंग गार्ड न० 1 के लेखों को इस कबरे बारे में देखो) और यह बकबकबक बताना चाहिये कि इस विधान के क्या माने हैं, यह विधान खासतौर पर शिक्षा के हक की



स्त्री

नहीं रखी जा सकती, उसे वहाँ जावते के तौर भी दुनियादी हज़ों में नहीं माना है, यह शासकों की मज़ी पर छोड़ दिया गया है,

3. श्रमिकों के बारे में, एको काम के लिये बराबर वेतन, यह जावते के तौर पर भी दुनियादी हज़ों में नहीं माना गया है और इस मामले को शासकों की मज़ी पर छोड़ दिया गया है

4. मुसलमानों और ब्रह्मों ब्रह्मण्य ब्रह्मण्य ब्रह्मण्य के बारे में खास जिक्र करना चाहिये और उसे पूरी तरह समझाना चाहिये, यह आवश्यक है कि वर्ग-एकता कायम की जाय, मज़दूर वर्ग को सभी दलित तबकों के हिनायती की हैसियत से-अल्पमत की जनता के हिनायती की हैसियत से-अग्रे आना चाहिये. कानपुर, बम्बई और कलकत्ता जैसे जगहों पर अल्पमत जनता का जिक्र खास तौर पर ब्रह्मण्य का जिक्र बहुत आवश्यक है. इस प्रकार के भेद भावों को वर्ग एकता को ताड़ने की कोशिश कह कर पदार्पण करना चाहिये.

5. हिन्दी बोली वाले इलाकों में, हिन्दी के दूसरे ज़ौनों पर लादने के माने समझाते हुए भेदभावों में फूट डालने और दूसरी छेड़ ज़ौनों को दबाने की कोशिश का पदार्पण करना चाहिये.

6. बिहार, उड़ीसा, आसाम आदि में आदिवासीयों की समस्या को अच्छी तरह समझना चाहिये और आदिवासीयों को मज़दूर वर्ग की एकता की दृष्टिकोण आवश्यकता को समझाना चाहिये. यह मांग कर रखनी चाहिये कि आदिवासीयों के इलाकों में जिन्हें व्यापारिक संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण हुआ है उन को उन स्थानों के रहने वालों के हार्थों में सौंप देना चाहिये.

और मुख्य चीज़ जो इस विधान की है वह है इसका वर्ग स्वरूप, इसका राष्ट्रीय गुलानी, का स्वरूप. यह मुख्य चीज़ है. जिस पर हर मीटिंग, माण्डण और पर्ची में जोर देना है. इस विधान के पदार्पण करते समय इसका राष्ट्रीय नज़रिया, कि यह राष्ट्रीय गुलानी का विधान है नहीं पूलना चाहिये. यह विधान की निन्दा करते में एक बहुत ब्रह्म बात है. इसका कामयाबी से पदार्पण करने के लिये, पिछली, हाल की घटनाओं के हवलों का इस्तेमाल करना चाहिये जैसे कामनवेल्थ में शामिल होना, काश्मीर की समस्या और अमरीका की चाकरी, जेके अभी हालतक अर्थिक चीन को मान्यता देने से इन्कार अमरीका का बढ़ता हुआ आर्थिक प्रभुत्व इत्यादि.....

और आखिर में यह कि इस विधान का वर्ग प्रभुत्व/हिसाब की हैसियत से पदार्पण करने के लिये सोवियत विधान की धारों का कंग्रेसी विधान की पार्श्वेन्डी धारों का दृष्टिकोण के मुकाबले कर रखना चाहिये. प्रान्तीय कमेटीयों को, आम मेश्वरों को इस दिशा में मदद करनी चाहिये.

विधान के पदार्पण के साथ साथ हमारी मांगें भी आनी चाहिये, ज़मीन, गुज़ारे लायक वेतन, राष्ट्रीयकरण आदि. इन मांगों को हासिल करने के लिये तैयारगार का ही रास्ता है इस बात पर ज़रो देना चाहिये.

अपनी ताकत पर ज़मीन कठ पर ज़ुज़ार, अपनी ताकत से अपने हज़ों को हासिल करना, हथियार बन्द संघर्ष के ज़रिये. हज़ों को हासिल करने के बाद हम उन्हें विधान में लिखें. इस प्रकार जनवादी जनतांत्रिक राज्य के प्रश्न को उठाओ, जहां सत्ता भेदभाव कह कश के हाथ में होगी. मज़दूरों और किसानों की सरकार-गर्वों में रखने का जन प्रिय तरीका-और जन प्रिय जनतांत्रिक मोर्चे के प्रश्न को सामने लाओ, जिसका आधार मज़दूर, किसानों का मेल होगा और यही इसको हासिल करने का हथियार होगा.

तैयारगार में हथियार बन्द बहादुराना संघर्ष, ज़मीन और आज़ादी के लिये संघर्ष बहादुर किसानों के संघर्ष जिनका केवुठ नेतृत्व पार्टी का रक्षि है, संघर्ष जिसकी प्रति धनि काश्मीर में मिलती है, अवश्य ही प्रसिद्ध और जनप्रिय बनना चाहिये, और यह कि जनतांत्रिक विधान का यही तरीका है. हमारा नारा होना चाहिये, हम ताकत से दमन कारियों को खत्म व का ज़मी पर ज़ुज़ार का आदि छेड़ छेड़ के बाद अपना, विधान तैयार करेंगे. हमारे नारे



के प्रश्न के <sup>द्वारा</sup> हलने चाहिए.

लेखन के बारे में सम्झने लिये हमें जमान पर कब्जा करने और लड़ाई जो उन्हें करना पड़े उसके बारे में वास्तविकता पर प्रचार करना चाहिए, न कि वह निराधार वहादुरी का बखान मात्र रह जाय.

और अन्तिम में, विधान की निन्दन यह कह कर की जाय कि इसके बनने वाले युद्ध खार है जो सोवियत यूनियन के खिलाफ, चीन के खिलाफ युद्ध की मांगिश रच रहे हैं.

यह सफ़्त है कि ये सब बातें एक ही वक्ता द्वारा या एक ही पक्ष में नहीं रखी जा सकती. हमें लिये ये अलग अलग भाषणों या अलग पक्षों में रखी जानी चाहिए. लेकिन इन सबों में मुख्य बात रहनी चाहिए वह है, इस विधान का कर्कश स्वरूप, इस विधान के राष्ट्रीय गुलामी का स्वरूप.

ज़िला समेटियों या स्थानीय यूनिट वगैरह मिलसिले वगैर कर्कश पक्ष निकाल सकते हैं जिन में वे उपर लिखे हुए विभिन्न पहलुओं को लें और जनता के गुस्से को उभारें.

विधार्थियों और मध्यम वर्ग में, वाद विवाद और बहस आदि का संगठन किया जाना चाहिए, जिस में हमारे वक्ता विधान के विभिन्न पहलुओं को का अध्ययन कर अपने भाषणों को तैयार करें.

बहुत बड़ सी जाहों में, उद्योगिक जलकों व दूसरे जलकों में, यह सम्झना नहीं सके कि हम विरोध हड़ताल करवा सके ऐसी जाहों पर मुख्य जोर देना चाहिए. यहाँ तक कि जहाँ पर हमारा अक्रम असा है बहुत बड़ी तादाद में सभी मजूदों को विरोध हड़ताल में लाने में सक्षम बना सक्ती है.

ऐसी परिस्थितियों में विरोध के ऐसे स्वरूप इस्तेमाल करने चाहिए जिस में हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को इकठ्ठा कर सकें, यानी मीटिंग, जूलम इत्यादि. एक बड़ी आम सभा, एक बड़ा जूलम-ये मजूदों में जहाँ तक विश्वास बढ़ाने में सक्षम हो सके विरोध के अक्रम हाथियार है. हमें यह बात सम्झनी है कि अक्रम में विरोध प्रदर्शन का वह तरीका इस्तेमाल करना चाहिए जिस से हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को विरोध में लाने में सफल हो सकें.

अपने भाषणों में हम को सक्षम तरीके से सोशलिस्टों का पदार्कण करना चाहिए जैसे धोखापत्र में किया गया है और उनका मन्डार फाड़ यह कह कर किया जाना चाहिए कि ये वे लोग हैं/मजूदों और आम जनता को धोखा दे रहे हैं कि वे पूजोपतियों के इस विधान को बच स्वीकार कर लें.

साथ ही साथ हम को एकता के लिये कुठकठक पूजोपर अहवाल करना चाहिए, सोशलिस्टों के अक्षर की जनता से अपील करनी चाहिए इस राष्ट्रीय विधान के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनायें, मजूद वर्ग के साथ एकता कायम करें.

हमारी मजूद वर्ग के एकता के संघर्ष का सोशलिस्टों को पदार्कण और मन्डार फाड़ करना एक अभिप्रेत है. और हम को इस एकता को मजबूत बनाने की अपील करना अभी न भूलना चाहिए.

हम प्रांतीय समेटियों को यह देखना है कि उनके नेतृत्व में जितनी भी यूनिट हैं वे अपने को आम में जुटा देती हैं और इस विधान विरोधी मुज्राहियों को अपनी पूरी ताकत से संगठित करती हैं. सब प्रांतीय समेटियों और यूनिट यह ध्यान रखें इस मन्डार पर हम चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा जनता-मजूद वर्ग, इस विरोध प्रदर्शन में हिस्सा ले कि हमारी कार्य नीति इसी वीज को ध्यान में रख अपनाई जानी चाहिए. और हमने अग्रिम संघर्षों द्वारा जो शक्ति प्राप्त की है/उस को संचारित करने में पूरी ताकत कामयाब हों.

सभी प्रांतीय समेटियों को आदेश दिया जाता है कि 26 जनवरी से 2-3 हफ्ते के अन्दर इस आन्दोलन की पूरी रिपोर्ट केन्द्र को भेजें. रिपोर्ट का मतलब अभी तक में नहीं है उसे मद को भी भेजी जासकती है. रिपोर्टों में ध्यान देने लुक्क मुख्यतया: हों जैसे आन्दोलन के दौरान विभिन्न स्थानों में मीटिंगों की संख्या, उनमें हिस्सा लेने वाली जनता की संख्या,



विरोध के स्वरूप आदि और इसके साथ साथ पर्वे हों इस बात की इत्तला हो कि किन तत्वों को ऐक्शन में उतारा गया. केन्द्र चाहता है कि वह मरती से इस बात की चेक करे कि ये आदेश किस हद तक जायन्वित किये गये और इस प्रकार यह मालूम करना चाहता है कि उसकी जनता को संवारित करनेकी शक्ति कितनी है.

प्रान्तीय क्रमेटियों को यह भी ध्यान रखना चाहिये कि यह आदेश कि आन्दोलन की वाक्यवली रिपोर्ट जो केन्द्र द्वारा तय की गई हो और प्रान्तीय आन्दोलनों की रिपोर्टें जो कुछ प्रान्त द्वारा ये की गई हो, ये हमारे आदेश हमेशा के लिये माने जाये. इस प्रकार के ~~कठक~~ आन्दोलन की रिपोर्टें फ़ौरन भेजी जाय.

प्रान्तीय क्रमेटियों को कहा जाता है कि वे इस आन्दोलन के संगठन में जन संस्थाओं की न मूला जाय. जन संस्थाओं को काम में जुटा कर सक्रिय बनाना चाहिये, विधान विरोधी दिवस को उनकी कार्य क्रमियों की बैठक करे, पुस्तक पास करे, और पर्वे निकाले, पूरे जन संस्थाओं के प्रजातंत्रिक यंत्र को इस मुहिम को संगठित करने के उपेक्षाल करना चाहिये.

प्रान्तीय क्रमेटियों को आखिरी दिन के लिये सही पुस्तक का मसौदा भी भेजने चाहिये या पूरे मुहिम के दौरान के लिये एक मसौदा भेजना चाहिये, जिस में विधान की निन्दा की जाय. इस बात की घोषणा की जाय कि विधान बनाने वालों को जनता की आज्ञा नहीं मिली है, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य शाही की हिदायतों के मतहत काम कर रहे हैं. यह विधान स्वीकार नहीं किया जासकता, कि यह वापस लिया जाय, और यह कि जनता ऐसा विधान की मांग करेगी है जो राजैतिक पुस्तक में दी गई है, मर्गों के आधार पर बनाया जाय.



# नेहरू-पटेल विधान

और उसके खोखले

प्राजातंत्र की चूर चूर करेगी

तक गाना का राह आगे बढ़े

मजदूरों, किसानों, विद्यार्थियों, मध्यवर्ग के दलित व्याक्तियों, हिन्दू, मुसलमानों और अछूतों, इस विधान में किसी प्रकार के संशोधन की गुंजायश नहीं। इसको तो हमेशा के लिये स्वतन्त्र करना होगा। इस फार्सिस्टी विधान के खिलाफ जनता के संघर्ष करने के लिये तुम वीर बन जाओ। और अपनी स्वतन्त्रता, अपनी आजादी के लिये दबता से लड़ो। बंधु जनता की इस लौहानका मुंह लौट जावस दो। पूर्ण स्वतन्त्रता, मुकम्मिल आजादी और जनता के राज के लिये कुर्बान होने वाले शहीदों को धार को अर्पित करने वाले इन क्रांतियों के खिलाफ पूरे गुस्से में उठो। अपने इस विधान को लागू करने के लिये इनकी इस पुलिस और फौज को हथकड़ा में इस दो धड़ी की बानोशाकत के इस दुम्हादिहाना लमाहो के खिलाफ प्रदर्शन करो। मुजाहिद करो। इस विधान और इसके बनाने वालों की निन्दा, भन्दा फाट करने के लिये लाखों बड़े बड़े मुजाहिद करो।

आजादी, अमन और जनता के राज के लिये लड़ने वालों, इस विधान की जंजीर जो तुम्हारे ऊपर लौटा जा रही है उसके टुकड़े कर दो। हाथ और पिडला के इस विधान को निचोड़ उठा दो। यह विधान जिस पर अंगरेजों के जुल्मों की छाप लगी है हुई है, जो गुलाम बनाने वाली अमरीकियों के सामने माया खड़ना है उसको गहरा दफना दो।



यह विधान तुम्हारे हकों को तुमसे लूटता है, इनका है, इनकी रक्षा करो। इसके जोड़े तुम्हारे ऊपर जो भी बंधने, पकड़ने का काम ~~करेगा~~ ~~करेगा~~ जो प तुम्हारे अग्रणी हकों को तब तक से पूरे चूर कर दे। यह तुम्हारे हड़तालों पर रुक जागता है। इसके जुबान इस गाँव की लोके से दो जिसमें टाटा विडका और उसके सभी बच्चे बच्चों को ष डुंजा है। यह तुम्हारे अरववारा, मीटिंगों और प्रदर्शनों पर रुक जागता है। अपने गैरकानूनी अखबार निकाल कर, दफा 988 की जंजीरों को तोड़ कर, अस्मिता और कानून के पहरेदारों को अपने काँच और सहानुभाव के उपेक्षा से सांगत पर मजबूर कर दो। यह तुम्हें इंधिया बंद धारा के हक से बंधित - महकूम - रखता है और तुम्हें अपने किराये के दूधों और मवादल के उगों से बंधाव, बिना किसी मुनाफे के मरत पर बंधे कर देता है। इनके क हकों से इंधिया रुकनेकर, साधारण पुनर्स्था और फौज के लोगों को अपने पक्ष में लेकर और जो भी इंधिया, हॉथ पंड उससे ही अपना बचाव कर इनका इन करतूतों का जवाब दो।

यह तुम्हारे गुजर लायक पतन और नौकरों के हक को नहीं मानता। पंडो 2 हतालों और संघर्षों के जोड़े उसके पैदावार और मुनाफे को हथ कर दो। और अपनी सांग हासिल करो। यह तुम्हारे जमान और फसल पर हक को नहीं तत्पर्यम करता। इन पर कब्जा करो और उनका इन्कारों का बेमानी और बेअसर बना दो। यह तुम्हारे गाँवों में जमींदारों और जातदारों को हक राज कायम करता है। हजारों की लादाद में उह खूड ही और उह गाँवों से बाहर खूड दो। और उनका जमान जायदाद को जनता के इस्तेमाल के लिये खूबत कर लो।

इस विधान और इसके खोखले प्रजातंत्र से अलग आजाद इलाकों को कायम करने को और आगे बढ़ो।

इस विधान के खिलवाफे कायसी राज जो तुम्हें मारो जंजीरों से बंधने का कोशिश में है के खिलवाफे अपने संघर्षों को एक नैज धारा में बदल दो।

निडर हो कर इनके खिलवाफे आगे बढ़ो। जनता में इनका कोई सटनार नहीं। इनका जनता से उरलगत है।



हालांकि वे रीड़ियो और अखबारों जा उनके जर खरीद हैं के जरिये  
 अपने जनवादी विधान का लगातार प्रचार कर रहे हैं। लेकिन  
 उनका यह हिम्मत नहीं होती कि इसे जनता की राय के  
 लिये सामने लाये और जनता की राय मांगें, क्योंकि वे  
 जानते हैं कि जनता इसको अवश्य ही ठुकरा देगी। अब वे  
 अपने विधान के उद्घाटन में जनप्रिय तैयारी करने हैं वे  
 जनता के सामने बिना फौजी बरतों को हिराजत में रहे  
 बिना अपनी ~~कौड़ी~~ हिंसक फौजी ताकत का प्रदर्शन  
 किए जाने के हिम्मत नहीं करते, क्योंकि वे अच्छा तरह जानते  
 हैं कि जनता उनके और उनके विधान से नफरत करती है। अब  
 वे अपने वहिंशयान हिंसक शक्ति का प्रदर्शन करने हैं और  
 भारत पर अपनी तानाशाही का ढोपछा करत हैं, तैलंगाना  
 और काक द्वीप के नाम से उनके कपकप बंध जाती हैं।  
 जब जनता को शक्ति ने उनका आजाजी का चलना नामुमकिन  
 कर दिया है जहां उनके खूबों हमलों के वार श पड़े होने के  
 लिये मजदूर किया गया है, यह जल्दा अपने तैप जालों  
 और बंधुको को हिराजत में उठे हुए मी तैलंगाना और काक-  
 द्वीपको तस्वार सामने आते ही देखल जाते हैं। क्योंकि वे  
 अच्छा तरह जानते हैं कि हजारों तैलंगाना बनने जा रहे हैं और वे उन्हें  
 रोक नहीं सकते।

तैलंगाना के रास्ते पर आगे बढ़े, क्योंकि तैलंगाना आज  
 जनता की सत्ता, जनता को विधान का रास्ता साफ करता है। क्योंकि  
 20 लाख आदिमियों ने इन आत्मियों की सत्ता को अपने बीच लहरा  
 दिया है और वे दिन पर दिन अपनी सत्ता के इलाकों को फैलाते जा रहे हैं।  
 उन्होंने उनके दमन कारियों को अपने से खदेड़ बाहर किया है। उन्होंने मजदूरों,  
 स्वत मजदूरों, किसानों और नीलत मध्यम वर्ग को रूका कार्य में किया  
 है। उन्होंने उनके दमन कारियों को अपने से खदेड़ बाहर किया है और  
 उनकी सम्पत्ति खूबत कर ली है। उन्होंने लाखों एकड़ जमीन पर  
 काब्जा कर लिया है। और उसे किसानों और मजदूरों में बाँट दिया  
 है। उन्होंने स्वत मजदूरों को बेहतर जिन्दगी को आश्वासन  
 दिया है। दुज्जन को जो लोत बारी हाने हुए उन्होंने स्कूलों का  
 संगठन किया है और जनता को सांस्कृतिक सुविधाओं दी हैं।  
 उनका मुहनों से अंधकार और अज्ञानता में ढकेल दिया गया  
 था। उन्होंने जो मी हाथियार मिल सक हैं जनता को दिये हैं  
 और जनता के फौज को बुनियाद डाल दी है जो आज काँग्रेस



कांग्रेस राज द्वारा उनको कुचलने के लिये मर्जी गई हजारों पुरी  
 तौर पर लंटे पुलिस और फौज को अपने से दूर रखते हुए हैं।  
 उन्होंने मजदूर वर्ग को अजय कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन किया है जो क्रादुरी  
 और बुद्धिमानों से उनके संबंधों में उनका ने चरख करती है। और इस बात  
 को काँग्रेसले यकान और मरोसाकुन गारुष्टी को है वं नाव्यामकमी गरी होगी।

आगे बढ़ो, जनता का जनानिक राज कायम करने और  
 जनता का विधान बनाने जिसमें सना मजदूर वर्ग के ने चरख  
 में गहनतकश जनता के हाँथ में हो। जहाँ जमीन और कारखाने  
 जनता को सम्पाते हैं और जनता को भोजन, रहने के लिये जंगल,  
 शिक्षा और सरकारी, शान्ति और आजादी मिले। सभी प्रकार  
 के शोषण का स्वात्मा कर समाजवाद को स्थापना के लिये  
 आगे बढ़ें।

**आगे बढ़ो** काँग्रेस द्वारा मुल्ामी और  
 फ्रांसिस्टो विधान के लाद जाने  
 के खिलोफ लडने के लिये।

इस विधान के रद्द करने की मांग के लिये सब एक हो।  
 जनता के राज्य को विधान को मांग करे और उसे कायम करे।  
 मजदूरों, किसानों, स्वत मजदूरों, दलित मध्यम वर्गी लोगों, विद्यार्थी,  
 औरतों का प्रजातांत्रिक संयुक्त मोर्चा कायम करने के लिये,  
 इमानदार और बेसमत्तों का महान शक्तिशाली मोर्चा  
 काँग्रेस द्वारा फ्रांसिस्टो विधान के लाद जाने के  
 प्रयत्नों को हराने, सोशलिस्ट नेताओं के विश्वा-  
 सदात को परास्त करने और पूर्ण विजय  
 हासिल करने के लिये **आगे बढ़ो !!**



The U.P. Committee of the Communist Party of India has sent the following message to the First Provincial Conference of U.P. Railway workers:

" The U.P. Committee of the Communist Party of India sends its warmest revolutionary greetings to the First Provincial Conference of U.P. Railway workers now being held at Lucknow.

It greets this historic Conference being held in the heart of railway workers of Lucknow, who have been among the first in India to organise themselves, and who have proud traditions of struggle.

Railway workers in U.P. have fought heroic and determined battles along with their fellow railwaymen in India against the vicious attacks of the Congress Nehru -Patel Government of Birla-Tata and their American and British masters on their living standards and trade union and political rights. U.P. Railwaymen gave ~~their~~ their unmistakable verdict for General Strike on March 9th last year, and have continued their battles despite all attempts of the Nehru-Patel Government to suppress them through police and military terror and victimisation.

Railway workers in U.P. have disowned the traitors Gurswami, Jai Prakash and their henchmen, who betrayed them on March 9th. and have repeatedly betrayed them, acting as agents and police informers of the Capitalist Government.

Railwaymen, led by their firm militant Unions, the S.I.R., G.I.P., E.I.R.R. Workers' Union and others, have disowned the treacherous Federation led by J.P. & Co. and have formed the All India Union of Railway Workers, which guarantees that new railwaymen have a firm and reliable All India organisation to lead their struggle, and in which opportunists, vacillators and traitors can play no part.

We greet your historic Conference which is a further expression of your firm determination to carry forward your battles for a living wage, security of service, no retrenchment, no compulsory Savings Fund levy, release and reinstatement of all railway workers and other class struggle political prisoners, ~~and~~ repeal of all repressive, anti-working class laws and the reactionary anti-~~the~~ toilers Constitution, establishment of ~~of~~ a genuine Peoples Democratic Government and World Peace.

The Communist Party salutes railwaymen who have fallen as martyrs in the great struggle of the working class, greets all brave railmen behind prison bars, firmly supports all the demands of railwaymen and pledges to fight for them. It pledges to work still harder to mobilise all workers and other toilers in your support, who are to-day fighting with the same determination and courage against the same class enemy. It is confident that this Conference will take historic decisions, to ensure that U.P. railwaymen shall ~~take~~ play their full part in the great revolutionary battles of the Indian working class, peasants and other toilers, and ensure their victory. "



The U.P. Committee of the Communist Party of India has sent the following message to the First Provincial Conference of U.P. Railway workers:

" The U.P. Committee of the Communist Party of India sends its warmest revolutionary greetings to the First Provincial Conference of U.P. Railway workers now being held at Lucknow.

It greets this historic Conference being held in the heart of railway workers of Lucknow, who have been among the first in India to organise themselves, and who have proud traditions of struggle.

Railway workers in U.P. have fought heroic and determined battles along with their fellow railwaymen in India against the vicious attacks of the Congress Nehru -Patel Government of Birla-Tata and their American and British masters on their living standards and trade union and political rights. U.P. Railwaymen gave ~~xxx~~ their unmistakable verdict for General Strike on March 9th last year, and have continued their battles despite all attempts of the Nehru-Patel Government to suppress them through police and military terror and victimisation.

Railway workers in U.P. have disowned the traitors Gurswami, Jai Prakash and their henchmen, who betrayed them on March 9th. and have repeatedly betrayed them, acting as agents and police informers of the Capitalist Government.

Railwaymen, led by their firm militant Unions, the S.I.R., G.I.P., E.I.R.R. Workers' Union and others, have disowned the treacherous Federation led by J.P. & Co. and have formed the All India Union of Railway Workers, which guarantees that now railwaymen have a firm and reliable All India organisation to lead their struggle, and in which opportunists, vacillators and traitors can play no part.

We greet your historic Conference which is a further expression of your firm determination to carry forward your battles for a living wage, security of service, no retrenchment, no compulsory Savings Fund levy, release and reinstatement of all railway workers and other class struggle political prisoners, ~~xxx~~ repeal of all repressive, anti-working class laws and the reactionary anti-~~xxx~~ toilers Constitution, establishment of ~~of~~ a genuine Peoples Democratic Government and World Peace.

The Communist Party salutes railwaymen who have fallen as martyrs in the great struggle of the working class, greets all brave railmen behind prison bars, firmly supports all the demands of railwaymen and pledges to fight for them. It pledges to work still harder to mobilise all workers and other toilers in your support, who are to-day fighting with the same determination and courage against the same class enemy. It is confident that this Conference will take historic decisions, to ensure that U.P. railwaymen shall ~~xxxxxxxxxxxx~~ play their full part in the great revolutionary battles of the Indian working class, peasants and other toilers, and ensure their victory. "



रुजूजा रवेत-मजदूर कामक्रोस में जाया हुये  
खेत-मजदूर हमधियों को

# कम्युनिस्ट पार्टी का क्रांतिकारी संदेश

हम हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी की

सब क्रांतिकारी कामेती की ओर से आपकी इस कामक्रोस से सार्थक आंध  
कर लोहा सहान पोखे है। भारत तमाम सूबे के खेत-मजदूर, जिस  
बहादुरी के साथ अपने वर्ग शत्रुओं, जमींदारों, धनी किसानों, पूंजीपतियों  
और उनके गुंडों, और ब्यापारी करने वाले और इनकी सपरस  
प्राप्ति हुकूमों और इनकी पौज और रक्षा दलों की गोलियों,  
गांडियों और जेलों का मुकाबिला करते हुये अपनी शेजी, शेरी  
और जमीन और आजादी को लड़ाइयों में भागे गया है। उले  
देख कर हमारे दिल जोर और जोरब से फूटे हुये हैं। आपकी  
लड़ाइयों में लड़ लिख तेजी के साथ बक रही है उले देख  
कर यह निश्चय-पूर्वक कहा जा सकता है कि नो सूबे  
और नो देश के एक 2 रिक्ते में झा कर रहेगी। अब मजदूर  
के मोली संड प्राप्तो तक नहीं सकती। एक 2 जीत हासिल  
कर आप विजय की आखिरी मंजिल तक बढेगे। और शेज 2  
हर झा पर बोलवाये हुं क्रांतिकारियों से सरासर पागल गुत्तों  
की तरफ आकती रह जायेगी।

आप की लड़ाइयों के पिछले दो सालों  
ने साबित कर दिया है कि गांवों में जितने खेत-मजदूर, पौनी  
परजा, बड़ई, लुहार, कुम्हार, गांड, धोबी, कडाए और दूसरे गरीब  
और मध्यम किसान मुहुर से जमींदारी, साम्राज्य-वादी और  
पूजीवादी जुल्म की चाम्की में पिसते चले आ रहे हैं वे उहोंने  
आपकी रहनुमाई में तमाम अत्याचारियों को लहकार दिया है।  
यब आपका आगे बढ़ना है। गांव के तमाम गरीबों और  
मध्यम किसानों का हका बना कर मजदूरों, किसानों और  
दूसरे शोषितों का राज बनाना है।

आपको कामक्रोस का काम है कि:-

2) सूबे के तमाम खेत-मजदूरों की पौनी  
और मुनिगादी संजो के ऊपर उठायें और उनके लिये लगी  
फैसलें लें।

3) सूबे की रहनुमाई करें और सबाई-  
संगठन खड़ा करें।

4) जनक्रांति के अगुवा मजदूर वर्ग की

जमात देह युक्तिवत संगठन से अपना नाता जोड़ें। और इस तरह  
आपने वर्ग शत्रुओं पर आखिरी मोट देने के लिये सूबे पर के खेत-  
मजदूरों की आग हडताल का नारा बुलंद करें।

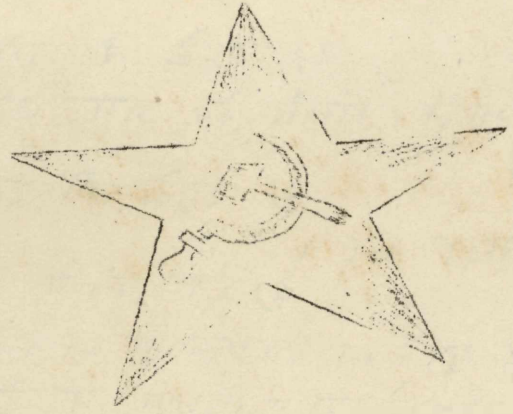
आप इन्हीं कामों के लिये बकड़ा हुये हैं।



इसके लिये हमें कम्युनिस्ट पार्टी को और से आपका अभिनेतृत्व करते हैं।  
आप जानते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी मजदूर जमात को सर्वोच्च धारणा रखती  
है वह मजदूरों, गरीब किसानों, मध्यम किसानों और तमाम औद्योगिक  
वर्ग को जनतावादी और समाजवादी क्रान्ति के लिये रहनुमाई कर  
ती है।

शान्तिराज रूप के नेतृत्व में दोनों के  
तमाम देशों में मजदूर और गरीब किसान अपने राज बना रहे हैं। पूर्वी  
यूरोप के देशों में और चीन में उनकी हुकूमत कायम हो चुकी है।  
हिन्दुस्तान के चारों ओर एक्टिव हिन्दुस्तान में मजदूरों और गरीब  
किसानों को होसिया हथौड़ा तमाम से आगे बढ़ रहा है। इस देखकर  
पूँजीपतियों, सामंतों और जमींदारों और उनकी सरकार के अहितन  
होने पड़ गये हैं। इसलिये कम्युनिस्ट पार्टी को अतर्ककारिस्ट नीती को  
पहला विकार बना रहे हैं। लोकन कम्युनिस्ट पार्टी के पर जनता में जस पुके है।  
उस लुटेरों को ताकतें परास्त नहीं कर सकती। कम्युनिस्ट पार्टी पर किया जाने  
वाला स्क्र 2 हमला तमाम मेहनतकशों तक को पर कंधों जिनवाला हमला है। सोरे  
हिन्दुस्तान में तमाम मेहनतकशों तक को एक होकर उसका जनात दे रहे हैं। कम्युनिस्ट  
पार्टी पर किया जानेवाला स्क्र 2 हमला लुटेरों की हतो पर एक शरीर है कलहूस  
या है। अब लुटेरों पराशा - यूनिटाट और सामल्लवाट का जनाजी निकलाने  
वाला है। तलंगाना तुम्हें रास्ता बतवा रहा है। चलो! कम्युनिस्ट पार्टी के  
रहनुमाई में तलंगाना के हास्त पर आगे बढ़ो। फलतह तुम्हारी होगी।

काल सतमाम





# لاٹھی گولی کی سرکار کو عوام کا جواب

عوامی تحریکوں کو اور تیز کرو۔ ۱۹ فروری کو تشدد مخالف دن منگا

ہندوستانی کمیونسٹ پارٹی کی صوبائی کمیٹی، صوبائی ٹریڈ یونین کانگریس، صوبائی کھیت مزدوروں کی صوبائی کسان سبھا، صوبائی اسٹوڈنٹ ڈسٹریکشن، ترقی پسند مکتبہ، ہندوستانی جین سائیکس اور صوبائی انجمن برہمنوں کی طرف سے ایسے لکھا بیان دیا گیا ہے۔

۲۶ جنوری کو ٹیڈ ایم ایف پیو (ایف پیو) میں یونین کا تبادلہ کرتے ہوئے شہادت حاصل کرنے والے سابق سیکرٹری گو انڈیا اسلام پیش کرتے ہیں۔ ہم ان تمام مردانہ صورتوں کو جس سے سارے تبادلہ پیش کرتے ہیں جو بہادری اور یونین گولیوں سے متاثر کر دئے گئے یا گرفتار کئے گئے تھے۔ کھیت مزدوروں کی پہلی صوبائی کانگریس پر کئے گئے حملے تمام مزدوروں اور محنت کشوں کے گھٹے اور نفرت کو اجاگر دیا ہے۔ اس حملے کی نفرت کیجا رہی ہے اور ایسا تبادلہ مزدور اور تمام محنت کش عوام دیکھے اور دے رہے ہیں۔

پچھلے کچھ برسوں میں اور خاص طور پر دسمبر اور جنوری مہینہ میں صوبہ کے محنت کش عوام کی کئی تنظیموں پر ہونے والی لڑائیوں سے پوکھلا کر گولین کی کوشش میں بندھ کر ہمارے صوبے کے عوام کے خلاف فاشسٹی ظلم کا راج قائم کر دیا ہے۔

شمالی دھاروں کے تشدد پر جیل کر ڈھ کمیونسٹ پارٹی، عوامی ٹریڈ یونینوں، کھیت مزدوروں اور کسان تنظیموں اور ہندو جی اے اے کے ساتھ نشانہ بن رہی ہیں۔ اور اس کام میں انڈیا اور سوویت یونین اور ان کے نزدیک مزدور رہ رہی ہیں۔

26 اور 27 دسمبر ۱۹۴۶ء کو کلکتہ میں جو صوبائی کانگریس ہوئی تھی۔ اس کے نتیجے میں متفقین کو لیا اور مزدوروں کی کمیٹی میں ہندوئی پر دھرم پر بندش لگادی گئی۔ ۱7 جنوری کو اگر ۵ میں اسٹوڈنٹ ڈسٹریکشن کی ۳۵ سے بھی زیادہ ڈیلیگیٹوں کو گرفتار کر لیا گیا اور کانگریس کو

۲۰ اور ۲۲ جنوری کو ریوے مزدوروں کی جو پہلی صوبائی کانگریس ہوئی تھی اس میں سوشلسٹ اور ایف کے کے صدر نے گولین کی گولی اور ۱۷ ڈیلیگیٹ اور متعلقین گرفتار کر لئے ان گرفتار کئے گئے لوگوں میں صوبہ کے صدر بھی شامل تھے۔ 26 جنوری کو یونین کے بیلہ میں صوبائی کھیت مزدور کانگریس کے ڈیلیگیٹوں پر حملہ کیا اور قریب ۴ خاص متعلقین کو گرفتار کر لیا۔ کمیونسٹ پارٹی کے ذریعے گئے آئی اے مخالف مظاہروں کے ساتھ خانہ بوری، آفٹیم گڑھ اور دھرم جیسا ہونے پر بہت سے کمیونسٹ کارکن گرفتار کر لئے جن میں مورس بھی شامل ہیں۔

کو جب کلکتہ کی آر۔ جی کاشن مل کے مالکوں نے سات سو مزدوروں کو بیٹھوں کا اشتعال بنایا تو مزدوروں نے جواب دہرتال سے دیا اس پر سرکار بڑی مستوری کیساتھ مالکوں کی مدد کے لئے آگے بڑھی اور ہرتال کو تشدد میں مزدوروں کے لئے نشانہ بن کر گرفتار کر لیا۔ لیکن مزدوروں کا لڑاکو دیکھ کر کچھ مزدوروں کو رہا کرنا پڑا۔

جیلوں کے اندر بدترین بے رحمی کا فاشسٹ ہرٹاؤ کیا جا رہا ہے۔ اگر وہ میں حال ہی میں گرفتار کئے گئے طلباء کے ساتھ 'سی' کلاس کا ہرٹاؤ کیا گیا۔ ۲۲ جنوری سے یہ لڑکے بھرتال پر ہیں۔ ان کے ساتھ ہی ہرٹاؤ کیا جائے، رہا کیا جائے یا مزدور بدلا جائے۔ طلباء کو امتحان کی سہولتیں دیا جائے اور عام جواروں اور ساتھ ہرٹاؤ کیا جائے۔ کلکتہ ضلع جیل میں جب کمیونسٹ قیدیوں نے یوم لینن اور آئی اے دن منایا تو دستوں وارڈر دھرم سے ان پر وحشیانہ ڈھنگ سے لاش چاہ کر دیا گیا اور ہرٹاؤ کیا گیا۔ ان لوگوں کے پیروں کے تلوے پر لگا کر دھرم اور دھرم کے ساتھ ان لوگوں کو لگا کر کے تنہا میں ڈال دیا گیا اور ہرٹاؤ کیا۔ ان لوگوں میں سے سوائے

\* اور ہندوستانی صوبہ کے سیاسی قیدیوں کی فہرست



سرمایہ دار طبقے کی ٹکڑ خور کانگریسی سرکار مزدور طبقے اور دوسرے محنت کشوں کی اور ہرزہ مٹاتے جانے د  
 لڑائیوں کو رہنمائی سے محروم کر دینے اور اپنی نیست و نابود کرنے اور کچلنے کی کوشش کر رہی ہے۔ لیکن جسے کہ کچھلے دک  
 اور خاص طور پر کچھلے دک ہینوں کی لڑائیوں کو دیکھتے ہوئے پتہ چلتا ہے کہ یہ ایسا ایسی ایک دیوالیہ پن کی پالیسی ہے  
 کی لڑائیوں کو نہ کسی طرح کاٹ دے سکتا ہے اور نہ جبراً مستبدانہ ہے اس کانگریس کو ہونے سے روکا جاسکا نہ دیلو سے مز  
 گو اور نہ کھیت مزدور کانگریس کو۔ نہ ہی جمہوریت کے دشمن غلام آئین کے مخالفت مظاہرے روکے جاسکے۔ ان جملوں  
 سوجتی ہے کہ تمام مزدور طبقہ اور دوسرے محنت کش آل انڈیا یونین آف دیلو سے دو کروڑوں بلڈی ہوئی ایک دن کی اہ  
 ہڑتال اور جنرل اسٹریک کی تباہی کی پیش بندی کر کے ختم کر دیں گے۔ یہ ایک جوتی ہے جس کا جواب مزدور طبقہ اور  
 محنت کش اور محام کے جمہوری حقے دینگے اور دے رہے ہیں۔

ہم تمام مزدوروں، کھیت مزدوروں، کسانوں، درمیاں لینے والے نوکری پیشہ لوگوں، طالب علموں،  
 دانشوروں، مرد اور عورتوں کو آواز دیتے ہیں کہ وہ اس دہشت گردی ہاڑی اور فوجیوں کی حکومت کی  
 فریستہ کریں اور تحریک انٹ کی، مسز اور کڑا مانگ پور کے فائرنگ اور گائینہ، لکھنؤ، علی گڑھ، آ  
 بنارس اور بریلی کی جیلوں میں کئے گئے لٹھی چارجوں کی سخت جابج اور محرم انٹرن کو سزا دئے جانے کی  
 کریں۔ یہ مطالبہ کریں کہ طبقاتی جدوجہد سے واسطہ رکھنے والے تمام سیاسی قیدیوں کو فوراً رہا کیا جائے۔ اور ان  
 کلاسوں، ٹکڑ والوں کو قتلہ۔ ایسے ضلع سے تبدیلی نہ کئے جائے۔ ملاقات کی پوری آہادی اور محام قیدیوں کے  
 انسانیت کا برتاؤ کرنے کا مطالبہ منظور کیا جائے۔ یہ مطالبہ کریں کہ قابل نعت قانون تحفظ امن و  
 (-) *Prevention of Seditious Speeches Act* اور 'کنڈرہ ایکٹ' *(Prevention of Seditious Speeches Act)*  
 اور ایسے جمہوریت دشمن قوانین ختم کئے جائیں۔

۱۶ فروری کو صوبے بھر میں ظلم کے خلاف دن ساگر مزدور لینے اور محام محنت کش اپنی لڑائیوں کو طاق  
 کریں گے اور ہرزوا کانگریسی سرکار کے ان ہرزواہ جملوں کی  
 ۱۶ فروری کو ایک بار پھر وہ دکھارین گے کہ کوئی بھی طاقت انھیں جیسے لائن تنخواہ، نوکری کا تحفظ، روٹی  
 ہندیب اور تمدن، سچی آزادی اور کواسی جمہوری سرکار اور دنیاوی امن کی لڑائی کے شانہ دار انقلابی راہ  
 نہیں بٹا سکتے۔ کوئی بھی طاقت انھیں خود غرض یو جی بیٹیوں اور نہ صید اردن اور آئیے امریکی اور انگریز سامراجی آ  
 کے خلاف جدوجہد کے راستے سے نہیں بٹا سکتی۔ کوئی بھی طاقت انھیں عظیم الشان سوویت یونین اور  
 یورپ اور چین کے کواسی جمہوری دیشوں کی رہنمائی میں ساری دنیا کے مزدوروں اور محنت کشوں کے  
 بقدم آزادی، کواسی جمہوریت اور سوشلزم کی لڑائی کے راستے پر چلنے سے نہیں روک سکتی۔

نشیو ناگدہ بالٹک  
 (ایڈیٹنگ صدر یو۔ پی۔ ٹی۔ یو۔ سی)



रहनुमा रवेत-मजदूर कॉन्फ्रेंस में अपना हुये  
रवेत-मजदूर हितार्थियों को

# कम्युनिस्ट पार्टी का प्रान्तिकारि संदेश

आपके राष्ट्रीय कम्युनिस्ट पार्टी की

सुख प्राणीय गणोत्री की ओर से आपकी इस मांग के साथ ही राष्ट्रीय आंध  
एक लाल सलाम भेजते हैं। भारत तमाम सब्बे के रवेत-मजदूर जिस  
बहादुरी के साथ अपने वर्ग शत्रुओं, जमींदारों, धनी किसानों, पूंजीपतियों  
और उनके गुंडों, और ब्राह्मणी करने वाले और उनकी संप्रदाय  
कॉन्ग्रेसी दुश्मनों और इनकी पोलिस और रक्षा दलों की गोलियों,  
गाड़ियों और जेलों का मुकाबिला करते हुये अपनी शेजी, शेजी  
और जमीन और आजादी की लड़ाइयों में भागे क्या रहे हैं। उले  
देख कर हमारे दिल जोर और जोरव से पुरे हुये हैं। आपकी  
लड़ाइयों की लहर जिस तेजी के साथ बक रही है उले देख  
कर यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि वो सब्बे  
और पूरे देश के एक 2 रिश्ते में हा कर रहेगी। अब मजदूर  
के गोली कांड, प्राणको दक नहीं सकते। एक 2 जीत हासिल  
कर आप विजय की आरिही मजिद तक बढ़ेंगे। और देश 2  
दर का पर बौध्दवाद दुई पंजीपतियों से सरकार पागल गुल्लो  
की तरफ मुकती रह जायेगी।

आप की लड़ाइयों के पिछले दो सालों  
ने साबित कर दिया है कि गांवों में जितने रवेत-मजदूर, पौनी  
परजा, बड़ई, लुहार, कुम्हार, गाऊ, धोबी, कडार और दूसरे गरीब  
और मध्यम किसान मुहुर से जमींदारी, साम्राज्य-वादी और  
पूजीवादी जुल्म की चाम्की में पिसेते चले आ रहे हैं वे उहोंने  
आपकी रहनुमाई में तमाम अत्याचारियों को लहकार दिया है।  
अब आपके आगे क्या है। गांव के तमाम गरीबों और  
मध्यम किसानों का हका बनाने का मजदूरों, किसानों और  
दूसरे शोषितों का राज बनाना है।

आपके कॉन्फ्रेंस का काम है कि:-

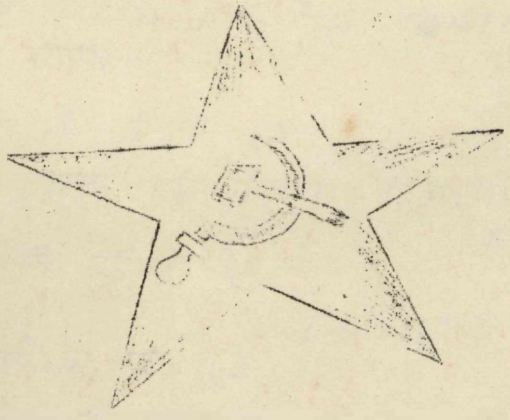
- 1) सब्बे के तमाम रवेत-मजदूरों की पौनी  
और कुमियादी मांगों को ऊपर उठाये और उनके लिये जंगी  
फैसले लें।
- 2) सब्बे की रहनुमाई करें और सब्बे-  
संगठन खड़ा करें।
- 3) जनक्रान्ति के अगुवा मजदूर वर्ग की  
जमात देह धुनियाव कॉन्ग्रेस से अपना नाता तोड़ें। और इस तरह  
आपने वर्ग शत्रुओं पर आरिही मोट देने के लिये सब्बे पर के रवेत-  
मजदूरों की आग लडताल का नारा बुलंद करें।  
आप इहो कामों के लिये बकड़ा हुये हैं।



इसके लिये हम काम कमिस्ट पार्टी को और से आपका अभिनन्दन करते हैं।  
आप जानते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी मजदूर जमात को सबसे अधिक संगठित  
है वह मजदूर, गरिब किसानों, मध्यम किसानों और तमाम शोषित  
वर्ग को जनताओं और समाजवादी दलों के लिये रहनुमाई कर  
ती है।

शोषित रक्त के नेहरू के दिनों के  
तमाम देशों में मजदूर और गरिब किसान अपने राज धनी रहे हैं। पूर्वी  
यूरोप के देशों में और चीन में उनका हुकूमत कायम हो चुका है।  
हिन्दुस्तान के चोरा और लार एकद हिन्दुस्तान में मजदूरों और गरिब  
किसानों का होस जा रहा है तभी से आगे बढ़ रहा है। इस देख कर  
पूँजीपतियों, सामंतों और जमींदारों और उनकी सरकार के अस्तित्व  
दिल पड़ गये हैं। इसीलिये कम्युनिस्ट पार्टी को अपना काम सिद्धी नीती का  
पहला बिकार बना रहे हैं। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के पर जनता में जस चुके हैं।  
उसे लुटेरों को तकते परास्त नहीं कर सकते। कम्युनिस्ट पार्टी पर किया जान  
वाला स्क्र 2 हमीली तमाम महानतक श तकते पर किया जानवाला हमला है। सारे  
हिन्दुस्तान में तमाम महानतक श तकते एक होकर उसका जनाव दे रहे हैं। कम्युनिस्ट  
पार्टी पर किया जानवाला स्क्र 2, हमली लुटेरों की हाती पर एक, शतीर होकर लारी  
दा है। अब लुटेरों प्रशासकों-पूँजीवाद और सामन्तवाद का जनाजा निकलाने  
वाला है। तैलंगाना तुम्हें हास्तावता रहा है। चलो! कम्युनिस्ट पार्टी के  
रहनुमाई में तैलंगाना के हास्त पर आगे बढ़ो। फलतह तुम्हारी होगी।

काम सिकाम













# 28 जनवरी को रेलवे मजदूरों की गिरफ्तारी के

विरोध

24 जनवरी को हड़ताल और अमीनाबाद में

विरोध - समा और प्रदर्शन

## संक्षिप्त

28 जनवरी के शर्मनाक वाक्यांत पर लखनऊ के तमाम रेलवे मजदूर, दूसरे मजदूर और मेहनत शहरी गुस्से से उबल रहे हैं। मंबेया के रेलवे भेदान में रेलवे मजदूरों ने खुद अपनी अर्कों से देखा है कि सोशलिस्ट पार्टी वाले जिनकी 8 मार्च की गढ़ागी से मजदूर अच्छी तरह वाकिफ हैं, गुंडों और पुलिस के एजेंटों का काम कर रहे थे। उन्होंने पुलिस वालों की लठियों से मजदूरों और उनके नेताओं पर हमला किया और प्रान्तीय रेलवे मजदूर कॉन्फ्रेंस के डेलीगेटों, सोवियत मित्र संघ की नुमाइश के संगठन कर्तवियों और प्रान्तीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष को गिरफ्तार करने में पुलिस की मदद की।

पिछले तीन हफ्तों में ज़रीब एक दलील संगठन कर्तवियों की गिरफ्तारी के बावजूद जब पुलिस बल बढ़ाया तो उसने सोशलिस्ट पार्टी की मदद से खुले अधिवेशन में गड़ बड़ पैदा करवाई, और फिर जो भी उसके हाथ पड़ा उसे गिरफ्तार कर लिया, जबकि गुंडों में से एक भी आदमी को हाथ नहीं लगाया गया, जो 15 आदमी गिरफ्तार लिये गये हैं उनमें, प्रान्तीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष का० एस० ऐन० पाठक गोरखपुर के रेल मजदूर नेता का० रामचंद्र, लखनऊ के रेलवे मजदूर नेता का० निरंजन सिंह खानेवाल, फर्रुखी के का० श्रीम प्रकाश और दूसरे डेलीगेट और विराटदराना डेलीगेट शामिल हैं। इन लोगों पर हमला किया गया, पीटा गया और धसीटा कर पुलिस की लठियों में ठूस दिया गया। आलमबाग थाने में इन लोगों पर फिर लठी चार्ज किया गया।

तमाम मजदूर और तरकीब पसंद लोग इस वहशियाने फ़ारमिस्ट हमले की सहे लफ़्ज़ों में निन्दा करेंगे।

## यह हमला क्यों किया गया ?

सरकार ने यह हमला इस लिये किया है क्योंकि वह मजदूरों, मेहनत कर्षों को भुखा नंग, खूब बेरोज़गार रख कर आर्थिक संकट का बोझ उन के कंधों पर डालना चाहती है, वह अपनी मजदूर विरोधी और टाटा, बिड़ला जैसे सरना या दारों और अपने औज़र अमरीकी आयातियों के हित साधनेवाली नीति के खिलाफ़ मजदूरों की दिन ब दिन तेज़ होती जाने वाली लड़ाइयों के डार से, घबरा रही है, उसे इन लड़ाइयों से अपनी मौत दिखाई देती है।

सरकार उन मजदूरों को, जिन्होंने पिछले साल 8 मार्च के मौके पर आम हड़ताल करने का बेलाग फ़ैसला किया था, और जिन्होंने उसके दमन और पुलिस और फ़ौज के वहशियाने आंतक के बावजूद अपनी लड़ाइयों चलाई हैं, अपना काल समझती है।

गढ़ागी सोशलिस्ट नेता, गुहस्वामी, जयप्रकाश की कम्पनी, जानते हैं कि अब मजदूर समझ गये हैं कि जौन उनका दुश्मन है, किाने 8 मार्च के मौके पर उनके साथ गढ़ागी की थी और जौन हर एक मामले पर उनकी पीठ में कूरी भौकता रहा है।

सोशलिस्ट नेताओं और उनके भ्रातृहियों की, डी. पी. जोशी की कम्पनी वाली की, अब यह जुर्रत नहीं पड़ती कि वे आका मजदूरों को अपना दुह दिखलाये। इस लिये वे खुले सज़ाने कॉन्ग्रेसी पुलिस और फ़ौज की मदद ले रहे हैं।

सरकार और गढ़ागी सोशलिस्ट नेता रेलवे मजदूरों के जुफ़ारत संगठन, आल इंडिया यूनियन आफ़ रेलवे वर्कर्स को अपना काल समझते हैं, क्योंकि कि इस संगठन की शकल में रेलवे मजदूरों के पास एक मजबूत जुफ़ारत संगठन है, जिसमें मौक़ा परस्त दुलदुल यज़ीन गढ़ारों के लिये कोई जाह नहीं है।

यू पी के रेलवे मजदूरों की पहली फ़र प्रान्तीय कॉन्फ़ेन्स पर सरकार ने हमला इस लिये किया है, क्योंकि कि वह यू पी के रेलवे मजदूरों और दूसरे मजदूरों और मेहनतकशों के प्रभने प्रति, गुस्ते और नफ़ारत और उनकी दिन ब दिन बढ़ती हुई लड़ाइयों के डार से धरार रही है, इस ऐतिहासिक कॉन्फ़ेन्स ने यू पी के रेलवे मजदूरों का सारा लफ़्फ़ा संगठन बना



दिये जाने और दमन को खत्म करने, ग़ैर शाप की पूरी महलियते हासिल करने, जबरिया बक्त स्टौती रोखने, पूरे ट्रेड यूनियन और राजनैतिक हज़ हज़ मिल करने, तमाम रेलवे मज़दूर और कर्म संघर्षों में गिरफ्तार किये गये राजनैतिक कैदियों की रिहाई और उन्हें उनकी नौकरियाँ वापस दिलाने, एक अच्छी ब्रवाणी जनवादी सरकार कायम करने और दुनिया में अन्न कायम रखने की लड़ाइयों में उनका साथ देना और उनकी हस्तुमाई को गंगा, इस कांग्रेस ने फ़ैसला किया है कि ६ मार्च को एक दिन की विरोधी हड़ताल करने का, सारे हिन्दुस्तान के रेलवे मज़दूरों के फ़ैसले का समर्थन किया जाय, इन्हीं फ़ैसलों को आप रेलवे मज़दूरों और दूसरे मज़दूरों तक पहुंचाने में रोखने के लिये सरकार ने सोशलिस्ट पार्टी के गुंडों की मदद में कांग्रेस का सफ़ाया करना चवहा.

यह एक कौती है जिस का रेलवे मज़दूर, तमाम दूसरे मज़दूर, मेहनत कश और तरक़्की परसद बर्द और औरतें उचित जवाब देंगे.

यह चुनौती हलक एक ऐसे मौके पर आई है जब हिन्दुस्तान के नये विधान का उदघाटन होने वाला है. यह विधान गुलामी का विधान है, जिसे टाटाजिडला मरिखे पूंजी पतियों और अमरीशिय तथा कौज़ साम्राज्य वादियों की दुक़्क़ीर गुलाम नहरू पटेल सरकार ने बनाया है. यह विधान इन लोगों के, हिन्दुस्तान के ब्रवाम को कौनी गुलामी, शोषण और अत्याचार का शिकार बनाने और मुजरिमाना जैम खीर हरकतों को कानूनी जमाना फ़ल्ला कर बाज़ाय रखता है.

यह चुनौती एक ऐसे मौके पर आई है, जब तेलंगाना के कैदों बहादुर किसान योधाओं को फाँसी की सज़ा दी जा रही है, सारे हिन्दुस्तान में मज़दूरों, किसानों, विद्यार्थियों, राजनैतिक कैदियों पर फ़ायरिंग और लाठी चार्ज किये जा रहे हैं, ट्रेड यूनियन, किसान और विद्यार्थी नेताओं को डे पेंशन पर गिरफ्तारियाँ हो रही हैं.

कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड यूनियनों और दूसरे तरक़्की परसद संगठन ग़ैर कानूनी किये जा रहे हैं, आगरा में पूंजी कात्र फ़ाडोशन पर हमला कर के १७ जनवरी को २६ विद्यार्थियों को गिरफ्तार किया जा चुका है, मंगीनों, जेलों, तस्लीफ़ों और गोलियों के तल पर हिन्दुस्तान के मज़दूरों और मेहनतकशों के यह दुश्मन उनकी आवाज़ और बढ़ती हुई लड़ाइयों को कुक़त्ने और उन से अपनी मुजरिमाना पालिसियों को कानूनी हक़ बना देने वाले विधान को मज़ा खाने की कोशिशें कर रहे हैं, मगर यह दमन मज़दूरों और दूसरे मेहनतकशों के आगे बढ़ते हुये क़दमों को रोक नहीं सकते.

मज़दूर और दूसरे मेहनतकश हलक इस चुनौती क़व का जवाब देंगे. साथियों इस लिये २५ जनवरी को हड़ताल करो और रेलवे मज़दूरों पर किये गये इस हमले की निंदा करने के लिये, हिन्दुस्तानी सामायेदारों उनके साम्राज्यवादी आज़ाश्रों और सोशलिस्ट गुदागों की हल सरकार के खिलाफ़ अपने जेलाग फ़ैसले का इज़हार करने के लिये, हिन्दुस्तानी ब्रवाम के कैदों पर नये आर्थिक कोफ़ और गुलामी का विधान लागू करने की तमाम कोशिशों के खिलाफ़ एक ही आ लड़ने की अपनी अडिग लान का इज़हार करने के लिये, और अपनी दुनियादी मंगे हासिल करने के लिये, दुनिया के तमाम मेहनतकशों के लाल फ़ाँडे के नीचे अपनी क़ानूननगरी लड़ाइ को आगे बढ़ाने की पक्की लान का इज़हार करने के लिये २५ जनवरी को शाप की अमीनवाद पार्टी की मीटिंग में उड़ी में उड़ी तादाद में हिस्सा लो.

- कम्युनिस्ट पार्टी ज़िंदा वाद.
- ए आई टी यू सी ज़िन्दा वाद
- आल इंडिया यूनियन आफ़ रेलवे वर्कर्स ज़िन्दा वाद.
- गिरफ्तार साथी कोड़े जायें, तेलंगाना के बहादुरों को दीगई फाँसी की सज़ा गद करो, सोशलिस्टों की गुदारी मुदावाद.
- फ़ासिस्ट विधान मुदावाद, दुनियादी मंगे मतवा कर रहेंगे.
- ब्रवामी क़वक़ जनवाद कायम करेंगे.
- लाल फ़ाँडा ज़िन्दा वाद



A.  
INTERUT Papers

१. उपानुशासन भंग की कार्य-  
वाही पर।

ता० २२-१०-४८

२. उपालोचना और उपालो-  
लोचना पर।

ता० २२-१०-४८

३. का० इन्दू कुमार के  
बारे में

ता० ५-११-४८

४. का० इन्दू पर मेजे गये

कागजात

उपजात

ता० २२-११-४८



(A)

19  
Ishmail note on  
Dehradun.

1. Note on D. D. D. D.  
18-1-50
2. Appendix to note  
22-1-50
3. Supplementary to Note  
24-1-50
4. Letter to Tara.  
24-1-50



(A)

This is the only copy in  
the office which is being  
sent - from Pratul's file.  
I am trying to trace out  
another copy but if possible  
this should be returned  
after use.

K.



(B)

S.F. Fraction.

1. D/7-12-49 C.F. Strike Review  
- Pralāp.
2. 7-12-49. controversy by Agra College  
strike. Deep.
3. 7-12-49. Deep self criticism.
4. 7-12-49. June 49 Fraction  
Document - Deep.
5. 1-1-50. Peace camp on Rys  
Ganpat.
6. 2-1-50. P.P.H. Note on S.F. Fr.
7. Jan. 50 S.F. cir No 2/50
8. Jan. 50 S.F. cir. No 3/50
9. Jan. 50 C. Eng Strike Struggle  
Pralāp's Letters Essen
10. { Pralāp's Letters.
11. { 2-12-49 Pralāp's Letters
12. { 11-12-49 Pralāp's Letter
13. 12-1-50 Re. com Deep's  
Functioning chandakant.



25-27th Jaer. 1950

K.M.W. CONF. ©

MATERIAL

- Resolutions.
- constitutions.
- President's Address.
- poster.
- Leaflet.
- Badges.



©  
CENTRE  
MATERIAL

- Duplicated in U.P.
- P.B. circular 1/50  
(H.U.)
- Manifesto re  
constitution (u)



©  
circulars 1950

Project-

- NO 1/50 (25) New offensive  
(H + U) in Tails
- 2/50 Anti const. week (H + U)
- 3/50 Anti Repression Day  
(H + U)
- 4/50 Reports Anti Rep.  
(H + U)
- 5/50 Re Urder Bulletin  
(H + U)
- 6/50 Baseilly Faking  
(H + U)
- 7/50 Provincial itay door  
convention (H + U)



©  
Statements. Messages ETC

1950.

- Leaflet re Ry. conf.  
A results (H.V.)
- com. Party message to  
Prove. K. IT. W. conf. (H)  
message to Ry. W. conf. (E)
- Statement on Ballia etc  
Re 19th Anni. Rep. Day.
- Leaflet - Printed for  
distribution at Ballia (H)  
(centre draft.)



©  
circulars. 1950.

P.T.U.C Nos. 1/50,  
2/50, 3/50 (H.U.)

T.U. Fraction. 1/50  
(H.U.)

Rly. Fraction 1/50 (H)

A.I.T.U.C. 12/50 (E)



©  
circulars . 1950

Khet Mangdoor Union

Nos 1/50 Proce. conf.

2/50 Sullhas Day.

3/50 Provincial Strike

4/50 Kanpur committin



(D)

Naya

Sabera 1950.

No	41	2nd	Jan
"	42	9th	"
"	43	16th	"
"	44	23rd	"
"	45	30th	"
"	46	6th	Feb.
"	47	13th	"











मजूदरों की, आज हा उद्योग के मजूदरों में वही जुफ़ारत मनीवृत्ति है जो रेलवे मजूदरों में इन वजहों से ही आज देश का पूरा औद्योगिक मजूदर एक साथ आम हड़ताल की ओर बढ़ रहा है.

केवल औद्योगिक मजूदरों में ही नहीं दूसरे मेहनतकश जनता के हिस्सों में गहरे हाते हुए आर्थिक संकट ने मारी मरी की भावना भर हठ दी है और वे तेज़ी से मजूदरों की नेतृत्व में पूंजीवादी लूट के खिलाफ़ लड़ाई के मैदान में बढ़ रहे हैं.

तेलंगाना में शुरु हुई ज़मीन के लिये खेतियर मजूदरों और गरीब किसानों की लड़ाई देश के कोने-कोने में फैलती जा रही है, तेलंगाना के ५ ज़िले, आंध्र के कई इलाक़े, काकद्वीप लाल गंज और भिदना पुर ज़िले का एक हिस्सा स्वतन्त्र इलाक़ा बन गया है और पूबी यू.पी. में खेतियर मजूदरों की लड़ाइयाँ इस सीमा पर पहुंच गई है कि किसी भी तरह स्वतन्त्र इलाक़े कायम हो सकते हैं.

शहरों में औद्योगिक मजूदरों के नेतृत्व में शहरी जनता पुलिस से टक्कर ले रही है. सड़कों पर जाह २ पुलिस और जनता के बीच घमासानों की खबर आती है. बोली में मजूदरों के विद्यार्थियों और शहरी जनता का पुलिस की सभ्यता के फ़ौज से टक्कर लेना, ४ दिन तक पूरे शहर में अपनी हुकूमत क्लाना दिखलाता है कि हमारे सूबे की जनता एकककक राजसत्ता पर कब्ज़ा करने की लड़ाई में केवलके केड चुकी है.

अन्तर्देशीय क्षेत्र में सोवियत यूनियन के नेतृत्व में जनवादी मोर्चा विश्व साम्राज्यवाद पर फ़ैसला-जुन चोटें कर रहा है. पिछले साल चीन, पूर्वी जर्मनी और उत्तरी कोरिया में जनवादी सरकारों की स्थापना ने जनवादी मोर्चे का ताज़त का पलड़ा और भी भारी कर दिया है. वियतनाम, बर्मा और मलाया में राजादी की फ़ौजे के अपनी जीत की आखिरी मंज़िलेतय कर रही हैं.

रेटम वम के सफ़ा धिपत्य की बुनियाद पर बनाई गई अमरीकन और आरेज़ जाज़ोरों की तमाम फ़ौजी योजनाएं बुरा बुरा हो गई हैं. शान्ति मोर्चे की जीत कतारों में दिन पर दिन बढ़ने वाली दुनिया भर की जनता की कतार बन्दी साम्राज्यवादियों की हर वेषकक योजना को चौपट कर रही है.

आर्थिक संकट एक २ पूंजीवादी देश में फूट रहा है और पूरी पूंजीवादी व्यवस्था चरमारा रही है. पूंजीवादी देशों के मेहनतकश अवाग जी मजूदर का और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में बजाये बलि का बकरा बनने के पूंजीवादी व्यवस्था पर फ़ैसला जुन चोटें कर रहे हैं.

ऐसी हालत में ६ मार्च की रेलवे मजूदरों की विरोधी हड़ताल छटनी, कम बहोती और तनज़ाक़ाट की मांगों की योजनाओं की धूल में भिलाने वाली और बुनियादी भागों की हासिल करने के लिये ~~विलककककक~~ हड़ताल पूरे पूंजीवादी तन्त्र पर एक फ़ैसला जुन चहह चोटें हो गी. रेलवे मजूदरों की जीवन वेतन और दूसरी बुनियादी भागों की लड़ाई जनतन्त्रक जनतन्त्र की स्थापना के लिये देश की इन्डिस्ट्राडी लड़ाई को एक नई ऊंची मतह पर पहुंचा देगी और <sup>एक</sup> कामयाब ६ मार्च के लड़ाई तेलंगानाओं की सृष्टि का देश के साम्राज्यवादी सामन्तवादी-पूंजीवादी ढांचे पर घातक चोटें करेगी.

हड़ताल के खिलाफ़ दमन . अमरीकन और आरेज़ धन्ना मेंठों के हाथ मुल्क की राजादी केच का अमरीकन जाज़ोरों की हिन्दुस्तानी अवाग को अटका कर तीवरी लड़ाई शुरु करने की योजना में सफ़ली दार बन कर काग्रेसी सरकार जनता का विश्वास खीं डी है. और जनता की नफ़रत, <sup>की</sup> उन्हें प्रत्य करने का दृढ़ निश्चय बढ़ता जा रहा है.

मजूदरों किसानों और मेहनत कश मध्यम वर्गी जनता को बेकारी और तबाही के गढ़ में डालने वाली टाटा और बिहलर की चेरी काग्रेसी सरकार के खिलाफ़ मेहनतकश अवाग का रुस्सा बढ़ता ही जा रहा है.

सरकार के पास इसके सिवाय दूसरा चारा नहीं है कि वह गंगीनी का सहारा ले. गंगीनी का सहारा का सहारा है. लड़ाइयों की भट्टी में तपने वाली अवाग की लड़ाई टुड़डियाँ इन गंगीनी की बेकार काना जीकती जा रही है और जनता के मूय संघर्षों की



अग में जल कर राख हो रहे हैं। उच्चों और औरतों तक का भड़कों पर भून बहाने वाली, जेलों में बन्द निहत्थे मजदूरों विमान के कब्जे नेताओं को हत्या करने वाली, अपनी फ्रंटलिस्ट अदालतों के जजिये तलाशना और वैंगरह के बहादुर बू मजदूर-विमानयो दारों को फाँसी पर झानना मुहर लगाने वाली सरकार जानती है कि उसका क्या छु होगा। लेकिन दिवार पर भीत लिख लिखी देख कर वह एक बार जनता को खून में डुबाने की कोशिश को गी।

२६, जनवरी को पुलिस प्रजातन्त्र ज्ञायन करने के बाद खूबार हत्ते बढ़ रहे हैं, ग्लेन (भद्रास) का हत्याकांड भिवाल है कि भरता हुआ तबका जिस हद तक जाने के लिये तैयार है, हमारे मुँह में विद्यार्थी, रेलवे मजदूर और खेतिहर मजदूर मुवाई जन्मे न्यां पर हत्ता, राय बोली, गाजीपुर, तुलतानपुर, बलिया और बीली में गोलीबार दिखलाते हैं कि कर्ग संघर्ष अब उसी सतह पर पहुँच गया है जहाँ वह फ्रंटलाइन तरीके से ही लड़ी जा सकती है।

दमन में इन्डिस्लामी लड़ाई दबाई नहीं जा सकती, दुनिया भर के हर शासक का ने भीतनी घड़ियों में अपनी जिन्दगी बटाने के लिये दमन का सहारा लिया है लेकिन इतिहास बतलाता है कि वे केवल अपनी भीत पर ही ला सके थे, यही हिन्दुस्तान में हो रहा है दमन जनता को अकेले आतंकित करने के बजाय उसके लड़ने के निश्चय को दृढ़ ही करता जाता है।

मजदूरों की पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी और इन्डिस्लामी ट्रेड यूनियनों का काम है कि वे दमन के खिलाफ जनता की लड़ाई को संगठित कर के शासक वर्ग की योजनाओं के परखचे उड़ाए, बखर

आज जुफ्राण जनता दमन दमन पर इस दमन राज को खत्म करने के लिये टक्कों ले रही है, हमारा काम है कि इन संघर्षों को संगठित करके एक विशाल फ्रंटलाइन बना लेना जहाँ नेतृत्व को, ६ मार्च की हड़ताल का यही मकलब है।

सोशलिस्ट और इन्टक नेताओं की फूट परस्ती, रेलवे मजदूर इन पूंजीवादी दलालों की लगातार गुदारी से इनकी असलियत देख चुके हैं, इन नेताओं के बारे में उनके एक २ मूम रोजगारी के संघर्षों में जलकर राख हो रहे हैं, लेकिन हमारा यह मकलब निजालना कि यह गुदार फिर गुदारी करने के लिये मैदान में नहीं आएंगे मारी मूल होगी, ज्यों २ सैस्ट गहरा होता जाता है इन पूंजीवादी दलालों की गुदारी की कोशिश भी रहेगी, वेक के अभाव होने पर देशी के साथ खह रोज बट नर २ नारे लेकर मजदूरों में बक्ये आने की कोशिश करेंगे।

रेलवे मजदूरों के बीच फ्रेडोशन, इन्टक और सोशलिस्ट यूनियनों अपनी मजदूर विरोधी नीतियों के सबब से खनाम हो चुके हैं, उनकी फूट डालने की ताकत बहुत कम हो गई है, लेकिन इसका मकलब यह नहीं है कि इनके मेडा फोड की जरूरत नहीं है, इन गुदारों के एक २ नारे, उनके कामों और उनकी गुदारियों के ठोस मेडा फोड न करने का मकलब मजदूर का के एके की लड़ाई लड़ने में इन्कार करना है।

सोशलिस्ट नेताओं और इन्टक के गठबंधन

-फ्रेडोशन नेताशाही के दमन सम्भन

-फ्रेडोशन के हर सरकारी हत्ते के सम्भन की नीति

-फ्रेडोशन और इन्टक नेताओं के रेलवे बोर्ड और अफसरों में गठबंधन

की ठोस भिवाल देकर उनकी मजदूर विरोधी गरिवाहियों को आम मजदूरों के सामने रखिए और उनके मानने वाले मजदूरों को संयुक्त की मोर्चे में लाने की अपील करिए, सोशलिस्ट और इन्टक को मानने वाले मजदूरों के मूम तेजी से टूट रहे हैं उनको लड़ाई के रास्ते में आने में हर तरह फुद दीजिए,

रेलवे मजदूर दमन और फूट की साजिश को बेकार कर रहे हैं हमारा काम है

१. इन गुदारों की नीति का पदाफिश कर के, २. आम मजदूरों के तजुबे की उनियाद



पर मजदूरों का जीत मोर्चा जाना जो इस क्रिया को और तेज कर सके, रेलवे मजदूरों की हालत, आर्थिक संकट की चोटों में सरकार दिवालिया हो रही है, अराम-विरोधी और रोकथाम की खोर नीति के सबब से सरकारी खजाना, पुलिस और फ़ौज के खर्च से चरम पर रहा है, पूंजीवादी सरकार पूंजीपतियों पर टैक्स तो लगा नहीं सकती इसी लिये सरकारी महकमों में लूट तेज कर के आर्थिक संकट की चोटों से रोक तो लगातार कोशिश कर रही है,

रेलवे मजदूरों पर जबरदस्त आर्थिक हमले किये जा रहे हैं, ६ मार्च के बाद सोशलिस्ट गृहकारिणी की मदद से रेलवे मजदूरों की हड़ताल दवा कर उसने मजदूरों की गई गुंजरी हालत को और भी बदतर कर दिया है,

-इन्जीनियरिंग डिपार्ट और क्लर्क में आरजी और गैर जुस्तजिस्त स्टाफ़ की हर जाह क़टनी की गई है, यह क़टनी हंगारों तक पहुँच चुकी है,

-इन्जीनियरिंग स्टाफ़ ने हंगारों गैर जुस्तजिस्त और आरजी स्टाफ़ को १ रु० १२ अंश से डेढ़ रुपये के तक़ और १ रु० चारअंशने रोज़ पारू रोज़न्दारी के हिसाब से तज़ादेकर उसकी २० रु० से ३५ रु० तक तज़ा देती की गई है,

-ऐसा कोई डिपार्ट नहीं जहाँ काम बढ़ती न की गई हो, शेटों में फ़ैक्ट्री सेक्ट की तज़ा पर रख कर ६ और १० घंटे काम कराया जा रहा है, केके जेनेवा रेस्ट के जुस्तजिस्त हंगारों मजदूरों की हड़ते वार कुटी खत्म कर दी गई है, और ज़ा एनालिजिस ( कामका कीकरण) केज़ारिये काम बहुत ज़्यादा बढ़ा दिया गया है,

-रिफ़्यूजी स्टाफ़ का ५ महीने का और रनिंग तथा ट्राफ़िक स्टाफ़ का दो अल का एरियर नहीं दिया जा रहा है,

-ग़ेनशॉप में भी चाप का राशन बन्द कर दिया गया है और देहातों में रहने वाले तथा लाइनों पर काम करने वाले ग़ेनशॉपों को क्रेडिट का भी राशन नहीं दिया जाता, इन हमलों सेहीमन्तुष्ट न हो कर अब ग़ेनशॉप पिलकुल बन्द कर देने की योजना तैयार हो चुकी है,

-शेड और वर्कशापों में कर्बव गज़ेटेड कुटियाँ करीब २ पिलकुल खत्म कर दी गई है, हंगारों मजदूरों की तज़ारियाँ मारी जा रही है, जुलियों को इस्तहान लेकर भी बर्ज़न नहीं बनाया जा रहा है,

-पी.सी.ओ. ६ से घटा कर ३ कर दिए गए हैं, और अब जनवरी के महीने से ज़रूरत ख़त के क़रबव नाम पर १ रु० माहवार की स्टाँती भी शुरू कर दी,

-पंच अदालत की दी हुई नामजारी की सूलहलियतें देने से भी इन्कार कर दिया गया है, हंगारों मजदूरों को नीचे के गेडों में रख दिया गया है,

इस तरह आज एक २ डिक्कें डिपार्ट को मजदूरों जाहे वह ग़ेन भेन हो या जुली, अप्रेटिस, वर्कमैन फ़िटर पोटर, क्लिंनर, फ़ॉन्स्यरभन, स्विचमैन सिगनल भेन या मामूली दफ़तर का बाबू, इन हमलों के खिलाफ़ गुस्से से उबल रहा है,

इन हमलों के अलावा मजदूरों की ज़िन्दगी को नामुमकिन बना देने वाले सैकड़ों हमलों हमले जगह जगह किए जा रहे हैं, ग़ेनका गिनतना मुश्किल है, देहा दून और इलाहाबाद में रनिंग स्टाफ़ को दो महीने एरियर का पैसा नहीं दिया गया, लखनऊ में रिफ़्यूजी मजदूरों से हाउस एलाउस के अलावा ४ रु० महीना काढ़ा जा रहा है, सैनेटरी स्टाफ़ से माहवार धूस ली जाती है और वक़ पर तज़ा न देना, क़रबव ज़रूरत पर कुटी न देना बू मा मूली २ बातों पर चत्तार्व शीट देना तो रोज़मर्रा की बात हो रही है,

नतीजा यह है कि रेलवे मजदूर इन हमलों से आज़िज़ा आकर मारो मरी की लड़ाई लड़ने के लिये तैयार है,

मजदूरों की लड़ाइयाँ, इन हमलों के खिलाफ़ हमारे सूबे के मजदूरों ने डट कर विरोध

किया है, उनको उतलने के लिये उन पर फ़ौजिस्ट तानकाही ही दमन किया गया है, उनको मोटिंग करने की इजाज़त नहीं, मामूली ट्रेड यूनियन काम के लिये भी उन्हें बार्जिशिट, बर्ज़िस्ती और जेल का मुक़ाबला करना पडा है, उनके संगठन पर पुलिस सोशलिस्ट और इन्टक के लगातार हमले



हूँ है लेकिन इन सब रुकावटों के बावजूद जिस तरह हमारे सूबे के रेलवे मजदूरों ने अपनी लड़ाई को आगे बढ़ाया है वह हमारे सूबे के मजदूर आन्दोलन की एक शानदार बात है.

कौन नहीं जानता कि छटनी के खिलाफ गोरखपुर, लखनऊ और फ्रांसी की वर्कशापों के मजदूरों के प्रदर्शनों ने सरकार को मजबूर कर रखा है कि वह कारखानों पर छटनी के हमले को रोके. इलहाबाद, बिरोही डगमापुर के गेर्मनों की 3 महीने से हड़तालों प्रदर्शनों और धराश्री के ज़रिए चलने वाली लड़ाई ने सरकार को मजबूर कर दिया है कि वह छेड़ रुठे रोज़न्दारी के हमले को दूसरे डिपार्टमेंटों के गैर मुस्तकिल मजदूरों पर करने से रुके. आगरा, कानपुर और गोरखपुर और दूसरे शहरों में न बरके जाने कितनी बार गेर्मनों ने छटनी को रोकने का है. लखनऊ के बहादुर मजदूरों ने पिछले महीने में लगातार 5 हड़तालों का के न खाली सरकार के 29 राठ के छुटी पर हमले की शिकार हुयी थी. एकतेवार छुटी पर हमले को ही रोका है बल्कि बुनियादी मांगें उठा कर अपनी लड़ाई को दिन पर दिन ऊंचा उठा रहे है.

इन संघर्षों में रेलवे मजदूर देख रहे है कि वे अपनी हड़तालों के ज़रिए सरकार को घुटने टिका सकते है. इन संघर्षों में रेलवे मजदूर सीख रहे है कि केवल आम हड़ताल के ज़रिए ही सरकार की हमले की तमाम योजनाओं को चूर किया जा सकता है.

हमारे सूबे के मजदूरों ने अपने इन संघर्षों में पुलिस से टक्कर लेकर अपने नेताओं को बचाना सीखा है 188 के परखवे उडा कर अपने जलसे और जूस करना सीखा है. 1 मार्च की लड़ाई में तबे हुए बहादुर रेलवे मजदूरों ने इन पिछले साल की लड़ाइयों में सरकार और दूसरे दलालों को हारने के नए त्वाँपेच उनके मुकाबले में अपने जी संगठन बनाना सीखा है.

साधियों, रेलवे मार्च पर हड़ताल की परिस्थित पक्की हुई है. ज्ञानितकारी परिस्थिति का बढक तज़ाज़ा है कि हम इसे कामयाब बनाने के लिये लाभिसाल हिम्मत, कुरबानी, और यज़ीन के साथ मैदान में कूदें. साधियों, अगर हमने अपने 1 मार्च के तजबेज से फ़ायदा उठाया तो कोई ताकत हम इस हड़ताल को रोक नहीं सकेगी.

1. हड़ताल तैयारी के लिये मजदूरों को चलने वाली लड़ाइयों में कूदिये. तमाम फ़ौरी सवालों को तैयार करके उन पर लड़ाइयों शुुरु कर कीजिये.

2. इन लड़ाइयों में लड़ाकू मजदूरों की कमेटियाँ बनाकर उनके पीछे मजदूरों का जी एका नहाए. यह कमेटी, (अ) हड़ताल विरोधी सुधार-वादी नेताओं और अफ़सरों के गुर्गों का ठोस पर्दाफ़ाश करे. (ब) हर ब्याल के मजदूरों को मंगों के लिये एक करे.

3. फ़ौरी मांगों को बुनियादी मंगों से जोड़ कर आम हड़ताल का प्रचार कीजिए.

4. रेलवे मजदूरों और दूसरे मजदूरों को चलने वाली लड़ाइयों का प्रचार कर उनके समर्थन में प्रदर्शन, हड़ताल धराव खेगारह का संगठन कीजिए.

5. पर्चों, पोस्टों, छोटिरे बडी मीटिंगों, प्रभातकैरियो, जूसों के ज़रिए बुनियादी मांगों और आम हड़ताल के नारों को मजदूरों में ले जाइए.

6. डिपार्टमेंटों की हड़ताल कमेटियों को मिलाकर अपने सेन्टर की हड़ताल कमेटियाँ बनाइए.

7. वॉलेंटियरों को लडाकू जत्थे बनाइए.

8. युनियनों की आम धेम्परी कम्पेन को तेज़ करके उन्हें चालू कीजिए. ज़ाच कमेटियों को और भी ज़्यादा क्रियाशील कीजिए.

9. हड़ताल फ़ंड आम मजदूरों से जमा कीजिए.

10. युनियन का साहित्य, लकता कान्फ़ेन्स की रिपोर्ट, रेलवे मजदूरों के खिलाफ़ साज़िश और दूसरे मजदूर के खिलाफ़ साहित्य की विक्री चलाए. नया सक्का सात दिन मशाल और दूसरे पार्टी अख़बारों को आम विक्री, हाकिम का इंतज़ाम कीजिए.

इस कफ़ कान्फ़ेन्स की तैयारी 1 मे 18 फ़रवरी को दफ्त विरोधी दिवस में हर एक सेन्टर अपने यहाँ रेलवे मजदूरों के ज़वावस्तु मुज़ाहिरे को और देवे कि किस हद तक वह तैयारी के



काम को आगे बढ़ा सका है, २५ और २६ फ़रवरी को सुबह मजदूर कन्वेंशन में ज्यादा से ज्यादा जैसी रेलवे मजदूरों को भेज का देखिए कि आप किस हद तक अपने जेजू कार्यकर्ताओं को हड़ताल की रद्दमाई के लिये तैयार कर सके हैं,

किस तरह काम शुरू किया जाए; फ़े कशन का सब से जिम्मेदार साथी या डी. सी. के कोई साथी पिछले साल के २२ फ़रवरी के केन्द्रीय सकुलर रेलवे हड़ताल की तैयारी केन्द्रीय टी. यू फ़े कशन के आम हड़ताल पर सकुलर और आर. आई. एल. यू. के हड़ताल एग - नीति (स्ट्रेटजी) पर फ़े कशन में रिपोर्टिंग संगठित करें और काम को बंदवारा करें,

फ़े कशन के साथी तमाम जेजू कार्यकर्ताओं में रिपोर्टिंग कर के उन्हें हड़ताल तैयारी के काम कमज़ोरियों को दूर किया जाए, याद रखिए पिछले ६ मार्च में हमारी बुनियादी कमज़ोरियाँ थीं,

१. मजदूरों के उभार को कम करना और इस तरह उनकी लड़ाइयों की रद्दमाई से इनकार करना,

२. सोशलिस्ट पार्टी का पिछलगुआ बना रहना और

३. हड़ताल कमेटियों को न बनाना,

इस बार हमें इन कमज़ोरियों के खिलाफ़ सजग हो कर लड़ना है,

पिछले साल आम तौर से साथियों का सुधारवाद स्थानीय परिस्थितियों की आड़ में क्रान्तिकारी नज़रिए से इन्कार करने में जाँच हुआ था, याद रखिये एक हफ़्ते पहिले मौन रह सकता था कि हमारे सबे में बोली पहिला शहर होगा जहाँ पर जनता कांग्रेसी पुलिस को खदेड़ कर शहर पर ४ दिन कब्ज़ा कर सक्य रखेगी, यह क्रान्तिकारी युग है कोई भी सेन्टर अगुआई कर सकता है, हर एक सेन्टर के साथी यज़ीन के साथ अपने २ सेन्टर में हड़ताल तैयारी के लिये आगे बढ़ें,

याद रखिए आंशिक संघर्षों को आम हड़ताल के नाम पर छोड़ना आम हड़ताल के साथ गुदारी करना है आम हड़ताल चलने वाले आंशिक संघर्षों में ही मजदूर लड़ेंगी, आंशिक संघर्षों को ज्यादा से ज्यादा तेज़ कर के फ़े कशन फैलाएँ,

याद रखिए आंशिक संघर्षों को आंशिक संघर्षों की ही तरह लड़ना, उनमें क्रान्तिकारी नज़रिए के मुताबिक़ हिस्सा लेकर उन्हें ऊपर न उठाना मजदूरों के साथ गुदारी करना है, संघर्षों को बराबर तेज़ कर के ऊंचे उठाने,

फ़े कशन के साथी केन्द्र से आने वाले सकुलरों और नया सवेरा, मशाल तथा हमारे पार्टी अखबारों को ज्यादा से ज्यादा अपने रोज़मर्रा के हड़ताल तैयारी के कामों में इस्तेमाल करें,

इन्जिलावी ... सलाम

मन्त्री

सुभा रेलवे फ़े कशन

नोट. यू.पी. टी. यू. सी. आफ़िस, ३२ लाटूश रोड लखनऊ, और पार्टी अखबारों में हड़ताल तैयारी की तमाम खबरें भेजिए, डी. सी. और डी. सी. के ज़रिए रेलवे फ़े कशन लिखें कि उन्हीं ने इस सकुलर को पाने के बाद क्या किया,

लाल सलाम